शोध का परिचय

1.1 शोध का शीर्षक - प्रस्तुत शोध कार्य का शीर्षक है -हिंदी के ब्रह्मपुत्र और नेपाली के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता का तुलनात्मक अध्ययन |

1.2 शोध का परिचय

हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाला 'अंचल' शब्द मूलतः संस्कृत का शब्द अंचल है | जो संस्कृत के अँच धातु में अलच् प्रत्यय के योग से निर्मित है | अंचल का सामान्य अर्थ वस्त्र या ओढ़नी का छोर से लिया जाता है | अंग्रेजी शब्दकोश में इसका अर्थ प्रांत या किसी भूभाग से है | आंचलिक रचना उन विशेष प्रवृतियों से संबंधित रचना का द्योतक है,जो किसी भूभाग की संस्कृति को उसकी समग्रता में अभिव्यक्त करता है | आंचलिकता शब्द अंचल से बना है,किसी अंचल या क्षेत्र की विशिष्टताओं का समाहार इन रचनाओं में होता है | आंचलिकता की प्रवृत्ति ने विश्व साहित्य को प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। देश की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधता के तहत भारतीय साहित्य में उसका स्वागत एवं प्रसार विविधोन्मुखी रूप में हुआ है। आंचलिकता को प्रकट करने वाले उपन्यास को आंचलिक उपन्यास कहते हैं। 'आंचलिक उपन्यास वह है जिसमें वहां की भाषा,लोकोक्ति,लोक कथाएं,लोक गीत, मुहावरें,लहजा,वेश–भूषा, धर्म –जीवन,समाज–संस्कृति तथा आर्थिक और राजनीतिक जागरण के प्रश्न एक साथ उभरकर आए।' आंचलिक उपन्यास में माटी की गंध के चित्रण को श्रेय मिला है। यह मुख्यत: ग्रामीण जीवन से सम्बंधित रहा है अंचल के लोक संस्कृति, जनजीवन, भाषा, रहन-सहन तथा उन्मुक्त परिवेश का चित्रण आंचलिक उपन्यासों में होता रहा है। आंचलिक उपन्यास का यथार्थवादी होना बेहद जरूरी है ताकि अंचल की वास्तविकता का चित्रांकन हो सकें। इसमें लेखक का अंचल के यथार्थ की जटिलता के साथ उसकी समग्रता पर ध्यान अधिक रहता है। ग्रामीण तथा पिछड़े इलाकों का चित्रण आंचलिक उपन्यासों के माध्यम से सघनता में होता है। राष्ट्र जीवन में राष्ट्रीय भावना के विकास तथा जन

जागृति तथा नव चेतना को व्यापक आयाम देने के लिए लेखकों का ध्यान गाँवों की ओर गया। गाँवों का देश भारत को उसकी समग्रता में चित्रित करने के लिए आंचलिक जीवन को सामने लाना आवश्यक है। अत: ग्राम्य जीवन के प्रति लेखकों का आग्रह बढ़ा है। साहित्यकार आंचलिक समाज एवं परिवेश से प्रभावित होकर साहित्य के माध्यम से अपनी रचनाधर्मिता को प्रश्रय देता है। आंचलिक कथाओं ने अल्प समय में साहित्य जगत में अपना स्थान बनाया है। उपन्यासों ने कथा-साहित्य के अंतर्गत अंचलों में बिखरी हुई संस्कृति को क्रमबद्ध तरीके से अपनी रचनाओं में साकार किया है । आंचलिक रचनाओं में किसी ग्राम, प्रान्त एवं भूखंड की समग्र विशेषताओं को उकेरा जाता है।

आंचलिक उपन्यास के उद्भव के पीछे प्रेमचंद ,वृन्दावनलाल वर्मा ,रेणु ,नागार्जुन आदि के उपन्यासों का महत्वपूर्ण योगदान है। इनके उपन्यासों को विशुद्ध आंचलिक उपन्यास तो नहीं कहा जा सकता परन्तु परवर्ती कालों में विकसित होने वाली आंचलिक उपन्यासों के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने का कार्य इन्हीं के द्वारा हुआ है।

भारत विविध अंचलों के समूह वाला देश है। बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक विविधताओं से युक्त यह देश अपने में बड़ा ही अनुपम है। यहाँ अनेकों जाति संस्कृति बड़े ही समरस होकर जीवन व्यतीत करते हैं। अपवाद स्वरूप एकाध घटनाएँ घटती है पर वह सामान्य जन की मनस्थिति को अभिव्यक्त नहीं करता है। भाषा की दृष्टि से 22 भाषाओँ को संविधान में मान्यता प्राप्त है। इन्हीं में हिंदी और नेपाली भी हैं। यह दोनों आर्य भाषा परिवार से सम्बद्ध रखने वाली भाषाएँ है। नेपाली और हिंदी भारत की भोगौलिक भिन्नता रखने वाली दो भिन्न भूमियों की भाषाएँ है तब भी हिंदी तथा नेपाली भाषी समाज एवं साहित्य में कई बिन्दुओं के आधार पर समानताएं देखने को मिलती हैं। किसी देश एवं समाज को समझने के साधनों में भाषा और साहित्य एक महत्वपूर्ण माध्यम है। नेपाली भाषी कहने से ज्यादातर लोग इस भाषा का सीधा संबंध नेपाल से जोड़ कर देखते हैं परन्तु इस सच से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि सदियों से भारतीय धरती पर नेपाली जन की एक भारी संख्या निवास करती हैं,जो नेपाली भाषा का प्रयोग करती हैं। जिनकी भाषा और साहित्य

की एक समृद्ध परंपरा है। भाषिक अंतर के बावजूद भी साहित्य की चिंतनधारा ,विचार, अनुभव, उसके तत्व ,रचनाधर्मिता में इस अंतर से बहुत फर्क नहीं आता है।

हिंदी और नेपाली साहित्य में आंचलिक उपन्यास की एक विस्तृत परंपरा है। हिंदी में उपेन्द्रनाथ अश्क का 'पत्थर अलपत्थर',श्री बलवंत सिंह के 'रात चोर और चाँद' , उदय शंकर भट्ट कृत 'सागर लहरें और मनुष्य', रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूं', फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आंचल',नागार्जुन का उपन्यास रतिनाथ की चाची ,,बलचनमा ,नयी पौध , फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला आंचल', राहीमासूम रजा का 'आधा गाँव',भैरव प्रसाद गुप्त का 'धरती'ग्रामीण अंचल का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा मान्य है कि आंचलिक उपन्यास की शुरुआत नागार्जुन के उपन्यास बलचनमा से होती है वहीं नेपाली में लील बाहदुर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ, सुन्दास का जुनेली रेखा, आसीत राई कृत यन्त्रणा और छितिजको खोज, इन्द्रबहादुर जी का आज रमिता छ, अर्जुन निरौला का 'घाम डूबे पछि' आदि आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं। हिंदी साहित्य में आंचलिक उपन्यासों की श्रृंखला में देवेन्द्र सत्यार्थी कृत ब्रह्मपुत्र एवं नेपाली में लीलबहादुर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता के तत्व बहुत पहले से मिलते हैं किन्तु देवेन्द्र सत्यार्थी का यह उपन्यास एक नये ढांचे एवं परिवेश को अभिव्यक्त करता है। इन आंचलिक उपन्यासों में अंचल जीवन की विशेषताएँ उभर कर आई हैं और साहित्य की दुनिया में बड़े और व्यापक क्षेत्र नहीं वरन छोटे से भूखंड भी अपनी सम्पूर्ण आभा के साथ व्यक्त होने लगी और बिलकुल नवीन रचनादृष्टि अपने संग लेकर आई |

देवेन्द्र सत्यार्थी का जन्म 28 मई 1908 में पटियाला के भदौड़ गाँव में हुआ था। सत्यार्थी का व्यक्तित्व अपने आप में बहुत प्रभावशाली है। हिंदी के यायावर साहित्यकार देवेन्द्र सत्यार्थी जितने बड़े लोक साधक हैं उतने ही बड़े और ऊंचे कथाकार हैं। पुरे बीस साल तक उन्होंने लोकगीतों की तलाश में गाँव-गाँव भटककर हिंदुस्तान के कथा साहित्य का निरीक्षण- परीक्षण किया था। सत्यार्थी के कथा साहित्य में जीवन घुमक्कड़ी के इतने, कठोर और दुस्साहसी अनुभव है कि मन उसी के साथ बहता चला जाता हैं। देवेन्द्र

सत्यार्थी का पहला उपन्यास 'ब्रह्मपुत्र ' है। इस उपन्यास की भूमिका में काका कालेलकर ने 'लोक युग का नदी पुराण' शीर्षक से 1956 में एक लेख लिखा। गोपाल राय ने 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' में उसकी प्रकाशन तिथि 1956 ही बताई है। फ़िलहाल बाजार में जो संस्करण उपलब्ध है वह 'ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली' द्वारा पहली बार 1992 में प्रकाशित हुआ है।

लीलबहादुर छेत्री का जन्म 1923 में पूर्वोत्तर भारत के गुवाहाटी में हुआ था। लीलबहादुर छेत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' नेपाली साहित्य की आधुनिक काल की द्वितीय चरण की रचनाकृति है। इसे बाईस खण्डों में विभक्त किया गया है। इसमें असमिया लोगों के यथार्थ जीवन का चित्रण है। उपन्यास की औपन्यासिक तत्वों के साथ ऐतिहासिक तत्वों को भी उजागर किया गया है। कृति में चारित्रिक दृष्टि से वर्ग प्रधान और व्यक्ति प्रधान दोनों तरह के पात्र हैं। उपन्यास के शीर्षक से ही आंचलिकता के संकेत मिलते है। इस प्रकार लीलबाहदूर छेत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' में तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक ढंग से अंचल के असल स्वरूप का चित्रण हुआ है। ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ असम राज्य के आस-पास बसने वाली नेपाली जातियों को केन्द्रित कर लिखा गया है। उपन्यास में उपन्यासकार ने असम राज्य की भौगोलिक एवं प्राकृतिक वर्णन करते हुए असमवासियों के लिए ब्रह्मपुत्र की महत्ता का चित्रण किया है | ब्रह्मपुत्र का रक्षक और भक्षक दोनों ही भूमिकाओं में लेखक ने बहुत मार्मिक ढंग से चित्रण किया है | ब्रह्मपुत्र को केंद्र में रखकर प्रकृति का रौद्र एवं मनोहारी दोनों ही स्थितियों का सूक्ष्म अंकन हुआ है । लेखक द्वारा असम में सदियों से रहनेवाले नेपाली जाति की जातीय परम्परा, रीति -रिवाज, संस्कार, संस्कृति आदि का बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रण हुआ है। उसी प्रकार संस्कृति के प्रति उनकी श्रद्धा , सद्भावना और पारस्परिक सहयोग दिखाते हुए असमिया नेपालियों की सहन-शील प्रवृत्ति, धार्मिक सांस्कृतिक समन्वयवादी विचार व दृष्टिकोण, उदार मनोभावों को दर्शाने में छेत्री सक्षम हुए हैं। इस उपन्यास का मुख्य पात्र 'गुमाने' है उसके माध्यम से असम राज्य में नेपाली जातियों के जीवन संघर्ष और समस्याओं को मूर्त रूप प्रदान किया है।

अंचल जीवन की समग्रता एवं आंचलिक जीवन के विविध पक्षों को दर्शाने के लिए इस कृति में विभिन्न स्तर, वर्ग, जाति और तमाम स्वभाव और प्रवृतिगत पात्रों का चित्रण हुआ है और इन पात्रों के व्यक्तिगत वर्गीय विशेषताओं में समन्वय भी पाया जाता है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने सरल-सहज भाषा शैली का प्रयोग किया है। उपन्यास की कथावस्तु असम से संबंधित होने के कारण उपन्यास में असमिया भाषा के शब्दों का बहुतायत में प्रयोग मिलता है। असमिया नेपाली समाज प्रयुक्त होने वाले बोलचाल के प्रचलित शब्द, आगंतुक शब्द आदि के प्रयोग से आंचलिक यथार्थ के चित्रण को जीवंत रूप दिया है

देवेन्द्र सत्यार्थी का ब्रह्मपुत्र और लील बहादुर छेत्री का ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ दोनों भाषाओँ के उपन्यासकार अलग-अलग प्रान्तों से जुड़े हुए हैं,उनकी रचनात्मक प्रक्रिया भी भिन्न हैं ,दोनों उपन्यासों के रचनाकाल में भी अंतर है परन्तु दोनों ने ब्रह्मपुत्र नदी के आसपास के बिखड़े क्षेत्र को केन्द्रित कर अपनी रचना को रूप और आकार प्रदान किया है | दोनों उपन्यासों में कई स्थिति में असमानता दिखाई पड़ने पर भी दोनों का संबंध ब्रह्मपुत्र के आस पास का क्षेत्र हैं ,नेपाली समाज और असमिया समाज से गडमड हुए समाज का चित्रण है,उनके जीवन संघर्ष हैं ,उनके जीवन का समग्र चित्रण हैं | दोनों रचनाकारों की संवेदना और विचारों की भूमि स्थल एक है। दोनों उपन्यासकार दो भिन्न भाषाई परिदृश्य से सम्बद्ध है ,इनमें भाषिक अंतर के साथ लेखन के संस्कार भी भिन्न भूमि में विकसित हुई है। लील बहादुर छेत्री असमिया समाज में निवास करने वाली नेपाली समाज से सम्बद्ध है तो वहीं देवेन्द्र सत्यार्थी का संबंध पंजाब से है जिनका सरोकार उस समाज और उस स्थल से उस रूप में नहीं है जिस रूप में लीलबहादुर छेत्री का है परन्तु दोनों के सरोकार मानव और मानवीयता के व्यापक संबंधो से अवश्य जुड़े हैं । इसलिए दोनों उपन्यासों में नेपाली और असमिया समाज अपने वास्तविक स्वरूप में अंकित हैं |

1.3 शोध की समस्या

प्रस्तावित शोध हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ'' उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता का अध्ययन करना है | इसमें शोध सम्बन्धी समस्याएं निम्नलिखित हैं ,जिसे अध्ययन के माध्यम से समझने की चेष्टा की गयी |

(क) 'ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास में आंचलिकता का आधार क्या है ?

(ख) हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास भिन्न भाषा और भिन्न रचना प्रक्रिया से सम्बन्धित है | लील बहादुर छेत्री और देवेन्द्र सत्यार्थी के विचार-चिंतन में क्या अंतर है ?

(ग) 'ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन का स्वरूप कैसा है ?

(घ) 'ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों की आंचलिकता में क्या साम्य और वैषम्य है ?

(ङ) 'ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में किस शिल्प विधान का प्रयोग हुआ है ?

1.4 शोध कार्य का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य में उपर्युक्त समस्याओं का समाधान करना ही शोध का उद्देश्य है। जो निम्न हैं –

(क) 'ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास में आंचलिक प्रवृतियों को समझ सकेंगे |

(ख) हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास भिन्न भाषा और भिन्न रचना प्रक्रिया से सम्बन्धित है | दोनों रचनाओं के माध्यम से रचनाकार की विचार –दृष्टि और रचना दृष्टि से परिचित हो सकेंगे |

(ग) ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे |

(घ) ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों की आंचलिकता में साम्य और वैषम्य को देख सकेंगे|

(ङ) 'ब्रह्मपुत्र' और 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में प्रयुक्त शिल्प विधान से परिचित हो सकेंगे |

1.5 पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा

हिंदी और नेपाली कथा साहित्य में अलग-अलग विधाओं पर अनेक शोध कार्य हुए हैं, जिनमें उल्लेखनीय है :-

(क) हिंदी एवं नेपाली उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, शोधार्थी, ममता लामा, शोध निर्देशेक मोहन प्रसाद दाहाल बर्ष -2006 (एन. बी. यू)

(ख) नेपाली और बंगला भाषा के आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन शोधार्थी, दिल कुमार प्रधान, निर्देशक मोहन प्रसाद- 2017 (एन. बी. यू)

(ग) विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला के कहानी और उपन्यासों में नारी चरित्र, शोधार्थी विष्णु शर्मा, शोध निर्देशक हेम चन्द्र 1985 (बी.एच.यू)

उपरोक्त शोधकार्यों के आधार यह स्पष्ट होता है कि "हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता का तुलनात्मक अध्ययन" विषय को लेकर अब तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इस दृष्टि से मेरा यह अध्ययन प्रारम्भिक प्रयास है।

1.6 ब्रह्मपुत्र और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों से सम्बंधित आलेख का विवरण -

प्रकाशित पुस्तकें :-

1.डॉ. नगिना जैन - आंचलिक और हिंदी उपन्यास

2.जवाहर सिंह - हिंदी आंचलिक उपन्यास

5.दिल श्रेष्ट - आंचलिकता अनि नेपाली केही उपन्यासहरु

6. नवीन पौड्याल - आख्यान अनुशीलन

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्रियों का विवरण -

1. मधुरेश - सांस्कृतिक बहुलता की यायावरी विशेष सन्दर्भ ब्रह्मपुत्र

अक्षर पर्व – अंक-224-2018

2. डॉ. शंकर अवस्थी - संदर्भिक प्रक्रिया विशेष सन्दर्भ ब्रह्मपुत्र

अक्षर पर्व- अंक- 203- 1998

3.लील बहादुर क्षेत्री - बसाईं देखि ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ

समकालीन साहित्य (त्रैमासिक) वर्ष 3. अंक.1-1991

4. राजकुमारी दाहाल - ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ एक अध्ययन

नेपाली समकालीन साहित्य

(अर्धवार्षिक) वर्ष 2 अंक 3 1995

5. सुमित राई - ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ एक दृष्टि

गरिमा (मासिक)

वर्ष 7 अंक 3 1982

6. लीलबहादुर क्षेत्री - भाषा मान्यता आन्दोलन पुर्वंचालीय मंथन,प्रक्रिया वर्ष 7 अंक 11

7. किशोर पाण्डेय - सत्यार्थी के रचनाओं में एक दृष्टि

पहल -अंक 231. 1989

1.6 शोध प्रविधि -

1.6.1 अध्ययन विश्लेषण का सैद्धांतिक आधार –

प्रस्तावित शोध विषय हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र ' एवं नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता का तुलनात्मक अध्ययन' में मूलतःतुलनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया| अध्ययन-परीक्षण और शोध के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आलोचनात्मक और विश्लेष्णात्मक शोध प्रविधि का भी प्रयोग हुआ |

1.6.2 सामग्री संकलन विधि -

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक और द्वितीय श्रोत के माध्यम से आवश्यक सामग्री का संकलन किया गया। प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत लेखक के प्रकाशित उपन्यास तथा द्वितीय स्त्रोत के अंतर्गत आलोचनात्मक कर्म के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकें ,विभिन्न पत्र –पत्रिकाओं के आलेख,,शोधग्रंथ ,वेब माध्यम आदि से प्राप्त सामग्री का संकलन कर इस शोध कार्य को पूर्ण किया गया|

1.7 शोध का औचित्य और महत्त्व

ब्रह्मपुत्र नदी पर केन्द्रित हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ'उपन्यास के माध्यम से उस अंचल विशेष के जीवन संघर्ष और उसकी गति को समझने की चेष्टा हुई है |

हिंदी और नेपाली दो भिन्न भाषा के लेखक की लेखन प्रक्रिया और उनकी रचनाधर्मिता को रेखांकित किया गया है |

इस शोध के माध्यम से सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विचार-दृष्टि का विस्तार होता है|

1.8 शोध की सीमा -

प्रस्तावित शोधकार्य हिंदी के 'ब्रह्मपुत्र' और नेपाली के 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता का तुलनात्मक अध्ययन' तक सीमित है ।

1.9 शोध का प्रयोजन -

प्रस्तुत शोध कार्य का मूल प्रयोजन सिक्किम विश्वविद्यालय के अंतर्गत हिंदी विभाग से एम. फिल की उपाधि हासिल करना है।

आंचलिकता की अवधारणा एवं स्वरुप

2.1 आंचलिकता : पृष्ठभूमि एवं विविध सन्दर्भ

किसी आंचलिक रचना में अंचल विशेष का समग्र चित्रण वहां की प्रचलित भाषा की सहायता से होता है | आंचलिक कृतिकार अंचल विशेष की रहन-सहन, वेश -भूषा, खान-पान, संस्कृति, नृत्य-गीत, धार्मिक अनुष्ठान, मेले आदि सबका समग्र चित्रण अपनी रचना में प्रस्तुत करता है | रचना में मौजूद पात्र एवं विषय वस्तु अंचल की विशेष देन होती है |रचनाकार अंचल विशेष का यथार्थ चित्रण ही नहीं करता बल्कि उसके माध्यम से पाठकों में नवीन चेतना विकसित करने की चेष्टा भी करते हैं |

आंचलिक उपन्यास में किसी एक देश की दुर्गम अंचल अथवा भू-भाग तथा वहाँ पर निवास करने वाले लोगों की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, लोक संस्कृति -परंपरा, लोक विश्वास, मान्यताएँ, भाषा शैली आदि में उस अंचल विशेष के जीवन के विविधायामी रंग समग्रता में प्रस्तुत होता है | अंचल को नजदीक से अनुभूत किया हुआ लेखक वहां के जंगल, पहाड़, नदी, विस्तृत समतल, नदी किनारा, अंचल में आने वाली भूस्खलन, बाढ़, यातायात आदि भी उसी तरह उनका उल्लेख होता है जैसे उसके पात्रों का चित्रण होता है | अंचल की सुविधाओं -असुविधाओं के साथ संघर्ष करने वाली वहां की लोक का यथार्थ चित्रण आंचलिक रचना में किया जाता है | आंचलिक रचना में यथार्थवाद एवं स्वछंदतावाद का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है |अंचल के असहाय, निम्नवर्गीय लोगों की ज़िन्दगी,उनके प्रति सहानुभूति, स्नेह रखते हुए उन लोगों के पिछड़ेपन का रेखांकन हुआ है |

यथार्थवाद और स्वछंदतावाद के सम्मिश्रण एवं प्रगतिवाद, आलोचनात्मक यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक प्रभाव के द्वारा विकसित आंचलिक उपन्यासों में पर्यावरण की प्रधानता दिखाई देती है | वर्ण्य अंचल की लोक संस्कृति, लोक बोली, लोक वोश्वस, प्राकृतिक पर्यावरण एवं जन जीवन के प्रति गहरा प्रभाव पड़ा है | देश- दुनिया के खतरों से वंचित अंचल के लोगों की जीवन में दृष्टिगत दुःख -सुख,

आंसू,हंसी, ज्ञान-अज्ञानता, धर्म-विश्वास, विकार आदि को लेखक ने अपने सहनुभूति, प्रेम और अपनी जीवन बोध के आधार पर मूल्याङ्कन किया |आंचलिक उपन्यास की रचनाधर्मिता पाठकों को नवीन लगता है |

अंचल शब्द के अर्थ एवं अनेक परिभाषाएं

हिंदी भाषा के अंतर्गत एक विशेष प्रान्त अथवा क्षेत्र में प्रयोग होने वाला 'अंचल' शब्द मूलत: संस्कृत के 'अँच' धतु में 'अंचल' शब्द के सम्मिश्रण से 'अंचल' शब्द बना है | भाषा के बनने के बाद उसको व्याकरण द्वारा परिमार्जित कर सभ्य एवं सुगठित भाषा का रूप दिया गया | सामान्यत: 'अंचल' का अर्थ किसी वस्त्र का छोर, पल्लू अथवा ओढ़नी आदि अनेक अर्थों में लिया जाता है | अंग्रेजी शब्द कोश के अंतर्गत किसी विशेष भू-भाग से अर्थ लगाया जाता है | अत: 'अंचल' शब्द साड़ी के पल्लू अथवा आँचल, देश की किसी भू- भाग एवं क्षेत्र, शासन की सुविधा के लिए देश का राजनैतिक विभाजन, तट, किनारा आदि के अर्थ में लिया जाता है | ऐसे में तमाम साहित्यकारों ने विभिन्न रूप से अंचल को परिभाषित करने का प्रयास किया है |

हलायुध कोश में अंचल शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है,''अंचल' अंचती प्रान्तं भागं गच्छति' (अँच+अंचल) वस्त्र प्रान्त भाग: | अंचल इति भाषा | "इति साहित्य दर्पणे |" कर्पास वादरप्रोक्तं वस्त्रन्तोमतेSन्चल: |"[1]

पद्मचन्द्रकोष में लेखक ने " 'अंचल' शब्द को वस्त्र का छोर, कपड़े का कोना, पल्ला आदि अर्थ को ग्रहण किया है |"[2]

[1] संपा- जयशंकर जोशी- हलायुध कोश- पृ. 111

[2] पद्मचन्द्रकोष- पृ.8

'द प्रैक्टिकल संस्कृत इंग्लिस डिक्सनेरी' में भी 'वस्त्र का छोर' कहा गया है | संस्कृत में उद्भट ने अंचल शब्द को परिभाषित करते हुए कहा है "क्षीणान्चलमिव पीनस्तनजबनाय|" अंचल शब्द को वस्त्र का छोर के साथ-साथ आँख के छोर से भी लिया गया है 'दृगंचलै पश्यति कैवलम मनाक' इति अंचलोऽर्थ | वैसे ही जब सामाजिक एवं किसी स्थान विशेष को लेकर लिखा जाने लगा तो लगता है तब आंचलिकता का पूर्णार्थ तथा मूल स्वरुप ग्रहण हुआ है | धीरे-धीरे जब कथा साहित्य विकास की ओर आगे बढ़ा तो पश्चिमी सभ्यता के साथ पहले बंगला भाषा में और धीरे-धीरे हिंदी तथा अन्य भाषाओँ में आगे बढ़ा | हिंदी रचनाओं में आंचलिकता के आगमन के पश्चात् कथा, भाषा शैली एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य के विभिन्न रूप प्रकाश में आई | अंचल की परिभाषाओं में दो बातों का अत्यंत महत्व है एक अंचल का आतंरिक स्वरूप दूसरा उसका बाह्य स्वरुप |

हर स्थान की मिटटी की एक खास सुगंध होती है | इसी मिट्टी के तहत निकली प्राकृतिक सारी वस्तुओं में भी एक विशेष गंध होती है | इसकी प्रतिरूप वहाँ के समस्त मानव एवं जीवनधारियों में अपनी एक अलग मनस्थिति तथा प्रभाव छोड़ती है | जिसके कारण अन्य भूमि पर पनप रहे फूल वनस्पतिओं और प्राणियों के गंध से भिन्न होने की विशेषता लिए होती है | यही गंध वहाँ के निवासियों की आचार-विचार, भाषा शैली एवं मानसिकता में छप जाती है | ऐसे भू-भाग तथा वहाँ के परिसर, मानव व्यक्तित्व तथा अन्य संबंधों की सम्पूर्ण स्थितियों की जो अभिव्यक्ति होती है वही आंचलिकता कहलाती है |

आंचलिकता और हिंदी उपन्यास में डॉ. नगिना जैन ने गहन अध्ययन विश्लेषण एवं इसकी अंतरवस्तु को समझते हुए कहा है,"आंचलिकता एक विशिष्ट दृष्टिकोण है जो अंचल या क्षेत्र विशेष की संपूर्ण जीवन प्रणाली की ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक धारणा प्रस्तुत करता है | किसी भी अंचल की अंतरात्मा को प्रकट करने के लिए आतंरिक उपकरणों के साथ उसके बाह्य उपकरणों का विशेष समर्थन आवश्यक होता है | आंचलिकता को सजीव रूप देने में वे सभी तत्व सम्मिलित किये जा सकते हैं जो क्षेत्र विशेष के जन जीवन का सांगोपांग तथा सम्पूर्ण चित्र सभी विशेषताओं के साथ उभरने में सहायता करते हैं |

वस्तुत: वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन आदि की सजीव और सबल अभिव्यक्ति में योग देने वाले उपकरण आंचलिकता के तत्व कहे जा सकते हैं | अंचल की कल्पना निर्जन में नही की जा सकती,इस दृष्टि से 'जनपद' शब्द अंचल का पर्याय हो सकता है | निर्जन जंगल अथवा प्रकृति के एकांत का वर्णन आंचलिकता के अंतर्गत नही किया जा सकता | किसी अंचल विशेष की सभ्यता तथा संस्कृति के चित्रण में अनेकानेक वस्तुओं का समावेश होता है | उस क्षेत्र या जनपद के स्थानों वृक्षों, वनों, पशु पक्षिओं, स्थानों, भोज्य पदार्थों, खेल-कूदों, त्योहारों, पर्वों, उत्सवों, विश्वासों, मान्यताओं आदि तथ्थों का विश्लेषण और प्रत्यक्ष या परोक्ष किया जाता है |"[3]

आंचलिकता एवं विविध रंग

आंचलिकता के अर्थ स्थानीय रंग (local colour) के सकाथ एकाग्रता दिखाया गया है | आंचलिकता एवं स्थानीय रंग में भ्रमात्मक धारणा मिलता है | अंग्रेजी में अंचल का पर्यायवाची 'region'और स्थानीय रंग के पर्यायवाची 'local colour' है | अंचल शब्द एक विशेष स्थान एवं वहाँ के जीवन की समग्रता को दर्शाता है | स्थानीय रंग एक अलग प्रकार के जीवन लक्षण का द्योतक है | आंचलिकता में अंचल को एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में दिखाया जाता है | स्थानीय रंग किसी भी घटना अथवा पात्र के जीवन की जीवंतता को दिखाने के लिए प्रयुक्त होता है | स्थानीय रंग युक्त उपन्यासों में वातावरण को अधिक सजीव एवं यथार्थ बनाने के लिए पात्रों में सजगता लाने, रीति रिवाज, भाषा शैली को समग्रता में लेने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है |

आंचलिक रचनाओं में अंचल के मानवीय क्रियाकलापों को यथार्थ घटना के रूप में ग्रहण किया जाता है, ये घटनाएँ स्वभावत: दैनिक घटित होते हैं | इन घटनाओं को सभ्यता की ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक विकास की कसौटी में रखकर सांस्कृतिक सभ्यता की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है | आंचलिक उपन्यास का अंचल उस एक गाँव से है जहाँ जीवन निर्मित एवं घटित होता है | जहाँ पर धरती की प्रचुरता होती है |

[3] डॉ. नगिना जैन- आंचलिक और हिंदी उपन्यास- पृ.59

उसके जीवन का अनुभव होगा और कण-कण में वह प्रवाहित होता रहता है | इसी तरह गीत बनकर गूंजता रहता है, भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक परंपरा एवं वैज्ञानिक माध्यम में से अंचल के नायकत्व प्रतिपादित होता है | इस नायक के व्यक्तित्व की खोज करना और उसको मूर्त रूप देने के लिए उस क्षेत्र के प्राकृतिक बुनावट, क्षेत्रफल, नदी, पहाड़, मैदान, पशु-पक्षी आदि सभी सम्मिलित होते हैं |

स्थानीय रंग और आंचलिकता में काफी फर्क पाया जाता है | स्थानीय रंग के लिए किसी अंचल विशेष की प्राकृतिक बुनावट एवं सामाजिक स्थिति, परिवेश, भाषा शैली, लेखक की कृतियों में इसका यथार्थ परक पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए प्रयोग किया जाता है | प्रामाणिकता और कथा प्रवाह में रसोद्रेक के लिए भी इसका प्रयोग होता है | क्षेत्रीयता प्रदान करना उसका उद्देश्य नहीं होता इस कारण स्थानीय रंग को उसका सौरभ भी कहा जाता है |

स्थानीय रंग के उपन्यासों में किसी अंचल विशेष का कथा फलक बनाकर उसका रंग प्रयोग केवल रंगमय बनाने के लिए ही होता है, तथा मूल रूप में न होकर श्रृंगारिक रूप में ही होता है | आंचलिक चित्रण में क्षेत्र विशेष का समग्र जीवन ही नायक होता है विशेषकर अंचल ही नायक के रूप में खड़ा होता है | जोसेफ टी. शिप्ले के मत में " आंचलिक कलाकार प्रत्येक अंचल की गहन परिस्थितियों में ज्यादा ध्यान देता है जिससे वहाँ के निवासियों में गहरा प्रभाव पड़ता है |ऐसी ही चरित्रगत एवं सांस्कृतिक वैविध्यता का विकास होता है | स्थानीय रंग सेटिंग के निर्मित बोली, वेश भूषा, रीति रिवाज आदि तत्वों का प्रयोग कथा के मूल में न होकर केवल सजावट के रूप में प्रयोग किया जाता है |" [4]

स्थानीय रंग प्राय: उपन्यासों में ही पाया जाता है | लेखक जिस स्थान को लेकर कथा लिखता है वहाँ के रीति रिवाज, भेषभूषा प्रवृत्ति आदि के विभिन्न रंगों का प्रयोग करता है | किसी देश अथवा अंचल के उपस्थापन उपन्यास में किया जाता है | प्राय: अंचल का जन जीवन एक जैसा ही होता है | एक देश अथवा अंचल का स्थापन उपन्यास में किया जाता है | पृथक स्थान की वैशिष्टय प्रदर्शन करने वाली

[4] Joshep T. shiply – oictionary of world literary terms – page.257

भाषिक संरचना, रीतिरिवाज, परिवेश, भेषभूषा, जीवनस्तर, विचार की दिशा तथा अनुभवों का विशिष्टीकरण ही स्थानीय रंग है | इस स्थिति में सामान्य मानवीय लक्षण के आधार ही न होकर वास्तविकता के आधार पर समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया जाता है | देशकाल वातावरण आदि के आधार पर प्रादेशिक होकर आने से स्थानीय रंग में भौगोलिक उपस्थिति, स्थलों का विवरण, धार्मिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवेश, दैनिक व्यवहार, सांस्कृतिक परंपरा आदि क्षेत्र विशेष के समूहों में आते हैं , इसी विशेषता पर आधारित होकर उपन्यासों की रचना की जाती है | उपन्यासों में देशकाल वातावरण का मुख्य होता है | अंचल का व्यक्तित्व प्रधान भूमिका उपन्यास में होते हैं और अन्य तत्व उसके साथ अंतर्भूत होते हैं | अंचल की समग्रता को आत्मसात करने वाले लेखक वहाँ की मिटटी के कण-कण से परिचित ही नही होता बल्कि अपनी विशाल ह्रदय में उसे स्नेह के साथ सजाए रखता है | उसी प्रकार यह बाहरी सजावट से व्यापक होता है और उस अंचल के बाह्य रूप रंग, अन्तस्वर को अपनी कथावस्तु में नवीनता लाने के लिए प्रयोग करता है | आंचलिकता और स्थानीय रंग में यही भिन्नता होती है | आंचलिक उपन्यास में स्थानीय रंगयुक्त उपन्यास की तुलना में अंचल की भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक परम्पराओं को मूर्त रूप प्रदान करने की दृष्टि आदि के प्रयोग केवल रूचि वैचित्र्य प्रयोग जैसे ही न होकर आंचलिक चित्रण की आवश्यक वस्तु बन जाता है | जिस में आंचलिक जीवन की सम्पूर्णता में चित्रण अपरिहार्य हो जाता है |

अंग्रेजी की पुस्तक ‘ what is a novel’ में helenE. haines ने भी कहा है “एक आंचलिक उपन्यासकार अर्थात स्थानीय रंग के लिए अंचल का प्रयोग करने वाले उपन्यासकार से सर्वथा भिन्न होता है |”[5] आंचलिकता एक प्रवृत्ति है जो सम्पूर्ण उपन्यास की संरचना को लेकर पानी की तरह प्रवाहित होता रहता है और उसके सभी विधायक तत्वों को प्रभावित होकर अपने मूल आंचलिक रंग घूल जाता है | इसी प्रकार स्पष्ट है कि आंचलिकता अपने आप में एक विधा है और स्थानीय रंग से सदा भिन्न एवं व्यापक होता है | आंचलिकता की प्रवृत्ति के अध्ययन के पश्चात उसका महान उद्देश्य सहज बोधगम्य होता है |

[5] Halen E. Haines- what is a novel- page.374

अंचल विशेष की जीवन की गहराई में जाकर उसकी आतंरिक संवेदना, स्पंदन एवं यथार्थ रूप में परिचित होकर लिखना आंचलिकता है |

ग्रामीण आंचलिकता एवं शहरी आंचलिकता

उपन्यास विधा के विकास क्रम में आंचलिक लेखक में परिवर्तन आता रहा है | एक तरफ किसी अंचल ग्राम को केंद्र बनाकर उपन्यास लिखा गया है तो दूसरी तरफ शहरी अंचल को केंद्र बनाकर | आधुनिक आंचलिक उपन्यासों में जो भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विशेषता के आधार पर ग्राम्य अंचल की आंचलिकता को आधार बनाकर वहाँ के जन-जीवन, संस्कृति, सामाजिक, आर्थिक समस्या एवं जीवन संघर्ष आदि की समग्रता को चित्रित किया जाता है | जबकि शहर, नगर की स्थिति ग्राम्य अंचलों से कुछ भिन्न होता है| ग्रामीण आंचलिकता एवं शहरी आंचलिकता के विषय में विद्वानो ने भिन्न मत प्रकट किए हैं |

कई आलोचकों नगर जीवन के ऊपर लिखा हुआ उपन्यास को भी आंचलिक उपन्यास मानने का ऐसा तर्क प्रस्तुत करते हैं |ग्रामीण आंचलिकता ही न होकर शहरी आंचलिकता भी होते हैं |हिंदी आलोचक महेंद्र चतुर्वेदी का मानना है,ग्राम्य अंचल को ही आंचलिकता कहने से असहमति जताते हुए लिखा है,"आंचलिक उपन्यास की वर्ण्य वस्तु विशुद्ध रूप से ग्राम्य होना चाहिये ऐसी अनिवार्यता नहीं है | किसी नगर को भी कथा क्षेत्र के रूप में ग्रहण किया जा सकता है | ऐसा भी हो सकता है कि कथांचल का एक प्रवाह गाँव की तरफ और दूसरा शहर की तरफ हो |"[6]

आंचलिक उपन्यास की कथा की परिधि में केवल ग्राम्य अंचल ही नहीं शहरी अंचल भी आ सकता है, ऐसे विचार का समर्थन करते हुए राजेन्द्र अवस्थी ने 'तृषित' जैसे उपन्यास की रचना की | वे कहते हैं "इधर आंचलिक शब्द से एक नयाँ भ्रम उत्पन्न हो रहा है, आंचलिक उपन्यास उसी को समझा जा

[6] महेंद्र चतुर्वेदी- हिंदी उपन्यास एक सर्वेक्षण- पृ. 207-208

रहा जिसमे केवल ग्रामीण जीवन को आधार बनाया जाताहै, ग्रामीण संस्कृति का चित्रण किया गया हो | अंचल एक कोना भी हो सकता है, शहर भी हो सकता है |" [7]डॉ. काँटी वर्मा ने भी अपनी शोध ग्रन्थ में "छोटी शहर की विशेषता को उदघाटित करने वाले साहित्य भी आंचलिक के सीमा में आते हैं |" [8] इसी तरह नेपाली में मोहन पी दाहाल ने भी 'आज रमिता छ' को नगरांचलीय उपन्यास माना है | डॉ. दाहाल ने 'आज रमिता छ' में दार्जिलिंग अंचल की विशेषताओं का चित्रण किया है |

जवाहर सिंह के अनुसार "शहरी आंचलिकता में निहित आंचलिक संस्कृति की अनिवार्यता को ना समझना है |"[9] वस्तुत: अंचल व आंचलिक शब्द में निहित सम्पूर्ण भाव तत्वों का गहराई को समझने वाले 'शहरी अंचल' वा शहरी आंचलिकता जैसे शब्द का कोई अर्थ नहीं रहता | शहर और आंचलिकता यह दो शब्दों में कोई भी भाव साम्य नहीं मिलता | अंचल शब्द से अलग, अज्ञात वा अल्पज्ञात भूमि जहाँ की गंध, वैविध्यपूर्ण परंपरागत संस्कृति की विशिष्टता का बोध होता है,वह शहर में नहीं मिलता | आंचलिक रचनाओं में किसी विशिष्ट अंचल का एक भाग अथवा गाँव ही विवेच्य होता है | उस गाँव की मिट्टी में उपजा, फला बड़ा फलों की अपनी विशिष्ट सुगंध होती है | उस ग्राम के पिछड़े जन-जीवन की वृत्ति, विशेषता शहर से पारदर्शी तरीकों से भिन्न दिखाई देता है | अपरिचित अंचल आज भी बाहरी शहरी संसार के यांत्रिकी से अछूता रहता है | वहाँ की भौगोलिक, सांस्कृतिक सीमा आज भी सुरक्षित हैं | आधुनिक जीवन में विज्ञान ग्रामीण अंचल में पहुँचने लगा है पर अभी भी वहाँ की कौमार्यता भंग नहीं हुई है | भले ही विकास का क्षेत्र व्यापक हुआ हो परंपरा अभी भी अक्षुण्ण मिलता है | विज्ञान के पहुँचने पर भी अन्धविश्वास कायम है | इसके विपरीत शहरी जीवन की भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमा समाप्त हो चुकी है | शहरी जीवन में सामाजिकता न होते हुए भी सामाजिकता का भाव खंडित होता है | शहर में मानव व्यक्तिवादी भावना से आक्रांत है और एक दो बातों से एक दुसरे से अस्पृश्यता रहती है | शहरी जीवन में

[7] राजेन्द्र अवस्थी- कहानी मासिक 'सारिका' अक्टूबर 1971

[8] डॉ. काँटी वर्मा- स्वातंत्रोत्तर हिंदी उपन्यास- पृ. 42

[9] जवाहर सिंह- हिंदी आंचलिक उपन्यास- पृ. 62

वर्ग विभाजन, धर्म संस्कार जाति के आधार पर कम आर्थिक आधार पर विभाजन अधिक होता है | इसी कारण शहर में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक परंपरा, जीवन शैली, रीतिरिवाज , भाषा, धर्म, जातिगत वर्ग जो गाँव में यथावत है जबकि छोटे शहर में बड़े शहर की सभ्यता, महानगर की सभ्यता, महानगर में विदेशी सभ्यता प्रतिदिन प्रतिक्षण दबाव बनाए रखता है जिससे जीवन की जटिलता को दबोचने के अलावा क्षेत्रीय सीमा को भी अत्यधिक क्षति पहुँचता है | इसी तरह ग्रामीण अंचल एवं शहरी अंचल में अंतर दिखाई पड़ता है |

आंचलिकता के सैद्धांतिक आधार

सभी देशों की भौगोलिक वातावरण, वहाँ के जन-जीवन की परंपरा सांस्कृतिक वैभव एवं चिंतन प्रक्रिया में भिन्नता पायी जाती है | "अंग्रेजी उपन्यास की शुरुआत ईसा के अठाहरवीं शताब्दी में डेनिल डिफो की रचनाओं से माना जाता है |" [10] इससे पहले अंग्रेजी साहित्य में वीरों की गाथा, उनकी प्रेमाख्यान, प्राचीन अतिभौतिक कथा आदि को छंदोबद्ध तरीकों से लिखने की परंपरा थी बाद में विकसित होते हुए गद्य में लिखा जाने लगा | चौहदवीं शताब्दी में ईटालियन साहित्यकार जियो भमानी बोकासियो के लगभग सौ कथाओं को संकलित कर डेकामेरान से विश्व साहित्य में प्राय: विद्वानों ने उपन्यास लिखने की प्रेरणा प्राप्त की | अठाहरवीं शताब्दी के अंतिम दशक से अंग्रेजी साहित्य में विशिष्ट स्थान की समस्याओं को नये ढंग से लिखा जाने लगा |

"अंग्रेजी साहित्य में रीजनल नॉवेल (आंचलिक उपन्यास) की परंपरा 1800 में मेरिया एजवर्थ की 'क्यासल रेकरेंट' से शुरुआत मानी जाती है |" [11] इस उपन्यास में एजवर्थ ने तत्कालीन आयरलैंड के कृषकों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रीतिरिवाजों का चित्रण किया है | उनके उपन्यास में आईरिश बोली का प्रयोग और वहाँ के जन-जीवन के सूक्ष्म एवं यथार्थ वर्णन होने के कारण अंग्रेजी साहित्य में ही नहीं

[10] श्रीनारायाण मिश्र- अंग्रेजी उपन्यास का विकास और उसकी संरचना पद्धति- 1961- पृ. 137
[11] राजकुमारी सिंह- हिंदी तथा अंग्रेजी आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन-1988-प. 79

बल्कि विश्व साहित्य के सन्दर्भ में भी प्रथम आंचलिक उपन्यास लेखिका मानी गयी है | एजवर्थ के उपन्यास से प्रभावित होकर उसी के समकालीन वाल्टर स्कॉट ने स्कटलैंड के निवासियों को अपना विषय बनाकर कई उपन्यास लिखे | उनके लिखित "वेवर्ली" (1814) उपन्यास का प्रकाशन अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में एक मत्वपूर्ण घटना माना गया है |वेवर्ली अत्यंत लोकप्रिय हुआ था इसलिए 1930 तक लगातार रूप में प्रकाशित होता रहा |वाल्टर ने स्कटलैंड से पहले स्क्चके कृषकों की तमाम समस्याओं को अपना विषय बनाया था |

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी साहित्य में आंचलिकता की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाने के लिए जार्ज इलियट,थॉमस हार्डी, शर्लेट ब्रांटी आदि लेखकों का नाम विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है | जार्ज इलियट की "एडम वीड"(1859) उपन्यास पूर्ण रुप से ग्रामीण अंचल को लेकर लिखा गया है | दूसरा उपन्यस 'जेन आयर' में इंग्लैंड की पहाड़ी इलाकों में निवास करने वाले, भेड़ चारण,धोबी आदि के जन जीवन का चित्रण हुआ है | इसी तरह जार्ज इलियट कृत "एडम वीड" (1859) "रामोला" (1863) "मिडल मार्च" थोमस हार्डी कृत,"वेसेक्स" "अंडर द ग्रीनउड ट्री" (1872) "फार फ्रम द मिडिंग क्राउड" (1947) "रिटर्न ऑफ द नेटिंभ" (1878) आदि उपन्यासों का उल्लेख मिलता है |

इसी प्रकार अंग्रजी साहित्य में मेरिय एजवर्थ से प्रारंभ हुआ आंचलिक उपन्यास प्रवृत्ति की परंपरा ब्रांटी, इलियट, हार्डी जैसे उपन्यासकारों ने आगे बढ़ाया है | इस तरह अंग्रेजी साहित्य में आंचलिक रचनाएँ विकास की ओर आगे बढ़ी |

अमेरिका में आंचलिक उपन्यास

अमेरिका में आंचलिक उपन्यास साहित्य को 'नोवेल ऑफ द सोशल' नाम से अलग नाम दिया गया है | इस प्रवृत्ति के उपन्यास में आदिवासी जन जीवन का चित्रन किया गया है | "ऐसे श्रेणी के उपन्यासों

को आंचलिकता के ही विशेष वर्ग में माना गया है |" [12] "अठाहरवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अमेरिका के कथा साहित्य में 'रीजनललिजम नामक आन्दोलन चला था | उसके फल स्वरुप एक अलग ही प्रकार का औपन्यासिक परंपरा की शुरुआत हुई थी ऐसा जवाहर सिंह का मानना है |"[13]

"अमेरिका कथा साहित्य में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मार्क ट्वेन (1835-1910) बिला केथर (1876-1947) विलियम फकनर (1897-1962) विलियम डीन, हेनरी जेम्स स्टेनबेक, लुई सिंक्लेयर जैसे उपन्यासकार सामने आए | मार्क ट्वेन ने 'द एडभंर्च ऑफ टम सेयर (1876) लाईफ ऑन द मिसिसिपी (1883) द एडभंर्च ऑफ हकलवेरी फिन (1885) जैसे उपन्यासों को लिखकर अमेरिकी साहित्य को समृद्ध बनाया ऐसा उल्लेख मिलता है |" [14] ट्वेन कृत 'लाइफ आन द मिसिसिपी' (1883) विला केथर कृत 'ओ पायो स्नियर्स (1913) माय आंटोनियर (1918) आदि उल्लेखनीय है | इसी प्रकार अमेरिकी आंचलिक उपन्यासों का विकास क्रम आगे बढ़ता है |

रूस में आंचलिक उपन्यास

रूस के साहित्य में आंचलिकता की परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था | उसके बाद बीसवीं शताब्दी की शुरुआत से इसका विकासक्रम आगे बढ़ता है | इस विशेषकर यथार्थवादी उपन्यासों का विकास हुआ | रूस के उपन्यास साहित्य में यथार्थवादी उपन्यासकारों में पुश्किन, निकोलाई गोगोल, लर्मान तोबह, बुर्गनेव आदि का नाम आता है | तुर्गनेव ने "फादार्स एंड सन्स" (1862) में रूस के कृषकों की तत्कालीन स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है | दूसरे उपन्यास "ह्वीर्जिन साईले" (1876) में भी आन्दोलन से पूर्व के जन जीवन को दिखाने का प्रयत्न हुआ है | इसी प्रकार आंचलिक रचना फिर बांग्ला, हिंदी, नेपाली में के माध्यम से विस्तार पाता गया |

---

[12] पूर्ववत पृ. 19

[13] जवाहर सिंह- हिंदी आंचलिक उपन्यास- पृ 52

[14] ह-के कड़वे- पूर्ववत- पृ. 72

भारतीय साहित्य में आंचलिकता

अठाहरवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बंगाल में अंग्रेजी सत्ता कायम हुई | उसके पश्चात धीरे-धीरे साहित्य का केंद्र भी स्थापित हुआ | सन 1800 में बंगाल में सर्वप्रथम जोशुआ मर्शिमन, विलियम केरी, विलियम वार्ड के द्वारा श्रीरामपुर में ईसायत मिशन का कार्य शुरू हुआ,सांस्कृतिक इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है | किसी भी गद्य साहित्य के विकास में प्राय: पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है |

बांग्ला साहित्य में यथार्थवादी उपन्यास का आरभ सर्वप्रथम शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यासों द्वारा मानते हैं | इनके अरक्षणीया (1916) पहली समाज (1916) वामुनेर मेये (1920) आदि उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है | शरतचंद्र के पश्चात् शैलजानन्द मुखोपाध्याय द्वारा कोयलाकुटी (1930) दिनमजुर (1932) आदि उपन्यासों में कोयला खानों में काम करने वाले मजदूरों की घटनाचक्र को लेकर लिखा गया है | उसके बाद विभूतिभूषण बंदोपाध्याय ने पथेल पांचाली (1929) अपराजिता (1932) दृष्टि प्रदीप (1935) आदि विभिन्न उपन्यासों की रचना की |

बंगला साहित्य का अध्ययन करने पर यथार्थवादी प्रवृत्ति शरतचंद्र से एवं सामाजिक यथार्थवादी शैलजानन्द मुखोपाध्याय से शुरू हुआ है | आंचलिकता यथार्थ से ही अलग हुआ प्रवृत्ति है | भारतीय साहित्य में आंचलिक प्रवृत्ति में सबसे पहले लेखन बंगला भाषा में लिखा गया है | बंगला साहित्य से ही धीरे-धीरे अन्य भाषाओँ में इसका प्रभाव पड़ा है |

हिंदी आंचलिक उपन्यास का संक्षिप्त परिचय

हिंदी उपन्यास का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था | प्रेमचंद से पूर्व लाला श्रीनिवास दास, पं. श्रद्धाराम फुल्लौरी, देवकीनंदन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी आदि उपन्यासकारों ने उपन्यास की पृष्ठभूमि तैयार की थी | पूर्ण रूप से प्रेमचंद युग से ही उपन्यास विधा का सूत्रपात माना जाता है

| आंचलिक उपन्यास का सूत्रपात फणीश्वर नाथ रेणु से मानते हैं परन्तु इससे पहले शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' (1925) नागार्जुन कृत 'रतिनाथ की चाची (1948) बलवंत सिंह कृत "रात चोर और चाँद" में स्थानीय रंगों का प्रयोग होने से आंचलिक उपन्यास के विकास में सहयोग मिला है |

"हिंदी उपन्यास साहित्य में सबसे पहले फनीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' को आंचलिक उपन्यास की संज्ञा दी है |"[15] फिर भी मैला आंचल के प्रकाशन से पूर्व नागार्जुन कृत 'बलचनमा' (1952) का प्रकाशन हो चुका था | आत्मकथात्मक शैली में लिखा हुआ 'बलचनमा' उपन्यास में बिहार राज्य के अंतर्गत दरभंगा जिल्ले के ग्रामीण जन-जीवन को लेकर लिखा गया है | आंचलिक प्रवृत्ति को लेकर लिखा गया नागार्जुन के उपन्यासों में 'बाबा बटेसरनाथ' (1954) और "वरुण के बेटे" (1957) उल्लेखनीय है | नागार्जुन ने अपने प्राय: सभी उपन्यासों में मिथिला अंचल के ग्रामीण जन-जीवन की परंपरा, आस्था, विश्वास, भेष-भूषा, खान-पान, आदि का सजीव चित्रण किया है | इसके अतिरिक्त उनके उपन्यासों में लोक जीवन, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याओं का यथार्थ रूप भी उदघाटित हुआ है | वरुण के बेटे उपन्यास में बिहार राज्य के दरभंगा जिले के आस-पास रहने वाले जालहारिओं के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है, ऐसे ही 'बाबा बटेसरनाथ' में इसी जिले की रुपौली गाँव को कथाभूमि का आधार बनाया है | कथन का सुनिश्चितता, कथ्य का संक्षिप्त निरूपण, सजीव चित्रण, मार्मिक प्रसंग तथा प्रगतिशीलता के प्रति आग्रह आदि नागार्जुन के उपन्यासों की विशेषता है |

शिव प्रसाद ने 'रूद्र' की बहती गंगा (1952) उपन्यास में सन 1950 से 1950 तक की काशी नगर का समग्र चित्रण और वहाँ की दो सौ साल की आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि पक्षों को उदघाटित किया है |

फणीश्वरनाथ रेणु से पूर्व ही हिंदी उपन्यास साहित्य में आंचलिक उपन्यास की विधायक तत्वों का समावेश मिलता है फिर भी रेणु के मैला आँचल उपन्यास के प्रकाशन से ही हिंदी उपन्यास साहित्य में

[15] शशिभूषण सिंहल- हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियां- 1970- पृ.23

आंचलिक उपन्यास की स्वतंत्र परंपरा स्थापित हुई है | मैला आंचल का कथाक्षेत्र बिहार राज्य के पूर्णिया जिले की मेरीगंज गाँव है | इस कृति में सन 1942-48 के बीच के घटना क्रम को आधार बनाया है | रेणु के दूसरे उपन्यास 'परती परिकथा' (1957) बिहार राज्य के अंतर्गत पारनपुर गाँव को पृष्ठभूमि बनाकर लिखा गया है | जुलूस (1965), दीर्घतप (1963) आदि रेणु के अन्य उपन्यास हैं |

उदय शंकर भट्ट के 'सागर लहरे और मनुष्य' (1955) और 'लोक परलोक' (1958) भी प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास माने जाते हैं | 'सागर लहरे और मनुष्य' में मुंबई के महानगर के पश्चिमी तट में अवस्थित बर्सोवा गाँव एवं वहाँ निवास करने वाले 'कोली जाति' को कथा का केन्द्रविंदु बनाया है | 'लोक परलोक' में पश्चिमी उत्तर प्रदेश की पद्मपुरी तीर्थस्थल को कथांचल बनाया है | खास तौर पर इस कृति में धर्म के नाम पर पाखंड को उदघाटित करने की चेष्टा हुई है |

रांगेय राघव हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध प्रगतिवादी साहित्यकार माने जाते हैं | उनके उपन्यास में वर्ग चेतना, सामाजिक विषमता, मानवीय कुरूपता आदि का स्वर दिखाई देता है | राघव कृत 'काका' (1953) और 'कब तक पुकारूँ' (1958) आंचलिक प्रवृत्ति के उपन्यास माने जाते हैं | 'काका' उपन्यास में मथुरा निवासी के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि पक्षों का चित्रण मिलता है | 'कब तक पुकारूँ' में राजस्थानी और ब्रज प्रदेश के सीमा में स्थित 'बैर' गाँव के निवासी करनट जाति के जीवन का चित्रण प्रस्तुत हुआ है |

देवेन्द्र सत्यार्थी का ब्रह्मपुत्र (1956) उपन्यास में असम प्रदेश से होकर बहने वाले ब्रह्मपुत्र नदी के तट में अवस्थित दिशान्मुख गाँव को कथांचल बनाया है | प्रस्तुत उपन्यास में इस गाँव के निवासी एवं विभिन्न जनजाति तथा उनके उनके व्यवसाय, जीवन -संघर्ष,दैनिक जीवन, रीति -रिवाज, चाड़ -पर्व, खान-पान लोक-संस्कृति, लोक-गीत, लोक-नृत्य आदि का चित्रण वर्णन एवं आंचलिक प्रवृत्ति का निर्माण करने में उपन्यासकार सफल हुए हैं | इस उपन्यास में स्थानीय बोली और ब्रह्मपुत्र नदी सम्बन्धी विभिन्न किवदंती,लोक कथाओं का प्रयोग प्रचुर मात्रा में उपन्यास में मिलता है | सत्यार्थी के अन्य उपन्यासों में

केरेल प्रदेश के जन-जीवन पर आधारित 'दूतगाछ' (1958) 'कथा कहो उर्वशी' में उड़िया प्रदेश की धौली गाँव को कथांचल बनाया है | 'रथ के पहिये' (1950) मध्य प्रदेश के धौली के गोंड जाति के जन-जीवन को कथा का केंद्र बिंदु बनाया है|

इसके अतिरिक्त राजेंद्र अवस्थी कृत 'सूरज कितन की छाँव' (1959) और 'जंगल के फूल' (1960) उपन्यास प्रसिद्ध हैं | इसी प्रकार राम दरश मिश्र कृत 'पानी के प्राचीर' (1961), हवलदार (1960) एवं 'चिट्ठी रसैन' आदि आंचलिक उपन्यास की कोटि में आतें हैं | हिमांशु श्रीवास्तव कृत 'नदी फिर बह चली' (1962), राही मासूम राजा कृत 'आधागाँव' (1966) आदि उपन्यासों ने हिंदी आचालिक उपन्यास साहित्य को गति प्रदान किया है | बलभद्र ठाकुर, भैरव प्रसाद गुप्त, अमृतलाल नागर, शिव प्रसाद सिंह के उपन्यासों में कुछ आंचलिक तत्व मिलते हैं |

वस्तुत: आंचलिक उपन्यास ने हिंदी उपन्यास साहित्य में एक नयी रचना विधान की सृष्टि की है | हिंदी साहित्य में अंचल विशेष, जाति विशेष को आधार बनाकर प्रशस्त आंचलिक उपन्यास लिखे गए | सन 1947 में स्वतंत्र प्राप्ति के पश्चात लोकतान्त्रिक भाव से प्रखर और उसी से बाध्य व्यक्तिवादी लेखन के विरोध स्वरुप हिंदी उपन्यास साहित्य में आंचलिक प्रवृत्ति का विकास हुआ | स्वतंत्रता पश्चात् देश के विभिन्न प्रदेश अंचल और क्षेत्र के लोगों में पारस्परिक परिचय, प्रेम एवं आत्मीयता के भाव बंटने से विभिन्न राज्यों का निर्माण हुआ | स्वतंत्रता काल में हिंदी साहित्य में आंचलिक प्रवृत्ति का सूत्रपात हुआ था परन्तु स्वन्त्र्योत्तर काल में इस प्रवृत्ति का विकास द्रुत गति में हुआ एवं आंचलिक उपन्यास की स्वतंत्र परंपरा भी स्थापित हुई |

नेपाली उपन्यासों में आंचलिकता : प्रारम्भ और विकास

साहित्यिक अभिव्यक्ति के विभिन्न विधाओं में उपन्यास सर्वाधिक समृद्ध विधा माना जाता है | उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकारों ने मानव जीवन की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, धार्मिक

आदि विविध पक्षों को विस्तारपूर्वक अभिव्यक्ति दिया है | मानव जीवन जैसे उपन्यास की विषय वस्तु भी असीम, परिवर्तनशील, विविधतापूर्ण और व्यापक है | इसके अतिरिक्त युगधर्मिता भी उपन्यास कीमहत्वपूर्ण विशेषता है | इसी सन्दर्भ में युगधर्मिता को उपन्यास का प्राणत्व मानते हुए जर्ज मुरले ने कहा है "जिस युग में हम जीवन चला रहे हैं उस सामाजिक परिवेश का सटीक और सम्पूर्ण पुनर्निर्माण ही उपन्यास है |"[16]

नेपाली उपन्यास का पूर्व आधार सन 1970 के दशक से शुरू हुआ था | 1936 से नेपाली उपन्यास में आधुनिकता का सूत्रपात हुआ, फिर भी क्षेत्र विशेष की जन-जीवन को मुख्य आधार बनाकर शंकर कोईराला का 'खैरिनी घाट' (1961) नेपाली का पहला उपन्यास माना गया है | शंकर कोइराला के पूर्ववर्ती रूप नारायण सिंह, लैनसिंह बांग्देल, अच्छा राई 'रसिक' असित राई, इन्द्र सुन्दास, लिलाध्वज थापा, दौलत विक्रम विष्ट, शिव कुमार राई, कृष्णसिंह मोक्तान जैसे उपन्यासकारों ने अपने-अपने उपन्यास में स्थानीय परिवेश का यथार्थ चित्रण, बोलचाल की ठेट शब्दों के प्रयोग और स्थानीय रंगों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया | स्थानीय रंग का प्रयोग किया हुआ उपन्यास ही आंचलिक उपन्यास मानने पर अधिक बल दिया गया | उल्लेखित उपन्यासकारों को आंचलिक उपन्यास की पृष्ठभूमि निर्माता माना गया है |

नेपाली साहित्य पहला आंचलिक उपन्यास खैरिनी घाट (1961) में कोशी नदी के किनारे रहने वाले मछवारन गाँव और आस–पास के क्षेत्र दुम्जा नेपालथोक आदि का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, एवं सांस्कृतिक पक्षों का सर्वांगीर्ण चित्रण मिलता है | कोइराला के दूसरे आंचलिक उपन्यास हेलम्बु मेरो गाँव (1975) में हेलम्बु क्षेत्र के विभिन्न जनजातियों का चित्रण है | तारा शर्मा के "ओझल पर्दा" (1966) और "मेरो कथा" (1976) चेतन कार्की कृत "आत्मा बेचेको छैन" (1965) जगदीश घिमिरे कृत "लीलाम" (1970) संजय थापा कृत "पूर्वतिर" आदि उपन्यास आंचलिक पृष्ठभूमि में लिखा हुआ मिलता है |

नेपाली साहित्य में आंचलिकता का स्पर्श एकाध उपन्यास में मिलता है | इस प्रकार के उपन्यासकारों का मुख्य उद्देश्य किसी अंचल, क्षेत्र अथवा भूखण्ड विशेष का सर्वांगीर्ण चित्रण ही न होकर

[16] जवाहर सिंह- हिंदी के आंचलिक उपन्यास की शिल्प विधि- 1986- पृ. 47

कथा भूमि के प्रति अपनी घनिष्टता दिखाकर अपनी कथा को विश्वशनीय एवं विकासक्रम में परिस्थिति अनुकूल यथास्थान उस क्षेत्र की उपन्यासों की चित्रात्मक झांकी प्रस्तुत करना मात्र रहा है | आंचलिक संस्पर्श हुआ उपन्यासों में लील बहादुर क्षेत्री कृत बसाईं (1957), कृष्णसिंह मोक्तान कृत "जीवन परिक्रमा" (1967), इंद्र सुन्दास कृत "जुनेली रेखा" (1979), "नियति" (1982) "सहारा" (1995), दौलत विक्रम विष्ट कृत "एक पलुवा अनेकों याम" (1996), विनोद प्रसाद धिताल कृत "उज्यालो हुनु अघि" (1971), डोर बहादुर कृत "सोताला" (1977), "हिमाल र मान्छे" (1988) असित राई कृत "नयाँ क्षितिज को खोज" (1981) भवानी भिक्षु कृत "आगत" (1975) आदि उल्लेखनीय है |

वस्तुत: आंचलिक उपन्यास मे समाज की स्थिरता का चित्रण नहीं उसमे सामाजिक चेतना, नवजागरण एवं परिवर्तन का संकेत, समाजशाश्त्रीय एवं लोक तांत्रिक भावना जैसे विविध विषयों को समावेश मिलता है, इसी कारण आंचलिक उपन्यास लोक जीवन को गतिशील करने में उत्प्रेरक बनता है | अत: ओझल पर्दा, लीलाम, पुर्वतिर, आत्मा बेचेको छैन आदि उपन्यासों में लेखक का उद्देश्य उस क्षेत्र में रहनेवाले शोषण प्रवृत्ति का चित्रण वर्णन तक सीमित है | इंद्र बहादुर राई कृत "आज रमिता छ" (1964) उपन्यास में दार्जिलिंग के तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, एवं आर्थिक वर्णन मिलता है परन्तु उपन्यासकार का मूल उद्देश्य मानव जीवन की विसंगति, जीवन जीने की मज़बूरी, अर्थहीन जीवन आदि का उल्लेख है | कहा जाता है ध्रुवचन्द्र गौतम कृत "अलिखित" (1983) उपन्यास में स्थानीय बोली का अत्यधिक प्रयोग, व्यंग्य चेतना, प्रतीकात्मकता आदि प्रवृत्ति नेपाली समाज से मिलता जुलता है | अत: भाषा प्रयोग की दृष्टि से इन्द्रबाहदुर राई कृत 'आज रमिता' छ से ध्रुवचन्द्र कृत अलिखित उपन्यास आंचलिकता के नजदीक दिखाई देता है | 'आज रमिता छ' उपन्यास के शीर्षक भी आंचलिकता बोध होने के बदले विसंगातिबोध ही ज्यादा ध्वनित होता दिखाई देता है | ध्रुवचन्द्र गौतम कृत 'घामका पाईलाहरु (1978) नेपाल के मैदानी क्षेत्र की स्थान विशेष एवं सीमित काल खंड को लेकर लिखा गया नगरान्चालीय उपन्यास है | इस कृति में 1920 के दशक में वीरगंचलीय रेलवे क्षेत्र से वहाँ के जन-जीवन की प्रभावों का चित्रण है |उनका उपन्यास "यहाँदेखि त्यहाँसम्म" (1985) नेपाल के वारा जिले के तीयर तथा मुर्की नदी के

आस-पास रहने वाले लोगों की स्थिति को ऐतिहासिक रूप में चित्रित किया गया है | इसी तरह रमेश विकल कृत 'अविरल बग्छ इन्द्रावती' (1983) नदी के तट में रहने वाले निम्नवर्गीय एवं शोषित मछवारनों, शोषण के प्रति जागृत वर्गीय चेतना के प्रति संघर्ष दिखने के क्रम में उस गाँव को अपना कार्य क्षेत्र बनाया है | सन 1986 में प्रकाशित लीलबहादुर क्षेत्री का आंचलिक उपन्यास 'ब्रह्मपुत्र का छेउछाउ' में असम राज्य के अंतर्गत बहने वाले ब्रह्मपुत्र नदी के आस-पास के क्षेत्रों को कथांचल बनाकर वहाँ के निवासियों के जीवन का सर्वांगीर्ण छवि प्रस्तुत किया है |

सन 1934 से आधुनिक काल में प्रवेश कर नेपाली उपन्यास नयें शिल्प शैली में गतिशील बनने में सक्षम हुआ है | अंग्रेजी उपन्यास साहित्य में सन 1800 से शुरू हुआ आंचलिक उपन्यास आधुनिक काल से ही नेपाली साहित्य में उसका सूत्रपात मिलता है | नेपाली साहित्य में किसी क्षेत्र अथवा अंचल को आधार बनाकर कुछ आंचलिक उपन्यास का पृष्ठभूमि में लिखा गया और कुछ उपन्यास स्थानीय रंग के प्रयोग में ही सीमित मिलता है | समाज में व्याप्त गरीबी,शोषण, विवशता, अत्याचार, कूटनीति आदि को दिखाना ही ऐसे उपन्यासों का मुख्य मकसद रहा है | अत: नेपाली साहित्य में किसी अंचल एवं क्षेत्र विशेष को लेकर लिखा गया विशुद्ध आंचलिक उपन्यासों में खैरिनी घाट, हेलम्बु मेरो गाँव, घामका पईलाहरु, यहाँदेखि त्यहाँसम्म, ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ आदि को प्रतिनिधि कृति माना जा सकता है | इस प्रकार नेपाली आंचलिक उपन्यासों का विकास क्रम देखा जा सकता है |

आंचलिक उपन्यास के तत्व

आंचलिक उपन्यास के छ: तत्व हैं |

1.कथावस्तु अथवा कथा विन्यास

2. पात्रगत चरित्र चित्रण

3. कथोपकथन

4. देश काल वातावरण

5. भाषाशैली

6. उद्देश्य

आंचलिक उपन्यास में ये सभी तत्व समाहित रहते हैं तभी पूर्ण स्वरूप माना जाता है | आंचलिक उपन्यास के तहत इन तत्वों को नये सिरे उपयोग किया जाता है, इसके साथ-साथ एक दूसरे के उपयोग में अनुपात दिया जाता है | जैसे किसी भी उपन्यास में लोक को दर्शाया जाता है, वहाँ पर सांस्कृतिक जीवन एवं उस स्थान से जुड़े हर एक पात्र, इसलिए स्थान विशेष का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है | पृष्ठभूमि में प्राय: प्राकृतिक परिदृश्य भी झलकता है | ग्रामीण से जुड़े लोगों में वहाँ के ठेट भाषा अथवा बोली के प्रयोग से लोक को दर्शाया जाता है | कहीं पर लोकगीत के आ जाने से समाज की रीतिरिवाज, संस्कृति भी झलकती है, किन्तु आंचलिक उपन्यासों में यह रंग प्रगाढ़ रूप में विद्यामान नहीं होता और कथानक एवं चरित्रगत के तहत सर्जनात्मकता की भूमिका बहन नहीं करता | आंचलिक उपन्यासों में ये तत्व केन्द्रीय रूप में ही प्रयोग किया जाता है | ये तत्व अपनी चातुर्य एवं सघनता के साथ प्रयोग में आतें हैं | कहने का तात्पर्य यह है कि आंचलिक उपन्यास में राजनितिक और आर्थिक परिस्थिति से ज्यादा सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य और प्राकृतिक चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं | अंचल के निवासियों की पहचान भी इन्ही परिदृश्यों द्वारा परिलक्षित होता है | आंचलिक उपन्यासों में मनुष्य के सहचर्य को दिखाने के लिए इन परिदृश्यों का चित्रण व्यापक होता है ,आंचलिक उपन्यास अन्य उपन्यास से भिन्न होतें हैं | डॉ शशिभूषण सिंहल ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को मूल तत्व स्वीकार किया है | उनके शब्द में कहा जाये तो "अंचल के मूल तत्व पहले से प्रकृति को प्रश्न की दृष्टि से देखकर चुनौती नहीं देता, वह उससे आदि सहचरी मानकर उसमे अटूट आस्था रखता है | प्रवृत्ति उसके प्रयोगशाला नहीं ईष्ट और पूज्य है | प्राकृतिक शक्ति में अंतिम व्यक्ति के अटल विश्वास को आधुनिक व्यक्ति अन्धविश्वास की संज्ञा देता है | किन्तु यह विश्वास आदिम लोगों का अवलम्ब है | वे प्रकृति के अभिन्न अंग होने के कारण स्वयं भी प्राकृत दशा में रहने के अभ्यस्त है | रूढ़ि

और अन्धविश्वास उनके जीवन के अभिन्न अंग हो गए हैं | ये आधुनिकता के मशीनीकरण से दूर हैं और समूचे आधुनिकीकरण को शंका की दृष्टि से देखते हैं |"[17]

ऐसे ही आंचलिक उपन्यास में अन्य उपन्यास की तुलना में कथानक, पात्रगत चरित्र चित्रण, देश कल वातावरण एवं भाषाशैली के स्तर पर उसके स्वरुप अलग ही वैशिष्ट्य लिए रहता है | निर्धारित तत्वों में आंचलिक उपन्यासों में नवीनता देखने को मिलता है |

कथाविन्यास

आंचलिक उपन्यास की कथावस्तु में अन्य उपन्यास की तुलना में बिखराव देखने को मिलता है अन्य उपन्यासों में कथावस्तु में केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति होती है इसलिए आंचलिक उपन्यासों की कथावस्तु में एकसूत्रता दिखाई नहीं पड़ती क्योंकि उनका पात्रों के साथ अन्तसंबंध न होकर अंचल की समग्रता से होता है, जिससे सब के सामने लाना उसका मुख्य लक्ष्य होता है | किसी भी उपन्यासकार की दृष्टि अंचल को समग्रता में उजागर करना होता है इसलिए उपन्यास में अंचल ही नायकत्व की भूमिका निभाता है | अंचल की सम्पूर्ण जन जीवन को उजागर करने की कोशिश में कथावस्तु में बिखराव आ जाता है | आंचलिक उपन्यास में कथानक को प्रस्तुत करने के लिए परिवेश एक सर्जनात्मकता के रूप में आता है |

पात्रगत चरित्र चित्रण

आंचलिक उपन्यास में अन्य उपन्यास की तुलना में चरित्रगत निर्माण में नवीनता देखने को मिलता है | लेखक का ध्यान पात्रगत न होकर अंचल की समग्रता पर होती है | किसी एक पात्र पर केन्द्रित न होकर अंचल विशेष उसका नायक होता है और वहाँ के जन जीवन ही उसके केंद्र में होता है | अंचल से जुड़ी छोटे-छोटे प्रसंगों, सन्दर्भों की सृष्टि करता है और किसी भी व्यतिगत चारित्रिक पात्र का चित्रण दूर तक नहीं

[17] शशिभूषण सिंहल- समकालीन हिंदी उपन्यास (1990-2010) पृ. 120

चलने देता | उपन्यासकार अंचल से विशेष रूप से जुड़ा होता है, अभिन्न अंग होने के कारण अनेक चरित्रों को उजागृत कर प्रमाणिकता को बढ़ावा देता है |

आंचलिक उपन्यास में मुख्य पात्र का अभाव होता है, इसके साथ-साथ पात्रों की बहुलता भी देखने को मिलती है | उपन्यास में पात्रों की संख्या इसलिए अधिक होता है क्योंकि रचनाकार को अंचल की समग्रता का चित्रण करना होता है एवं यही पात्र अंचल की विविध आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं |इस प्रकार आंचलिक उपन्यास में अन्य उपन्यासों की तुलना में चरित्रविधान का नया रूप देखने को मिलता है|

कथोपकथन

आंचलिक उपन्यास में कथोपकथन की मुख्य भूमिका रहती है | कथोपकथन के द्वारा उपन्यास में कथाविन्यास को गठित किया जाता है | अंचल के जन जीवन की भाषा शैली एवं बोली से आंचलिकता का पूर्ण रूप झलकता है |उपन्यास में कथानक और पात्रगत चरित्रचित्रण प्रधान तत्व है | इनको प्रकट करने के लिए अन्य साधनों की आवश्यकता होती है | इन साधनों में कथोपकथन मुख्य तत्व है | कथोपकथन कथानक को भी आगे बढ़ाता है और चरित्र को भी प्रकट करता है | कथोपकथन का विषय हमेशा सरस और रोचक होता है |जिस अंचल विशेष का चित्रण होता है वहां का यथार्थ स्वरूप की अभिव्यक्ति भी वहां की ठेठ भाषा के प्रयोग द्वारा ही संभव होता है |

देशकाल वातावरण

लेखक की रचना का आधारबिंदु उसका परिवेश होता है | परिवेश से कथ्य चुनने में उपन्यासकार की रचना दृष्टि विकसित होती है | उपन्यास में रचनाकार और परिवेश का घनिष्ट संबंध होता है | आंचलिक उपन्यास में प्राकृतिक वातावरण कथा की पृष्ठभूमि के रूप में आकर कथानक के निर्माण प्रक्रिया में सर्जनात्मकता में सहयोग करती है |आंचलिक उपन्यासकार परिवेश के आंचलिक रंग को दर्शाते हुए एक कथा का गठन करता है | उपन्यासकार परिवेश से दो कार्य करता है आंचलिक रंग दर्शाता ही है और अपनी

संवेदना भी गढ़ता है | आंचलिक उपन्यासों में प्राकृतिक वातावरण जीवन सन्दर्भ से जुड़कर कथा को सार्थक करने में मूल भूमिका का निर्वहन करता है | इस प्रकार आंचलिक उपन्यासों में प्राकृतिक परिवेश पृष्ठभूमि से कई अधिक सर्जक तत्व के रूप में आता है |

भाषाशैली

आंचलिक उपन्यासकार समग्र जन जीवन को अपनी भाषा के एक सूत्र में कर रचना करता है | उपन्यासकार की बातों में पात्र के व्यक्तित्व का रंग निहित होता है | वहीँ आंचलिक उपन्यासों में यह रंग अंचल विशेष से संबंध होने के कारण गहरा होता है क्योंकि आंचलिक पात्र आंचलिक भाषा का प्रयोग व्यापक रूप में करता है | इस आंचलिक भाषा का प्रयोग केवल उपन्यास के पत्र ही नहीं करते बल्कि लेखक स्वयं उस भाषा शैली का करते हैं | स्थानीय भाषा शैली के प्रयोग से आंचलिक वातावरण अधिक जीवंत हो उठता है | इस सन्दर्भ में आंचलिक उपन्यासकार रामदरश मिश्र का मंतव्य कुछ इस प्रकार है "विशेष प्रकार के अनुभूति को कहने के लिए जब हमारी तथाकथित साहित्यिक भाषा में ठीक-ठीक शब्द नही मिलते, तब स्थानीय शब्दों का प्रयोग लेखक की अनिवार्य विवशता हो जाती है |"[18]

उद्देश्य

आंचलिक उपन्यास का प्रमुख तत्व उद्देश्य होता है | उसका मूल उद्देश्य जीवन दर्शन को दिखाकर उसी उसकी व्याख्या करना होता है | वह सामाजिक, और पारिवारिक अनौचित चित्रणों द्वारा जन जीवन के ह्रदय को आंदोलित करता है | आंचलिक उपन्यास में उसके स्वरुप को पूर्ण रूप से उजागर कर सकें | उपन्यास की रचनात्मकता को भी उद्घाटित करता है | आंचलिक उपन्यास के हरेक पक्ष को उजागृत करना और रचना धर्मिता में नवीनता प्रदान करना लेखक का मूल उद्देश्य है | विशेष रूप से आंचलिकता को समग्रता में चित्रित करना भी होता है |

[18] रामदरश मिश्र- हिंदी उपन्यास : अंतर्यात्रा- 1997- पृ. 192

निष्कर्षत: आंचलिक उपन्यासों में यह सभी तत्व अन्य उपन्यास की तुलना के बरक्स भिन्न रूप में आता है और प्रत्यक्ष रूप में जीवनदर्शन के साथ अंचल की समग्रता का बोध कराता है |

तृतीय अध्याय -देवेन्द्र सत्यार्थी समय समाज एवं रचनाधर्मिता

देवेन्द्र सत्यार्थी : जीवन वृत्त

देवेन्द्र सत्यार्थी जी का आविर्भाव हिंदी साहित्य में बीसवीं शताब्दी में हुआ | उनका जन्म 28 मई 1908 ई0 में पंजाब के भदौड़ जिले के संगरूर गाँव में हुआ था | सत्यार्थी के बचपन का नाम युधिष्टिर था, बाद में देव इंदर बतरा रखा गया | यह एक मध्यमवर्गीय परिवार से थे | सत्यार्थी जी को हिंदी साहित्य में छठे दशक से प्रारंभ होने वाली प्रगतिशील लेखन परम्परा के प्रखर हस्ताक्षर के रूप में देख सकते हैं |

सत्यार्थी बाल्यावस्था से ही चतुर एवं ज्ञानी थे | उनकी प्रारम्भिक शिक्षा एक कठिन यात्रा की तरह शुरू हुआ था |शिक्षा की शुरुआत 'त्रिजन' में हुई |वह स्कूली शिक्षा को उतनी पसंद नही करते थे, वे उसे छोड़कर चले जाना चाहते थे | उस विद्यालय के मास्टर सत्यार्थी से विशेष लगाव नहीं रखते थे, वे नफरत भरी निगाहों से सत्यार्थी को देखते थे परिणाम यह हुआ कि सत्यार्थी भी उनसे कभी जुड़ नहीं पाए,वे सोचते थे कि किसी समय निशानेबाजी का मौका मिलेगा तो पहला निशाना मास्टर के ऊपर होगा | वे बाल्यावस्था से ही सोचते थे कि किसी दिन मास्टर बालक बनेंगे और मैं मास्टर बनूँगा | उस समय देख लिया जाएगा | वे उर्दू के कायदे को बिलकुल पसंद नहीं करते थे, उन्हें लगता था इसे फाड़कर मास्टर के ऊपर फेंक दूँ |

सत्यार्थी किताबी शिक्षा से बेहतर प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति ज्यादा आकर्षित थे | जब भी खेतों में गाय, बैल, भैंस आदि को चरते हुए देखते, वे पशुओं को प्रेम भरी निगाहों से देखते | वे उनके प्रति विशेष स्नेह रखते थे क्योंकि उनके जीवन के मकसद को पूर्ण करने की राह में वे मददगार थे | सत्यार्थी कभी-कभी पिताजी के जेब से कुछ द्रव्य चुराकर चरवाहों को देते थे और उन लोगों से लोकगीत सुनते थे | वे उसे सुनते हुए अपनी कॉपी पर लिपिबद्ध करते थे | उनके पिताजी बहुत कठोर स्वाभाव के थे, उनकी डर से उस कॉपी को अपने मित्र आसासिंह के घर पर ही रख आते थे | एक दिन आसासिंह की कुदृष्टि उस कॉपी के ऊपर गई और उन्होंने एक-एक कर जला डाला | उस खबर को सुनकर वे अत्यंत दुखी हुए, फिर सोचा कि एक-दो

कॉपी जलाने से सारा लोकगीत तो खत्म नहीं हो जाएगा , पुन: उनके मन में एक बात आई "लोकगीत की कापी जलाकर आससिंह के बाप ने यह कैसे समझ लिया कि लोकगीत ख़त्म हो जायेंगे ? वह फिर से नई कापी बनाने में लग गया |"[19]

वे पुरुषों के साथ नहीं बल्कि स्त्रियों के साथ रहना, खेलना पसंद करते थे |सत्यार्थी के एक पुस्तक में लेखक ने कुछ इस प्रकार से कहा है "जहाँ भी मैं पांच- छ: लड़कियों को इकट्ठा बैठा देखता, मैं उनके यहाँ जा बैठता | कभी-कभी मैं सोचता कि मेरा जन्म लड़की के रूप में क्यों नहीं हुआ |..... मुझे वे दिन रह-रहकर याद आते जब मैं लड़कियों के साथ गेंद से खेलते-खेलते लड़कियों की ही गेंद को प्रतिपल गिरने से बचाते हुए गेंद के गिरने- उभरने के ताल पर थाल गाया करता था |"[20]

इन्होंने मिडल की परिक्षा 1923 में उत्तीर्ण किया | उन्होंने गीतांजलि का अनुवाद बाजार से पढ़ा था | मैट्रिक की परीक्षा 'मथुरा दास' हाई स्कूल से उत्तीर्ण किया | बहुत कम आयु में ही आर्य समाज द्वारा आयोजित रजत जयंती पर महात्मा गांधी जैसी महान व्यक्तित्व से भेंट करने का अवसर इन्हें प्राप्त हुआ |

सत्यार्थी को अपनी स्कूल के समय में एक लड़की के साथ प्रेम हो गया था, उसका नाम मूर्ति था जो उसी विद्यालय के हेडमास्टर की बेटी थी | किसी कारण वह लड़की पढ़ने हेतु कहीं ओर चली गयी | "सत्यार्थी और मूर्ति का प्रेम सम्बन्ध इतनी प्रगाढ़ हो गया था कि उसके चले जाने पर सब कुछ फीका-फीका नीरस सा लगने लगा | वह बौरा गया... फिर धीरे-धीरे यह रोग छुटा |"[21]

घर की आर्थिक अवस्था ठीक न होने के कारण इनके पिता इन्हें डी. ए. बी कॉलेज पढ़ाने में असमर्थ थे, इन्हें पटियाला में महेंद्र कॉलेज में भर्ती करवा दिया गया गया किन्तु देवेन्द्र जी का सपना था कि वे डी. ए. बी कॉलेज से ही आगामी शिक्षा हासिल करें | किसी तरह उन्होंने पटियाला छोड़ चुपचाप घर

[19] संजीव ठाकुर- कथा पृथ्वीके पुत्र की, यायावर देवेन्द्र सत्यार्थी- पृ. 19
[20] देवेन्द्र सत्यार्थी , चाँद सूरज के बीरन, 1953, पृ. 32
[21] संजीव ठाकुर, कथा पृथ्वी पुत्र की, यायावर: देवेन्द्र सत्यार्थी, 1991. पृ.19

आकर डी. ए. बी में ही अध्ययन करने की जिद्द की | अंत में पिताजी ने हार मानकर उन्हें डी. ए. बी कॉलेज में दाखिला करवा दिया | अध्ययन के दौरान मित्र रूपलाक की अचानक मृत्यु देख सत्यार्थी को अंदर ही अंदर बहुत बड़ा झटका लगा | उसको देख उन्होंने आत्महत्या करने की ठान ली पर कुछ मित्रों ने देखकर उन्हें बचा लिया | कॉलेज के दौरान तीन-चार साल चारदीवारी के अंदर रहना उनके लिए कम नहीं था | किसी तरह बाहर निकलकर साहित्य के विकास में हाथ बंटाने लगे | 1927 में पहली बार रविन्द्रनाथ ठाकुर से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ,जिनसे सत्यार्थी ने बहुत कुछ सीखा |

सत्यार्थी जी घुमक्कड़ प्रवृति के थे जिसे घर से बांधे रखने के लिए उनके पिताजी ने 1931 में उनका ब्याह कर दिया परन्तु इससे उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा | पत्नी ने यह देख उनके सहयात्री होना ठाना | यात्रा के दौरान 1932 में पहली बेटी कविता का जन्म हुआ अब उनके साथ परिवार सहयात्री बनकर चलते हैं | लंका यात्रा के दौरान उन्होंने सुंदर लोक गीतों को संकलित किया |

बचपन से ही ये गांधीजी के किये कार्य पर विशेष लगाव तथा उनकी गतिविधियों का अध्ययन करते थे | जब गांधी जी को मालूम चला कि वे उनके अनुयायी हैं तो 1936 में कांग्रेस अधिवेशन में सत्यार्थी जी को आमंत्रित किया | लोक गीत के क्षेत्र में इन्होंने पहला कदम 1936 में रखा |उसी समय तमाम उर्दू की कहानियाँ एवं पंजाबी में गजलें लिखी | साहित्य के प्रति उनका विशेष योगदान देख पटियाला की भाषा विभाग ने उन्हें विशेष सम्मान प्रदान किया गया | इनका प्रथम उपन्यास 'रथ के पहिये' 1948 में प्रकाशित हुआ था | 1936 में ही भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से 'आजकल' का प्रकाशन आरम्भ हुआ जिसका संपादन उन्होंने नौ साल तक किया | इसके बाद उनका मन नहीं रमा तो 1956 में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया |

लेखन कार्य के दौरान परिवार के सदस्यों ने कभी रुकावट नहीं डाली बल्कि हमेशा सहयात्री की तरह कंधे से कन्धा मिलकर उनका साथ दिया परन्तु उन्होंने अपना सम्पूर्ण कार्य अपनी पारिवारिक स्थितियों को निभाते हुए किया | लोकयान की यात्रा से आकर्षित होकर पाकिस्तान सरकार द्वारा इन्हें

विशेष निमंत्रण मिला | इसी यात्रा के दौरान लाहोर, करांची आदि जगहों की यात्राएँ की और 'सफरनामा पाकिस्तान' जैसे ग्रन्थ की रचना की |

इनके साहित्यिक यात्रा के दौरान कुछ घटनाएँ ऐसी रही जिसने इनके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला | प्राकृतिक आपदाओं ने इनके बनते घर को तहस नहस कर दिया | उस समय पूरा घर भी बनकर तैयार नहीं हुआ था कि दिल्ली में आयी बाढ़ ने इनके घर को ग्रस लिया | सालों की साधना से लोकगीत,मुंह बोलती तस्वीरें, पांडुलिपि कई ऐसे बहुमूल्य सामान को बाढ़ ने मिटटी में मिला दिया | एक दर्द भूले भुलाया नहीं जा रहा था कि दिसम्बर माह 1961 में इनकी बेटी कविता का अकस्मात् निधन होने से इनके दिल पर गहरी चोट पहुँची तथा जिंदगी को हिलाकर रख दिया | उसके पश्चात सारा जीवन उन्हें नीरस लगने लगा | लेखक ने अपने दर्द का साझा करते हुए लिखा है "मुझे अपनी पीठ पर चाबुक बरसता महसूस हो रहा है और किसी निश्छल आवाज की गूंज मेरे कानों में सरक रही है |" [22] लेखन कार्य के दौरान घातक रुकावट आई परन्तु इससे सामना करने का साहस भी था | जब 1961 में 'कथा कहो उर्वशी' उपन्यास छपी तब कई साल रचनाएँ छपनी बंद हो गयी | जो 1948 में 'नीलयक्षणी' ने लिखने के लिए फिर से उन्हें प्रेरित किया |

इनकी प्रतिभा एवं कुशलता को मद्देनज़र रखते हुए भारत सरकार ने इन्हें 1976 को पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया | इसके पश्चात हिंदी अकादमी ने इनकी प्रतिभाओं से प्रभावित होकर 1989 में विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया | अपने ही जन्म स्थान भादौड़ में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन कर 1991 में उन्हें सम्मानित किया गया |

वे लेखन यात्रा के दौरान कई बार दिल्ली के भीड़ भरे बस में ठोकर खाते हुए चले | उम्र के साथ-साथ परिवार में केवल पति-पत्नी का दांपत्य जीवन देर तक चला | उन्होंने अपने यायावर जिंदगी में अपनी कार्य की सार्थकता को प्रदर्शित करते हुए पूरे भारत,वर्मा, पाकिस्तान, बंगलादेश,श्रीलंका आदि कई देशों

[22] डॉ. संजीव ठाकुर- कथा पृथ्वी पुत्र की यायावर, देवेन्द्र सत्यार्थी- पृ. 52

का भ्रमण किया | उसके साथ गोष्ठियां,सम्मलेन आदि में कई विद्वानों से भेंट करने का सुंदर अवसर मिला जिसने उनकी साहित्य साधना को एक विशेष धार दी |

प्रत्येक मानव अपनी जिज्ञासा के आधार पर स्वयं का परिचय बनाता है | सत्यार्थी की अनेक अभिरुचियां ही उनके व्यक्तित्व को उभारता है | काका कालेकर के अनुसार "देवेन्द्र सत्यार्थी भारत के लोक गीतों की अनन्य उपासक है | उनकी प्रवृत्ति और निष्ठा की ओर महात्मा जी ने मेरा ध्यान खींचा है | अपनी समृद्ध दाढ़ी के साथ फकीराना ढंग से उन्होंने सारे भारत का भ्रमण किया है और भारत के हर प्रान्त के लोक गीत उन्होंने इकट्ठे किये | उनका वह संग्रह एक सागर जैसा है |" [23] यात्रा के दौरान उनको आर्थिक कमी कभी नहीं हुई | अख़बार बेचकर, फुटपाथ पर प्लेट घिसकर, कई लेखों के पैसों से तो, कहीं मित्रों के अनुदान से उनका गुजारा चलता था |

इसके साथ सत्यार्थी जी में अतिथ्य सत्कार की भावना विद्यमान थी | वे कभी नहीं चाहते थे कि उनकी वजह से किसी दूसरे के मन में ठेस पहुँचे | वे 'आजकल' के संपादन कार्य को करते हुए स्वयं कहते हैं,"जब भी कोई व्यक्ति मेरे पास अपनी रचना लेकर आता था | चाहे उसकी रचना छपने लायक हो या न हो मैं उसे बड़े आदर से बिठाता था तथा एक कप चाय पिलाकर ही विदा करता था ताकि अमुक व्यक्ति की मुझसे कोई शिकायत न रहे |" [24]उनके पास गाड़ी भी थी परन्तु वे तो यायावर थे | वाहन बेच दी थी तथा नौकरी से त्यागपत्र देकर वह फिर से सड़क का आदमी बन गए थे | सत्यार्थी के व्यक्तित्व की खासियत यह है कि कभी किसी ने उनके मुंह से कटु वचन नहीं सुना होगा | उनकी बोलचाल में लयात्मकता एवं मिठास से भरी हुई थी | वे ऐसे महान व्यक्ति थे जो कभी किसी के लिए बुरा सोच उनके मन में नहीं आता था | उनको हमेशा सहृदय वाले श्रोता की खोज रहती थी | उन लोगों के साथ चर्चा परिचर्चा करना उनको बेहद पसंद था |

---

[23] देवेन्द्र सत्यार्थी- ब्रह्मपुत्र 1992 पृ. 7

[24] आजकल- पत्रिका

एक अच्छे उपन्यासकार, कहानीकार के साथ-साथ एक कवि और रेखा चित्रकार भी थे | इसके साथ-साथ वे अच्छे पति धर्म को निभाते हुए एक गृहस्थी भी थे | यदि सत्यार्थी को पूर्णरुपेण जानना होगा तो उनकी तमाम रचनाओं से होकर गुजरना होगा | उनकी आत्मकथा चाँद सूरज के वीरन का अध्ययन करना होगा, पंजाबी से हिंदी में अनुवादित 'घोड़ा बादशाह' की मर्म को समझना होगा और 'सफरनामा पाकिस्तान' को भी भलीभांति अपने दिल में जगह देनी होगी |

प्रकाश मनु ने देवेन्द्र सत्यार्थी के व्यक्तित्व को समझते हुए कुछ इस प्रकार से अपने विचार प्रकट किए, "प्रसिद्ध हास्य अभिनेता चार्ली चेप्लिन को संसार के किसी कोने से पत्र भेजना हो तो उनका पता मालूम न हो तो लिफाफे पर उनकी ढीली ढीली पतलून, छड़ी और टोपी का स्केच बना देना काफी होता है | उसी प्रकार यदि आप अदद भारी- भरकम चमड़े की थैली, एक कैमरे और छाती में लहराती हुई दाढ़ी का स्केच किसी लिफाफे पर बना दें तो वह अवश्य अपने गंतव्य अर्थात दिल्ली में देवेन्द्र सत्यार्थी के पास पहुँच जाएगा |"[25] इस उद्धरण से प्रत्यक्ष अनुमानित होता है कि वे इतने महान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और उनका बाह्य और आंतरिक दोनों ही व्यक्तित्व से लोग भली -भांति परिचित थे |

स्नेह, सरलता एवं सादगी के अलावा उनके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष भी है, एक ऐसा पक्ष जिसमे उनके जीवन संघर्ष का अनेक अनुभव, स्वदेश प्रेम, देश, समाज, देशकाल परिस्थितियां एवं प्रगतिशीलता की भावना उभर कर सामने आती है | उनके लोकगीतों की सच्चाई को टैगोर ने भी महसूस किया था और उनको काफी प्रोत्साहित किया था |

देवेन्द्र सत्यार्थी की कृतियों की एक बड़ी विशेषता थी कि उनके पात्रों में उनके व्यक्तित्व का प्रभाव काफी मात्र में झलकती है | इसके साथ ही अपनी देश की संस्कृति,प्रकृति के जर्रे-जर्रे के प्रति उनमें गहरा लगाव था और इस प्रवृत्ति को उन्होंने लेखकीय स्वरुप देने का प्रयास किया | अत: इसमे किसी भी प्रकार का संदेह नहीं है कि उन्होंने दर-दर की ठोकरें खायी परन्तु वे अपने जीवन में कभी नहीं टूटे | अपने अनुभव

[25] प्रकाश मनु- देवेन्द्र सत्यार्थी के चुनी हुई रचनाएँ- पृ. 23

एवं सूक्ष्म दृष्टि के बल पर जीवन को समझने की चेष्टा की | उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि ठोकर खाकर जीवन को और प्रगाढ़ बना सकते उसे ख़त्म नहीं | सत्यार्थी का व्यक्तित्व जो स्वयं को खानाबदोश कहते थे एवं सारी जहाँ के नज़रों में यायावर थे, उनके अन्दर प्रतिभाशाली तथा बहुमुखी लेखक बैठा था, जो अपनी दिव्य दृष्टि से धर्म, कला, समाज, लोक साहित्य एवं दर्शन के पहलुओं को समझकर सबके सामने प्रस्तुत किया |इसके अलावा तमाम मानव जातियों के सुख-दुःख, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आशा-निराशा आदि का परिचय दिया | वास्तव में सत्यार्थी एक व्यक्ति ही नहीं बल्कि कला का लोक जीवन उनके भीतर समाया हुआ था |

साहित्यिक परिचय

हमारा भारत देश एक बहुभाषी देश है, ऐसे में जिस के पास अनेक भाषाओँ में लिखने की कला हो ऐसे व्यक्ति का स्थान अलग ही नजर आता है | ऐसे में सत्यार्थी एक है | जिन्होंने अपने सृजन कला के दौरान चार भाषा पंजाबी, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी में रचनाशीलता को प्रदर्शित किया और प्रत्येक भाषा में प्रभावशाली सर्जक एवं मान प्रतिष्ठा प्राप्त किया |

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सामाजिक परिवेश के तहत अपनी सोच-समझ विकसित होती है एवं अपनी परम्पराओं, संस्कारों और रीति-रिवाजों से भी कभी विमुख नहीं हुए | सत्यार्थी ने सामाजिक यथार्थ को अपनी कृतियों में उद्घाटित किया | वे अपनी कहानियों में आसपास के जीवन से दृश्यों को चुनते थे | उनकी रचनात्मक कृतियां निम्नलिखित हैं -

चट्टान से पूछ लो - सन् 1948

सत्यार्थी का यह पहला कहानी संग्रह है | इसमे बारह कहानी संग्रहित है | इस कहानी संग्रह में किस प्रकार गांधीजी द्वारा देश को आजाद करवाने का वर्णन है | इसी दौरान गांधीजी के सिद्धांत को जन-जन तक पहुंचाकर लेखक ने गांधी के प्रति श्रद्धा का परिचय दिया है | इन्होंने अपनी कहानी संग्रह में अनेक स्थानों

को कथा का केंद्र बनाया है | कांगड़ी कहानी का नायक कश्मीर का बागडोर संभालता है तथा कश्मीर को आजाद करवाने हेतु नारा लगता है | रांगटी तथा कबरों के बीचों-बीच में बंगाल के अकालों को लेकर लिखा गया है | इसी प्रकार आजादी के संघर्षों के लिए अनेक प्रकार की यातनाओं को भोगते हुए जन-जीवन को एक सूत्र में रखने का प्रयास किया गया है |

चाय का रंग- 1949

'चाय का रंग' इस कहानी संग्रह की प्रमुख कहानी है | जिसमें उन्होंने असम के जन-जीवन का चित्रण किया है इस में चाय के बाग़ में काम करने वाले मजदूरों की दुखदायी स्थिति का चित्रण किया है | इसी प्रकार आटोग्राफ, नये देवता, इकन्नी, टिंकुली खो गई, लिलारूप,अन्न देवता, शबनमा, दोराहा आदि को संग्रहित किया है | 'आटोग्राफ' कहानी में शान्तिनिकेतन की सच्ची घटनाएँ सामने आती है तथा मानवीय भावों के माध्यम से इसे प्रस्तुत किया गया है | 'नये देवता' में एक ऐसे लेखक के व्यक्तित्व को उभारा गया है जी कि एक देशीय नहीं है | शराब के नशे में धुत्त होकर एक दूसरे के प्रति द्वेष भाव को भूल जाना उसकी खूबी बताई गयी है | ईक्कन्नी' कहानी में सत्यार्थी की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया गया है | उनके जीवन में एसी स्थिति भी आई जिस समय जेब में ईक्कन्नी मात्र था | 'टिंकुली खो गई' कहानी में गाँव से नगर में आने पर हडबडाहट में इधर-उधर भटकना तथा सहानुभूति की अपेक्षा को कथा का मुख्य केंद्र बनाया है | लिलारूप' इस कहानी में देश प्रेम की भावनाओं को उजागृत किया गया है | 'अन्न देवता' में गोंड जीवन का एक मुह बोलता चित्र प्रस्तुत है| हलदी अन्न देवता को ही सर्वश्रेष्ठ मानती है | तथा उसके पति उसका निरादर किये जाने पर उसे खरी खोटी सुनाती है | उसके विश्वास है कि अन्न देवता उसकी रक्षा करेंगे | अन्न देवता को सभी समस्यओं का आश्रय बनाकर कथा को बुना गया है | ऐसे ही सभी कहानियो में आर्थिक तथा सामाजिक बिसंगातियों से जूझते जन जीवन को कथा का केंद्र बिंदु बनाया है |

सड़क नहीं बंदूक – 1950

इस कहानी में सड़क निर्माण के दौरान कबाईलो द्वारा डाली गई बाधाओं का चित्रण है | जब मजदूरों को पता चला कि उनके द्वारा बनाई गई सड़क द्वारा अंग्रेज उन लोगों को गुलाम बनाय रखने की योजना बना रही है तो अपने ठेकेदार से सड़क बनाने में इनकार कर देते हैं | उसी प्रकार पिकनिक, कुल्फी, बांसुरी बजती रही, फत्तू भूखा है, मिस बिलमोरिया, सूईया चलती रही आदि कहानियों में अंग्रेज द्वारा शोषित वर्ग एवं स्त्रियों की दुर्दशा, मजदूरों की समस्या आदि का चित्रण हुआ है | पिकनिक' कहानी में एक व्यक्ति का नवनीत के रूप में सौन्दर्य से प्रभावित होकत पार्टी में शामिल होना तथा अपमानित होने के बाद भी पार्टी स्व अलग न होना पुरुष का स्त्री के रूप सौन्दर्य की ओर आकर्षित होने का परिचायक है | घोड़ी की प्रसव वेदना के माध्यम से लेखक ने यह संकेत किया है की नवजीवन तो होकर ही रहेगा | कुलफी' कहानी मध्यम वर्गीय स्त्री के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है | अतिथ्य की भावना तो उसमे भरपूर है | बीमारी की हालत में वह बचपन को स्मरण कर परहेज की बखान नहीं करती तथा कुलफी खा लेती थी | बांसुरी बजती रही' में जीवन की सृजनात्मक और ध्वंसक शक्तियों के बीच में संघर्ष को दिखाया गया है | फत्तू भूखा है' का मुख्य पात्र एक मुसलमान तथा हिन्दू परिवार का नौकर है | घर के बालक एवं फत्तू के माध्यम से लेखक ने हिन्दू -मुश्लिम एकता को मजबूत बनाया है | मिस बिलमोरिया' जीवन और कला की समस्या को प्रस्तुत की गई है | इसी प्रकार सभी कहानियों में मध्यमवर्गीय जन जीवन के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत किया है |

नये धान से पहले -1950

यह सत्यार्थी का सर्वश्रेष्ठ कहानी संग्रह है | इसमे बंगाल में पड़े अकाल की भीषण स्थिति का चित्रण हुआ है | दो मुट्ठी चावल के लिए लम्बी लाइन में खड़े लोग अपने आप को कोसते हैं, अकाल को भी कोसते हैं,जो हटने का नाम नहीं ले रहा था | लेकिन बंगाल में पड़ी इस अकाल में सबसे ज्यादा उच्च वर्ग को दोषी ठहराया गया | इसी प्रकार एक घोडा, एक कोचवान, सतलज फिर बिखरा, पुल, एक भिक्षु की कहानी, अगला पड़ाव, अर्चना के पापाजी, रंग लुलिका और अकाल, क्षमा करो लोहे के लोगों, आब पुल

सामने था, सोना गाची, आदि कहानियों में अकाल में पड़े तमाम समस्याओं को लोगों के सामने लाने का सुन्दर प्रयास किया गया |

घूँघट में गोरी जले – 1991

यह लेखक का एक नवीन कहानी संग्रह है | इसमे उन्होंने अपनी गृहस्थी जीवन, जीवन भर का लेखा-जोखा एवं साहित्यिक परिवेश को प्रस्तुत किया है | बिसपान की बेला,बरगद बाबा, सोनपाही, कंचन माटी, मौसी पपीते वाली, गुड़िया और लोरी आदि कहानियां अपनी बेटी कविता की स्मृति में लिखी गयी | इन कहानियों में संबंधों के प्रति अपने विचारों को दर्शाते हुए पुत्री के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम को उदघाटित किया है | इन कहानियों में आत्मपीड़ा के तीव्र स्वर उभरकर सामने आया है |

रथ के पहिये -1950

यह उपन्यास लेखन की पहली कृति है | लेखक पूर्ण रूप से गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित दिखाई देते हैं | इस उपन्यास में समकालीन समय को उजागर करते हुए गोंड जाति की समस्याओं को रेखांकित किया गया है | उपन्यास के जरिये लेखक ने समय का पहिया कभी न रुकने का सन्देश दिया है | करंजिया जाति की अज्ञानता,गरीबी, बेरोजगारी एवं शिशन आदि समस्याओं के साथ-साथ नारी शिक्षा एवं नशाबंदी को बखूबी प्रस्तुत किया है | प्रकृति उनकी रचनाओं में हर जगह स्थान पाती है |

कठपुतली – 1951

स्वतंत्रता से पहले एवं विभाजन के पश्चात् के कुछ सालों की सामाजिक,सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं को उपन्यास में कथा का केंद्र बनाया है | इस उपन्यास का प्रमुख सन्देश इस देश में रहने वाला इंसान भी एक, समस्याएं भी एक हैं, यही समस्याएँ इंसान को एक दूसरे से अलग नहीं करता,यह उस इंसान की झांकी प्रस्तुत करता है जो अत्याचार और बर्बरता को नहीं छोड़ता, इस स्थिति में भी आशा का दामन

नहीं छोड़ता | उपन्यास की कथा का केंद्र लाहोर और दिल्ली में अंग्रेजों की कूट नीति एवं राजनीतिज्ञों द्वारा फैलाए गये भ्रम पर कटु व्यंग्य है |

दूधगाछ-1958

यह सत्यार्थी के उपन्यासों में प्रमुख उपन्यास माना जाता है | इसमे भारतीय संगीत को कथा का केंद्र बनाया गया है | उपन्यास की कथावस्तु केरल के वरकल गाँव एवं मुंबई के मीनाबाजार से संबंधित है | सत्यार्थी को पहले से ही सांगीतिक क्षेत्र में अत्यंत रूचि थी | उनके अनुसार "दुधगाछ में भारतीय संगीत को आधार बनाया गया है | बचपन से ही शास्त्रीय संगीत में मेरी रूचि रही है | हमारे गाँव के सरदारों के निवास स्थान पर जब भी कोई सिद्धहस्त गायक संगीत-गोष्ठी में गाने बैठता और मैं अपने को श्रोता मंडली में पाता हूँ तो संगीत की विशेष जानकारी के बिना ही रस आने लगता है |" [26] संगीत में गहरी रूचि का परिणाम था कि उन्होंने इसको केंद्र रखकर साहित्य की सृष्टि की |

ब्रह्मपुत्र -1992

यह एक पूर्णतया आंचलिक उपन्यास है | दिशांगमुख को केंद्र बनाकर इसकी कथा बुना गया है | वहाँ के लोग ब्रह्मपुत्र को बड़ी श्रद्धा की भावना से देखते हैं | इसमे ब्रह्मपुत्र को एक नायक के रूप में स्थापित किया गया है | उपन्यास के सारे पात्र अपने अपने कार्य क्षेत्र में व्यस्त हैं | इन्होने पात्रों के चित्रण के साथ-साथ ब्रह्मपुत्र का भी बखूबी चित्रण किया है | दिशांगमुख और माझुली के बीच में बसे निवासियों का यथार्थ अंकन हुआ है | दिशांगमुख के हर एक चरित्र अपने आप में विशिष्ट है, इसी के साथ उन्होंने जन विश्वासों को प्रस्तुत करने का कार्य किया | चैत्र मास में वहाँ के निवासी बड़ी श्रद्धा के साथ ब्रह्मपुत्र में स्नान करने जाते थे इसमें उनकी मान्यता थी कि इससे उनके कष्टों का निवारण होता है | इसके साथ यह कृति राजनैतिक स्तर पर भी पूर्णतया उस क्षेत्र की यथार्थ स्थिति का चित्रण करता है | दिशांगमुख की जनता में

[26] देवेन्द्र सत्यार्थी - दूधगाछ-1958- पृ.9

फिरंगियों के प्रति जो धारणाएं थी उसका बखूबी चित्रण हुआ है | दिशांगमुख में राजनैतिक चेतना के विकसित होने की सम्पूर्ण अवस्था का सुन्दर चित्रण इसके अंतर्गत हुआ है |

कथा कहो उर्वशी -1961

यह मूल रूप से सांस्कृतिक उपन्यास है | कथा का मुख्य केंद्र उड़ीसा के धोली गांवों को बनाया है | इसमे मूर्तिकार की संघर्षो को चित्रित किया गया है | लेखक ने निराशा व्यक्त की है कि किस प्रकार से आज का समाज कलाओं से विमुख होता जा रहा है, जिस कला, संस्कृति से हम विश्व में अपनी पहचान बना बैठें हैं, हम लोग उसे ही नजर अंदाज कर लापरवाही बरतते जा रहे हैं|हम लोगों के मन में उसके प्रति कोई विशेष लगाव नहीं है | इससे एक कलाकार के मन में ठेस लगता है और आत्म हत्या कर लेता है | ऐसी अनेक स्थितियों का प्रदर्शित करते हुए लेखक ने एक कलाकार मन को उद्घाटित करने का सफल प्रयास किया है |

तेरी कसम सतलुज- 1989

इसमें सतलुज, संघोल और मोहनजोदड़ो को उपन्यास का केंद्र बिंदु बनाया गया है | इसमें अनेक अनुभवों को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है | इसके अंतर्गत वर्तमान आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों एवं संकटों का चित्रण किया गया है | लेखक ने अपनी जीवन की अनेक घटनाओं का समावेश इस रचना में की है | इसमे विशेषकर आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है ,इसलिए ऐसा महसूस होता है कि यह उनके जीवन दर्शन से जुडी उपन्यास है |

विदा दीप दान – 1992

यह लेखक का नवीनतम उपन्यास है | लेखक ने इस उपन्यास में निम्न एवं मध्यमवर्ग की आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण सन्मुख रखा है | निम्न वर्ग का व्यक्ति अपने परिवार कोगाँव में छोड़कर शहर चला

आता है | गाँव की याद सीने में लगाये रहता है, तथा रात-रात भर जगा करता है | वह अपने परिवार से मिलने गाँव तो चला जाना चाहता है,परन्तु इस डर से कहीं वह चला गया और उसकी जगह कोई दूसरा व्यक्ति रख लिया गया, वह इसलिए नहीं जा पाता | मध्यम वर्गीय में आराम से बैठकर खाने तथा किसी को नौकरी सेतु सिफारिस न किये जाने की झूठी शान भी लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है | इसमें निम्न वर्ग तथा मध्यमवर्गीय जीवन की आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है | एक गाँव की यथार्थ स्थिति का चित्रण इसमें है जो उनके बहुत करीब से हुए अध्ययन का लेखा जोखा है | संक्षिप्त रूप में यही कहा जा सकता है कि यह उपन्यास लेखक की सचेत सामाजिक चेतना का परिचय देता है |

सत्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन पक्ष, उनके लक्ष्य, लोक यात्रायों के समर्पण का भाव पूर्ण रूप से प्राधान्य है | यह उनके जीवन के सार पक्ष के साथ-साथ भारतीय संस्कृति व परंपरा तथा भारत के ग्रामवासी चेतना के भी सार भाव है | अत: सम्पूर्ण जीवन समर्पण के अतिरिक्त सत्यार्थी द्वारा अर्जित सृजन कौशल भी है | सत्यार्थी का व्यक्तित्व साहित्य तक ही सीमित नहीं है, उनके जीवन में उनका दार्शनिक जीवन का भी अहम भूमिका है | लोक कल्याण के लिए जीवन समर्पण उनके दार्शनिकता का एक पक्ष भी है तथा वे एक पूर्ण दार्शनिक व्यक्तित्व के धनी भी थे | तत्कालीन परिस्थितियों में जीवन के दो पक्ष राग-विराग, धनि -गरीव आदि भाव ने उन्हें बैराग्य भाव उत्पन्न करा दिया था | संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि सत्यार्थी के व्यक्तित्व के अनेक पक्षों का संघर्ष वस्तुतः मानव मात्र के एक आदर्श एवं प्रेरणा का श्रोत हैं |

3.2.लील बहादुर क्षेत्री समय, समाज एवं रचनाधर्मिता

लील बहादुर क्षेत्री का जन्म 1 मार्च 1933 में असम की राजधानी गुहाटी में हुआ था | बाल्यकाल के चार-पांच साल गुवाहाटी में व्यतीत हुआ था और फिर वह कुछ समय के लिए वे शिलोंग चले गए थे | नेपाली साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है | इनके पिता का नाम प्रेम बहादुर क्षेत्री था | वे पुलिस सब इंस्पेक्टर थे उनकी माता को अक्षर ज्ञान नहीं था फिर भी रामायण, महाभारत, गीता, देवी भागवत आदि ग्रन्थ पढ़ लेती थी | उनके परिवार में चार बहन और एक बेटा था | सन् 1963 धनमाया देवी से उनका ब्याह हुआ था | विवाह के बहुत समय पश्चात धन माया देवी से संतान प्राप्त न होने की स्थिति में सन् 1973 में लावण्या क्षेत्री के साथ उनका दूसरा विवाह हुआ था | दूसरी पत्नी से दो बेटे एवं एक बेटी संतान में उन्हें प्राप्त हुई | उनके परिवार में मूल रूप से छ: लोग रहते थे | मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म होने के कारण आर्थिक अवस्था उनकी मजबूत नहीं थी अक्सर उनका जीवन अभाव में ही बीतता था | उनकी पत्नी धन माया एक स्कूल की अध्यापिका थी और वे स्वयं एक कॉलेज में प्राध्यापक का कार्य करते थे परन्तु इसके बावजूद भी उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी |

बाल्यावस्था से ही उनका जीवन शिलोंग में व्यतीत हुआ था इसलिए शिक्षा-दीक्षा भी उनकी वहीँ से आरम्भ हुई थी| बंगाली भाषा के माध्यम से उन्होंने शिक्षा का प्रारंभ किया था ,उस समय की वैश्विक परिदृश्य में द्वितीय महायुद्ध चल रहा था कुछ समय के लिए उनकी शिक्षा बंद हो गयी थी | उसके बाद नेपाली स्कूल (गोरखा पाठशाला) में उनका दाखिला हुआ | माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात कृशेन स्कूल में आठ कक्षा तक पढ़कर शिलोंग गवर्नमेंट हाई स्कूल से प्रवेशिका की परीक्षा उत्तीर्ण किया गया | उन्होंने शिक्षा बहुत बिखड़े हुए अवस्था में ग्रहण किया था | उसके पश्चात गुहाटी के कटन कॉलेज से आई. ए और 1958 में उसी कॉलेज से बी.ए पास किया था | सन 1958 में गुहाटी विश्वविध्यालय से अर्थशास्त्र विषय में स्नाकोत्तर पास किया | सन् 1958 से 1967 तक उन्होंने आल इंडियारेडियो में काम किया | उसी

समय से आर्य विद्यापीठ में अध्ययन कार्य में वे संलग्न हुए | उन्होंने अस्थाई रूप में वहां पर विभागीय प्रमुख के रूप में प्राध्यापन कार्य किया | उन्होंने अपनी मास्टर डिग्री पूरी की और असम राज्य के मुख्यालय गुहाटी में अर्थशास्त्र पढ़ने लगे | हालाँकि उन्होंने असमिया, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओँ का अध्ययन किया था, उनकी रूचि हमेशा नेपाली, उनकी मातृभाषा में रहती थी | जिसपर उन्होंने स्वाध्याय महारत हासिल करने की चेष्टा की | वे स्वयं एक प्रवासी थे,उन्होंने असम में अन्य प्रवासी नेपाली लोगों की दुर्दशा को बहुत नजदीक से अनुभव किया | उन्होंने उनके दर्द को गहरे में महसूस किया और उनकी भावनाओं को,उनकी व्यथा को,उनके जीवन संघर्ष से वे बड़े व्यथित होते | वे भली भांति जानते थे कि नेपाली किस स्थिति में नेपाल से पलायन कर देश की अन्य क्षेत्रों में बसने को विवश हैं | जमीं से उखड़ने की पीड़ा को सहना आसान नहीं होता परन्तु उनके पास कोई अन्य चारा भी नहीं बचता है | कई ऐसे प्रतिकूल परिस्थितियां हैं जिसने नेपाली को अपनी भूमि से उखड़ जाने को विवश कर दिया |उसी नेपाली प्रवासी जाति को अपने लेखन का केंद्र मानकर उनकी व्यथा कथा को उन्होंने जुबान दी है |

उन्होंने नेपाली भाषा में लघु कथाओं और निबंधों से अपना लेखन कार्य का आरम्भ | उन्होंने बाद के दिनों में एक उपन्यास लिखने का फैसला किया | उनका पहला उपन्यास "बसाँइ" है जिसे नेपाली साहित्य में श्रेष्ठ उपन्यासों की गणना में उसका नाम भी अग्रगण्य है | 1957 में इस उपन्यास का प्रकाशन हुआ था| यह उपन्यास त्रिभुवन विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल है | तब से क्षेत्री जी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और नेपाली साहित्य में कई निबंध, लघु कथाएँ ,उपन्यास लिखते रहें ,और अपने लेखन के माध्यम से नेपाली साहित्य जगत को समृद्ध करने का प्रयास करते रहे |

क्षेत्री ने साहित्य क्षेत्र में पहला कदम 1949 में रखा था और अभी तक नेपाली साहित्य के प्रति सेवारत हैं | उन्होंने अपने जीवन का अधिक समय साहित्य को ही समर्पित किया | वह समर्पण भाव आज भी नेपाली साहित्य में पूर्ण रूप से झलकती है | उनका साहित्य लेखन में ‘शिवस्तुति’ कविता से हुआ था | शिवस्तुति सन 1949 में प्रकाशित हुआ था | उन्होंने अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है | इसी व्यपकता के

साथ रचनाशीलता से प्रभावित होकर अनेक सम्मानों से उन्हें सम्मानित किया गया | उनकी कृति शिवस्तुति (सन 1949), बसाँइ (सन 1957), असममा नेपाली भाषा र त्यसको साह्रो गार्हो (सन 1962), दोबाटो (सन 1967), अतृप्त (सन 1969), तीन दशक बीस अभिव्यक्ति (सन 1983), ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ (सन 1986) शुरू शुरुको (सन 1984)आदि प्रमुख कृतियाँ हैं | उनको ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार सम्मानित किया गया था | सन् 2016 में नेपाली भाषा-साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में उनके योगदान के लिए उन्हें "जगदम्बा श्री पुरस्कार" से विभूषित किये गए |सन् 1968 में भारत सरकार ने उनकी प्रखर और प्रबल साहित्य चेता के व्यक्तित्व को "पद्मश्री" सम्मान से अलंकृत किया |

रचनाधर्मिता

बसांइ- 1957

बसांइ उपन्यास बहुसंख्यक पाठकों को प्रिय है, उपन्यासों में एक उत्कृष्ट रचना भी | इसका प्रथम प्रकाशन 1957 में मदन पुरस्कार पुस्तकालय से हुआ था | इनको इस पुस्तक के लिए कई पुरस्कार से सम्मानित किया गया था | इस उपन्यास में तत्कालीन नेपाली समाज की जर्जरता, वर्गीय द्वन्द एवं आर्थिक विषमताओं के कारण आने वाली संकटों को प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत किया गया है | पूर्वीय नेपाली लोगों की बोलचाल की भाषा, उन लोगों की भेष-भूषा, एवं जन-जीवन की संघर्षों को इस उपन्यास में जीवंत चित्रण हुआ है | इसमे पुर्वीय नेपाल के किसानों के जीवन में आये हुए संकटों के कारण पलायन की मज़बूरी एवं अनेक परिस्थितियों का यथार्थ अंकन किया गया है | पहाड़ी जीवन का यथार्थ चित्रण के साथ-साथ पात्रों की विविध समस्या, विवशता, दुर्बलता और विपन्नता को दिखाने के क्रम मूलतः सामंती शोषण, सामाजिक संकीर्णता के बीच जकड़े दलित एवं शोषित मानव की सामाजिक बहिष्कार तथा निष्कासन मार्मिक चित्रण हुआ है |

असममा नेपाली भाषाको साहों गाह्रो-1962

असममा नेपाली भाषा को सार्हो- गार्हो निबंध में भाषा एकीकरण के संदर्भों को लेकर लिखा गया है | असम में बसे नेपाली जाति अनेक जगहों से आने के कारण बोली जाने वाली भाषा के अनेक रूपों को दिखाया गया है | इसमे नेपाल की नेपाली भाषा, मणिपुर की नेपाली भाषा, पश्चिमेली नेपाली भाषा, भारत, भूटान और म्यानमार के सीमा में प्रयुक्त होने वाली नेपाली भाषा आदि का उल्लेख मिलता है | अनेक जगहों की बोली में पड़ने वाली प्रादेशिक भाषा के प्रभाव को भी स्पष्ट किया गया है | असम प्रान्त में बसे हुए नेपाली जाति की नेपाली भाषा के भी विभिन्न रूपों को दर्शाया गया है | इससे यह पता चलता है कि नेपाली भाषा के अंदर भी विविधता है जिसमें मानकीकरण की अनिवार्यता पर बल देते हैं |

क्षेत्री जी ने अनेक विधाओं में अपनी रचनाशीलता के प्रखर वेग को दिखाया है | वे एक सामान्य परिवार के रहने वाले व्यक्ति थे | उन्होंने प्राय: मध्यमवर्गीय परिवार में होने वाली अनेक समस्याओं को अपने कृतियों का विषय बनाया है | समाज में कुंठित, सामंती शोषण, आर्थिक दुर्बलता आदि विषयों को यथार्थ के धरातल में देखने का प्रयास किया | इनके लेखनी से प्रभावित होकर अनेक पुरस्कारों से भी उन्हें नवाजा गया | इन्होंने हमेशा महाजन, पूंजीपतियों, सामंती शोषक वर्ग का विरोध किया है | वे समाज में समरसता के अभिलाषी थे | इसी प्रकार प्राकृतिक आपदाओं विभीषिका और उनके वावजूद मनुष्य की जिजीविषा के बीच होने वाला संघर्ष को लेखक ने अत्यंत कुशलता के साथ अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है | इस विशद पृष्ठभूमि पर कथा प्रवाह जब शुरू होती है तो स्वतंत्रता आन्दोलन में इस क्षेत्र के अवदान का गरिमापूर्ण आख्यान निकल आता है | उनकी रचनाओं में नेपाली समाज के पिछड़ेपन और उनके जीवन संघर्ष सदैव उपस्थित हैं | उस पिछड़ेपन के प्रति उनमें आक्रोश है वे अपने बल पर उसमें परिवर्तन के आकांक्षी हैं |

अतृप्त-1969

यह क्षेत्री की दूसरी उपन्यास कृति है | अतृप्त उपन्यास फ्रायड, एडलर आदि प्रख्यात मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों से प्रभावित हैं | मानव जीवन की मानसिक स्थिति और उसके यथार्थ को प्रस्तुत करने का प्रयास

हुआ है | यह एक व्यक्तिवादी उपन्यास हैं जिसमें मानव मन की ग्रन्थियों को खोलने की चेष्टा हुई है | क्षेत्री ने इस कृति के माध्यम से यह कहने का प्रयास किया है कि मानव मन में पलने वाली काम वासना की अतृप्त भावना ही किसी को बलात्कारी और गलत राह की ओर ले जाने को मजबूर करता है | इसी काम वासना की भावना को सीमित न करने की स्थिति में समाज में असामाजिक तत्व सर उठाते हैं |

तीन दशक बीस अभिव्यक्ति – 1983

तीन दशक बीस अभिव्यक्ति एक कथा संग्रह है | इसमे प्राय: कथाओं में मध्यमवर्गीय समाज में रहने वाले लोगों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का चित्रण मिलता है | इसमे लगभग तीन दशक में आने वाली सामाजिक परिवर्तन तथा उसके विकास क्रम को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है | क्षेत्री ने इस संग्रह में अपने भोगे हुए अनुभवों को भी सम्मिलित किया है | कुछ स्थानों में उनसे जुड़ी घटनाओं को कथा का रूप देने का कार्य भी हुआ है | इस कृति पर उनके व्यक्तिगत जीवन का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ- 1986

लीलबहादुर छेत्री का जन्म 1923 में पूर्वोत्तर भारत के गुवाहाटी में हुआ था | लीलबहादुर छेत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' नेपाली साहित्य की आधुनिककाल की द्वितीय चरण की रचनाकृति है | इसे बाईस खण्डों में विभक्त किया गया है | इस में असमिया लोगों के यथार्थ जीवन का चित्रण है | उपन्यास की औपन्यासिक तत्वों के साथ ऐतिहासिक तत्वों को भी उजागर किया गया है | कृति में चारित्रिक दृष्टि से वर्ग प्रधान और व्यक्ति प्रधान दोनों प्रक्रार के पात्र पाये जाते हैं | उपन्यास के शीर्षक से ही आंचलिकता के संकेत मिल जाते है | इस प्रकार लीलबाहदूर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' में तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक ढंग से अंचल के असल स्वरूप को दिखाया गया है | उपन्यासकार लीलबहादुर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ अंचल विशेष पर केन्द्रित आंचलिक कृति है | ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ असम राज्य के आस-पास आनेवाली

नेपाली जाति को लेकर लिखा गया है | उपन्यास में उपन्यासकार ने असम राज्य की भौगोलिक एवं प्राकृतिक वर्णन करते हुए असमवासियों के लिए ब्रह्मपुत्र की महत्ता का चित्रण किया है वह रक्षक की भूमिका निभाता है तो वही ब्रह्मपुत्र भक्षक की भूमिका में भी उतर आता है | ब्रह्मपुत्र को केंद्र में रखकर प्रकृति का रौद्र एवं मनोहारी दोनों ही स्थितियों का सूक्ष्म अंकन हुआ है | लेखक द्वारा असम में सदियों से रहनेवाले नेपाली जाति की जातीय परम्परा, रीति -रिवाज, संस्कार, संस्कृति आदि का बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रण हुआ है | उसी प्रकार संस्कृति के प्रति उनकी श्रद्धा,सद्भावना और पारस्परिक सहयोग दिखाते हुए असमिया नेपालियों की सहन-शील प्रवृत्ति, धार्मिक सांस्कृतिक समन्वयवादी विचार व दृष्टिकोण, उदार मनोभावों को दर्शाने में छेत्री सक्षम हुए हैं | इस उपन्यास का मुख्य पात्र है 'गुमाने 'उसके माध्यम से असम राज्य में नेपाली जातियों की जीवन संघर्ष और उनकी समस्याओं को मूर्त रूप प्रदान किया गया है |

ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 आंचलिक जीवन में बदलता सामाजिक परिवेश

ब्रह्मपुत्र

भारत देश अनेकों अंचल के योग से बना है ,इन अंचलों का अपना वैशिष्ट्य है | आंचलिक जीवन का आधार किसी स्थान विशेष अथवा भू-भाग से जुड़ा होता है |यह प्राकृतिक एवं भौगोलिक दृष्टि से पृथक होता है | मानव जीवन को उसके आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक,राजनैतिक पहलुओं के मध्य समग्रता में चित्रित किया जाता है | सामाजिक जीवन के अंतर्गत समाज में प्रचलित विचार पद्धति, विभिन्न जातियों, उनकी संस्कृति ,उनके जीवन संघर्ष ,उनकी मर्यादाएं एवं उनकी मान्यताओं का रेखांकन होता है | इसके साथ-साथ सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का चित्रण भी रहता है | रचना के भीतर उल्लेखित घटनाएँ काल्पनिक न होकर यथार्थ होती हैं | उपन्यास के पात्र- अपने यथार्थ जीवन के साथ हमेशा परिश्रम एवं संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं ,वे अपने जीवन को सफल बनाने का निरंतर प्रयास करते मिल जाते हैं | यथार्थ जीवन का चित्रण लेखक का लक्ष्य होता है | लेखक प्राय: अंचल जीवन की सम्पूर्ण सकारत्मक पहलुओं के साथ उसके नकारत्मक पक्षों को भी उद्घाटित करता चलता है जिसमें उस नकारत्मक पहलुओं को बदलने की दिशा में भी उसका प्रयास बना रहता है | एक तरह से कहा जाये तो लेखक को समाज का मीडिया मान सकते हैं. वह समाज में घटित घटनाओं को एक साथ समग्रता में प्रस्तुत करता है |

'ब्रह्मपुत्र' उपन्यास में सत्यार्थी जी का आंचलिकता के प्रति वैचारिक निष्ठा और लोकजीवन से अनुराग ने इसे एक अनूठी साहित्यिक कृति बना दिया है | उपन्यास की कथावस्तु का केंद्र ब्रह्मपुत्र का नदी द्वीप माजुली तथा माजुली भू -भाग है |ब्रह्मपुत्र दोनों भू भागों के मध्य प्रवाहित है और उपन्यास के चरित्रों की तरह सशक्त भूमिका निभाता है | इस उपन्यास की कहानी के केंद्र में माजुली गाँव में निवास करने वाले दो

नवयुवक केंद्र में हैं,जिसमें देवकांत और अतुल हैं | देवकांत कोलकाता पढ़ने जाता है जहाँ वही एक क्रांतिकारी दल में शामिल होता है और फिरंगी सत्ता के खिलाफ हो रहे मोर्चे में अपने को सम्मिलित कर लेता है,उसके लिए देश की स्वाधीनता लक्ष्य होता है परन्तु वह यह समझता है कि गांधी की अहिंसक नीतियों के बलबूते पर देश की आज़ादी संभव नहीं हो सकती उसके लिए दोनों दलों का सम्मिलित प्रयास अत्यंत जरुरी है | कलकत्ते में साथियों के पुलिस हिरासत में चले जाने के बाद वह माझुली लौट आता है और वहीँ भारत माता की आज़ादी के निहित अपना क्रांति को जीवित रखता है | उसके क्रांतिकारी चेतना के बहाव में गाँव के कुछेक युवक भी उसके विचार और कार्यों में अपनी सहभागिता करते हैं ,अपने क्रांतिकारी छवि के कारण वह सामान्य जन के मध्य विशिष्ट हो जाता है और गुरुजी के नाम से लोकप्रिय होता है | आरती एक स्त्री पात्र की भूमिका में उपन्यास में मौजूद है जो अपने स्तर पर देवकांत की हर संभव मदद करी है जिसके परिणाम स्वरूप उसके पिता और उसे जेल की हवा खानी पड़ती है पर उसे और उसके पिता को इसमें किसी तरह की शर्मिंदगी नहीं होती बल्कि वे भी भारत माता के कुछ काम आए इससे उनका मन संतुष्ट होता है और लाख कोशिश करने पर भी पिता पुत्री देवकांत का पता नहीं बताते,खीझ कर नारायण दारोगा उन्हें छोड़ देता है | आरती का देवकांत के प्रति गहरा प्रेम और समर्पण का भाव है जहाँ वह देवकांत के गुज़र जाने के बाद विक्षिप्तों जैसा ज़िन्दगी जीने को विवश हो जाती है | दूसरी और बहुत दबाव डालने पर भी अतुल कोलकाता जाने से इनकार कर जाता है,उसे गांधी की अहिंसक नीतियों पर भरोसा है इसलिए वह देवकांत की भारत माता को कोलकाता में न देखकर अपने गाँव में ही देखता है ,उसके लिए अपनी माता और भारत माता में किसी तरह का कोई भेद नहीं है | उपन्यास में सत्यार्थी ने ब्रह्मपुत्र के दिशांगमुख में स्थित अनेक गाँवों को अपना कथा क्षेत्र बनाया है|गाँव जातिगत आधार पर बंटे हुए हैं ,प्रत्येक गाँव जातियों के आधार पर टोले में बंटे हुए थे | जिसमें असमिया ,मीरी ,नेपाली ,मुसलमान यह चार जातियां सभी गाँव में थे | दिसांगमुख के अंतर्गत पांच बस्तियां थीं जिनमें आलीसींगा की मीरी बस्ती ,आलीसींगा की मुस्लमान बस्ती ,बलमा ,चितलिया और जेलगाँव | हर समुदाय की जीवन शैली में भेद हैं ,उनके पर्व त्यौहार से लेकर उनके घर की बनावट ,उनकी वेषभूषा,खान पान सबमें अंतर है | समृद्ध

असमिया के घर में पोखर होता ही था |लेखक ने उन गाँवों की प्रकृति तथा वहां के निवासियों के सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है | जहाँ सभी लोग समाज में अपने अपने तरीके से अपना जीवन यापन करते नज़र आते हैं | कई ऐसे समूह मिल जाएंगे जो नाव खेकर,मछली व्यापार करके अपना जीवन गुजारते दिखते हैं,जिनके लिए ब्रह्मपुत्र नदी वरदान सिद्ध होती हैं ,जो अपने कार्य व्यापारों में इतने पारंगत हैं कि नदी के स्वभाव से लेकर मछली कितने किस्म के होते हैं उससे भलीभांति परिचित हैं | कोई चाय बेचकर अपने जीवन का गुज़ारा कर रहा है |जिनके यहाँ काफी जमघट होती है, सामाजिक संदर्भों में जो भी परिवर्तन होता है उसके प्रसंग को लेकर काफी चर्चा -परिचर्चा इन चाय की दुकानों में देखने को मिलता है | कोई क्रन्तिकारी बनकर देश की सेवा कर रहा है,जिसके अन्दर देश के प्रति प्रेम और फिरंगी सत्ता के प्रति आक्रोश का भाव है ,जो अपने प्रभाव से कई युवाओं को प्रभावित करने में सफल होता है और एक तरह से नवीन चेतना से युक्त समाज के निर्माण में सफलता हासिल करता है |उपन्यास में सामाजिक और राजनैतिक चेतना कथा के साथ साथ विकसित होती चली जाती है | जहाँ आरम्भिक दौर में देवकांत की बात अतुल ,आरती समझ नहीं पाते हैं वही बाद के दिनों में वैसी चेतना अतुल के भीतर भी घर कर जाती है | वहीं ब्रह्मपुत्र के आस -पास बसने वाले नेपाली समाज हैं ,जो दूध दही के व्यापार को पूरी तरह अपने कब्जे में किये हुए हैं |मीरी जाति को लगता है असमिया और नेपाली मिलकर उन्हें असम से खदेड़ देना चाहते हैं इसलिए उनके मध्य आपसी विभेद की स्थिति उपन्यास में दिखाई पड़ती है | मीरी ,असमिया ,नेपाली सभी लोग ब्रह्मपुत्र नदी में आने वाली बाढ़ से अत्यंत दुखी हैं | जब भी बाढ़ का पानी बढ़ जाता है ,बसा बसाया घर उजड़ जाता है ,फिर से नए ढंग से उन्हें अपना बसेरा बसाना होता है | एक स्थान से उन्हें दुसरे स्थान की ओर जाना पड़ता है | समाज में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को भी बहुत अच्छी तरह से उपन्यास में उद्घाटित किया है | स्वाधीनता से पूर्व का जीवन संघर्ष और स्वतंत्रता के पश्चात् का जीवन दोनों को दिखाने का प्रयत्न हुआ है | समाज में स्त्री को चार दीवारी के अंदर बंद रखने की प्रथा यहाँ नहीं है बल्कि पुरुषों के बराबर कन्धों से कन्धा मिलाकर उनके जागरूक व्यक्तित्व को दिखाने का प्रयत्न हुआ है | आरती गोपी जैसे पात्र इसके उदाहरण हैं | आरती जहाँ देवकांत के प्रेम से बंधकर देश की स्वाधीनता में उससे संभव होने वाली

मदद पहुंचा रही है वहीँ अपने पिता के संग मछली पकड़ने ही नहीं बल्कि हाट बाज़ार में दुकाने फैलाकर बेचने में भी उसे किसी तरह की कोई हिचक नहीं होती है |जूनतारा असमिया समाज की घरेलु सामान्य स्त्री की भूमिका में होते हुए भी अपने पति अतुल को आवश्यकता अनुरूप मार्ग निर्देशन करते हुए सचेत स्त्री रूप में उसका चरित्र का गठन किया है | जीवन में सबसे बड़ा संघर्ष अर्थ का रहता है,यह स्थिति ठीक हो तो कई समस्याओं से निजात मिल जाता है,सामाजिक परिवेश भी काफी बदला हुआ रहता है,उपन्यास में जिन समाजों का चित्रण हुआ है वह आर्थिक रूप से बहुत गठाहुआ मालूम नहीं पड़ता | जीवन की छोटी मोटी आवशयकताओं के लिए भी संघर्षरत है |असम में चाय की खूब खेती होती है ,वहां से चाय अनेक जगहों पर भेजा जाता है |वही चाय नए पैक में पुनः असम आता है | सूखे होठों पर जवान फेरते हुए धनसिंह कहता है "कोलकत्ता से आता है डब्बा लिपटन का| यह समझो की लड़की ससुराल से दोबारा मायके में आई |"[27]

उपन्यास में असमिया और मीरी समुदाय का जातीय अस्मिता बोध समय -समय पर टकराता रहता है,नेपाली समुदाय अपने को इसमें बचाए रखने का प्रयास करता है परन्तु बिना प्रभावित हुए नहीं रहता है ,नेपाली इस क्षेत्र में बाहर से आकर रहना शुरू किए हैं और दूध घी के व्यापार में उसने एकाधिकार स्थापित किया हुआ है | इन अंचलों में निवास करने वालों में कई अंधविशवास प्रचलित हैं जिसके कारण कई समस्याएं स्वत: उनके जीवन का हिस्सा हो जाती हैं |ब्रह्मपुत्र उपन्यास में पारिवारिक संबंधों को भी बखूबी प्रस्तुत किया है | बीस बर्ष पहले से देखा हुआ नीलमणि का सपना उसके स्मृति में उथल-पुथल मचाने लगता है | सपने में नीलमणि ने उसकी माट्टी की नाव ब्रह्मपुत्र में चलते हुए देखा था | वह अपने बापू से कह रहा था कि वह माट्टी के नाव पर आकर बैठ जाए| सवेरे आँख खुलने पर पता चला कि वह तो बिस्तर पर लेटा हुआ है और बापू सात दिन के पोते को आशर्वाद दे रहे हैं | वह हमेशा अपना सपना बापू को सुनाता है | उसने बताया कि माट्टी का नाव ब्रह्मपुत्र में चलते हुए उसने देखा है तब बापू हँसते हुए कहता है "आज तो

[27] ब्रह्मपुत्र-सत्यार्थी देवेन्द्र-ज्ञान गंगा प्र.दिल्ली- 1992- पृ. 29

मेरा पोता सात दिन का हो गया है नीलमणि ! आब तो अवश्य चलेगी हमारी नाव,अवश्य चलेगी ब्रह्मपुत्र में हमारी नाव ! जिस घर में बेटे का जन्म होता है उसकी नाव तो कहीं नहीं रूकती |"[28]

उपन्यास में क्रांतिकारी देवकांत से अतुल कहता है "भारत माता वाली बात अपने पास ही रखे रहो, मैं तो किसी भारत माता को नहीं जानता ; मैं तो अपने माँ को ही जानता हूँ| माँ के दूध का मोल तो कभी नहीं चुकाया जा सकता |"[29] इस उद्धरण से लगता है परिवार एवं पारिवारिक मोल हमेशा मूल्यवान रहा है | जो अतुल जैसे पात्रों के माध्यम से उपन्यास में व्यक्त हुआ है परन्तु उसके लिए जन्म देने वाली माँ और दिशान्मुख धरती में कोई भेद नहीं है | वहीँ धर्मानंदी गंभीर मुद्रा में अपनी बेटी आरती से कहता है "तू मेरी बेटी नहीं आरती, तू मेरा बेटा है |" [30]जिसके माध्यम से उस सामाजिक परिवेश में स्त्री चरित्र के प्रति लोगों का दृष्टिकोण व्यक्त होता है | स्त्री और पुरुष में अंतर तो स्वाभाविक है परन्तु धर्मानंदी के लिए उनकी बेटी किसी लड़के से कम नहीं हैं | पुरे उपन्यास में जूनतारा,आरती का चरित्र बहुत ही बेबाक,सचेत स्त्री पात्रों के रूप में हुआ है,वे किसी भी बात को सहजता से मानने को तैयार नहीं है बल्कि समाज में होने वाले बदलाव के साथ वे भी सदैव सचेत दिखते हैं और उस परिवर्तन में अपनी सक्रीय भूमिका में नज़र आते हैं | भाषा की दृष्टि से अनेक भाषा-भाषी के लोग इन अंचलों में रहते हैं परन्तु सभी के मध्य संपर्क सूत्र का कार्य असमिया भाषा में होता है | वहां पर अतुल आधार काका से कहता है "देखो आधार काका अपने साधन को समझाओ | असमिया ,नेपाली और मीरी घरों में अपनी-अपनी भाषा ही क्यों न बोलते हो, जब वे आपस में मिलते हैं तो असमिया से ही काम चलाते है |"[31]इसमें साधन को इस बात पर ऐतराज होता है कि ऐसे समय में वे असमिया में ही क्यों मीरी में क्यों नहीं बात करते हैं ? एक तरह से यह भाषाई स्तर पर वैमनस्य की स्थिति है जहाँ हर भाषा के लोग अपनी भाषा से गहरे जुड़े होने के कारण असमिया के अत्यधिक प्रयोग से अपनी भाषा की स्थिति संकटमय जान रहे है |

---

[28] वही- पृ.46-47
[29] वही- पृ. 65
[30] वही- पृ. 87
[31] वही- पृ. 60

त्यौहार का उत्सव इस प्रदेश में सर्वत्र है |बिहू की चर्चा असम के संदर्भ में न हो तो उससे असम का परिचय अधुरा माना जायेगा | उसमें भी बोहाग बिहू का चित्रण लेखक ने बहुत विस्तार में किया है |मीरी जन में दूबर की पूजा महत्वपूर्ण माना है |इसी दूबर पूजा के अवसर पर नीलमणि का दस वर्षीय बेटा मीरी बस्ती घुस जाता है जहाँ उसे सजा के तौर पर सूअरबाड़ा में डाल दिया जाता है क्योंकि दूबर पूजा में किसी बाहर वाले व्यक्ति का प्रवेश वर्जित होता है, जहाँ सांप के काटने से उसकी मौत हो जाती है |जिसे सभी बहुत दुखी हो जाते हैं उस पर अंधविश्वास में किसी तरह के परिवर्तन की दिशा में नहीं सोचा जाता तभी राखाल चाचा सबको ललकारते हैं,सबको आंदोलित करते हैं जिसपर सबको सोचने के लिए विवश होना पड़ता है और एक तरह से मीरी जन दूबर पूजा को सबके लिए खोल देता है इस तरह अतुल के भाई मखना की मौत से जहाँ पूरा परिवार आहत होता है ,राखाल काका और गाँव के अन्य जन भी उस बच्चे की मौत से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता है |

शिक्षा के क्षेत्र में भी लोग आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं | भले ही लोग अपनी -अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं पर हमेशा शिक्षा के मामले में एक होकर कार्य करते हैं | जब सरकार से स्कूल खोलने में कोई मदद नहीं मिल रही थी तो चित्ताप्रसाद ने नीलमणि को सलाह देते हुए कहा था कि“जब तक सरकार को यहाँ स्कूल खोलने का ध्यान नहीं आता,क्यों न लोग मिलकर अपनी ओर से स्कूल खोल दें |” [32] सबके सामूहिक प्रयास से स्कूल खुल जाते हैं | उसी स्कूल में अतुल ने भी तीन साल तक शिक्षा ग्रहण किया था |

दिशांगमुख में निवास करने वाले विभिन्न जातीय समुदायों में आपसी मतभेद होते ही रहते थे,ब्रह्मपुत्र में आए बाढ़ के अवसर पर वे सभी एक हो जाते थे और उस स्थिति से निकलने का प्रयास करते थे | राखाल काका जैसे व्यक्ति सदैव इस प्रयास में दिखाई दिए कि समाज के समुदायों में एकता न हो तो शत्रु उसका नाजायज फ़ायदा उठा सकता है इसलिए अतुल और राखाल काका जातियों के मध्य फैलने वाले वैमनस्य से लोगों को मुक्त होने की सलाह देते हैं |इसका तात्पर्य यह नहीं है कि समाज में निवास करने वाले लोग

[32] वही- पृ. 60

आपसी प्रेम भाईचारे की भावना में नहीं बंधे थे |अतुल और देवकांत की दोस्ती से उपन्यास में यह स्पष्ट होता है ,नारायण दरोगा अतुल को अनेक प्रकार की लोभ देता हुआ क्रांतिकारी देवकांत के सम्बन्ध में पूछता है लेकिन वह किसी भी स्थिति में अपने दोस्त देवकांत के सम्बन्ध में मुंह नहीं खोलता है | दरोगा कहता है, "तुम्हारा तो बाबा भी गाँव बुढा था | फिर गाँव बुढा की पदवी तुम्हारे बापू को मिली | अब तुम्हारा बापू चाहता है कि यह पदवी तुम्हें मिल जाए | यह कुछ भी कठिन नहीं | तुम देवकांत का पता बता दो हम देवकांत को बिलकुल पता नहीं चलने देंगे कि उसका भेद तुमने ही बताया है |" [33] तब अतुल मजबूती के साथ कहता है "मुझे देवकांत का बिलकुल भी पता नहीं |" [34] उसने सारे लोभ को ताक पर रखकर अपने दोस्त के विषय में कुछ कहना उचित नहीं समझा | उपन्यास में दोनों की वैचारिकी में अंतर है परन्तु इसके वाबजूद भी अतुल समझता है, देवकांत जिस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है वह सामान्य कार्य नहीं है बस वह यह नहीं समझ पाता कि देवकांत के लिए भारत माता अपनी माता से बढ़कर कैसे हो गया है ? बहराल इसके बाद भी वह देवकांत की रक्षा करता है क्योंकि वह नारायण दरोगा जैसे आदमी की नियत को भली भांति जानता है | उपन्यास में देवकांत और आरती के प्रेम सम्बन्ध का चित्रण भी हुआ है जहाँ उच्च जाति का क्रांतिकारी देवकांत,जो देश की स्वाधीनता के लिए मर मिटने को तैयार है और जिसके प्रभाव में आकर उस अंचल विशेष में कई सकारात्मक परिवर्तन भी देखने को मिलता है |आरती स्वयं इस विषय में चिंता करती है कि मछुवारिन के संग उच्च कुल का देवकांत ब्याहने को तैयार होगा कि नहीं ? आरती की इस चिंता के भीतर निहित सामाजिक सत्य को भी उद्घाटित किया गया है कि समाज में बेमेल विवाह नहीं होते हैं ,जात और आर्थिक स्थिति किसी भी रिश्ते को जुड़ने के लिए बड़ा कारक सिद्ध होता है परन्तु कई दिनों से दिशान्मुख को छोड़कर गया हुआ देवकांत आरती से भेंट करने आता है, जो यह सिद्ध करता है कि पढ़ा लिखा देवकांत की दृष्टि में प्रेम महत्वपूर्ण है,उसके लिए छोटी बड़ी जाति का तनिक चिंता नहीं है | जबकि एक मन से आरती को सदैव लगा रहता है कि उसे हमेशा देवकांत का इंतजार करना पड़ेगा

[33] वही- पृ. 88

[34] वही.

| वह कभी उसका हो नहीं सकेगा इसलिए आह भरते हुए वह कहती भी है, "शायद भगवान ने यही लिख दिया हो आरती के माथे पर कि वह अपने निर्मोह की वाट जोहते-जोहते मर जाएगी |" [35] समाज में कुछ जगहों पर स्त्री पर अत्याचार होते हुए दिखाया हैं | जब शिकारी गाँव के थाने में आग लगती है और उस समय शक की सुई उसकी ओर जाता है | उसे पुलिस की कस्टडी में रखा जाता है जहाँ से वह फरार हो जाता है,नारायण दारोगा जैसे अंग्रेजी हुकूमत के चमचों को इससे खीझ होता है और क्रोध में चिल्लाते हुए कहता है "जादू जरुर देवकांत के पास गया होगा |" [36] इसी बहाने अंधे दिकपाल को खूब पिटा जाता है | जादू की बहन पठचली पर हाथ उठाने से भी को संकोच नहीं होता है | सताग मीरी की बेटी गोपी को थाने के अहाते बुलाकर जादू के बारे में पूछा जाता है क्योंकि गोपी जादू की प्रेमिका थी,उस पर जादू के प्रसंग में पूछते हुए उसे लात घुसें लगाए जाते हैं परन्तु वह चुप रहती है | पुलिस अचिंतराम गोपी के पास आकर पूछता है,"कहो शिकारी गाँव की राधा ! तुम्हारा वह कान्हा कन्हैया भागकर कहाँ गया है |" [37]अग्रेज़ी सत्ता के चमचागिरी करने वाले लोगों को जादू,उसके परिवार और राधा पर किसी तरह की रहम नहीं आती, वे हर संभव उनका शोषण करते हैं परन्तु वे चुप्पी तोड़ने से साफ़ मुकर जाते है | देवकांत और उसके प्रभाव में आये साथियों के परिणाम स्वरूप जिस नयी चेतना की लौ उनमें जगी थी उसे नारायण दारोगा जैसे विदेशी सत्ताधारी की चाटुकारिता करने वाले लोग तोड़ने में सफल नहीं हो पाते हैं | उनका अत्याचार केवल अपने स्वार्थ सिद्धि से प्रभावित है |उसके लिए उनके सामने स्त्री -पुरुष कोई भी आ जाए उस पर रहम करना उन्हें नहीं आता है |

नीलमणि का चरित्र नारायण दरोगा जैसे नहीं हैं परन्तु वह ब्रिटिश सत्ता को विदेशी और अत्याचारी मानते हुए भी उनके संरक्षण में प्राप्त होने वाली शक्ति से विमुख होना नहीं चाहते हैं | देवकांत जैसे ब्रिटिश सत्ता के विरोध में उठ खड़े होने वाले के चक्कर में अपने बेटे के भविष्य को बर्बाद होते नहीं देखना चाहते हैं | दो

[35] वही

[36] वही- पृ.201

[37] वही

पुरखों से नीलमणि का परिवार गाँव बूढ़ा के पदवी पर बैठ चुका है और नीलमणि अपने बाद अतुल को उसी पदवी पर देखना चाहते हैं इसलिए वे अंग्रजी सत्ता से ताल मेल बिठाए रखना चाहते हैं | अतुल जब देवकांत से अपने संबंध तोड़ने के बजाय उसकी क्रांतिकारी चेतना से युक्त बातों को उनके समक्ष रखता है तब नीलमणि अपने पुत्र से नाराज हो जाते हैं और यह नाराजगी इस हद तक बढ़ती है कि पिता अपने बेटे को घर से निकल जाने तक की धमकी दे देते हैं | "मेरे घर से निकल जाओ और अपना रास्ता नापो |" नीलमणि अपने पद का लोभ और उसकी गरिमा से मोह नहीं छोड़ पाता है | उपन्यास में देवकांत,अतुल ,आरती ,जूनतारा,जादू ,गोपी के साथ राखाल काका सशक्त किरदार नज़र आते हैं जो अंगेजी सरकार की अधीनता में नौकरी करके लौटे तो हैं परन्तु जब अपने गाँव में लौटकर देखते हैं ,अपने समाज की परिस्थितियों से परिचित होते हैं ,फिरंगी सत्ता के ठेकेदारों का अत्याचार अनाचार अपने समाज में पाते हैं ,अंग्रेजी हुकूमत का सही चेहरा उनके समक्ष खुलता है और फिर वह देश के लिए अपने को तैयार करते हैं ,चेतना के धरातल पर सबसे ज्यादा सचेत ,सजग और सक्रीय नज़र आते हैं | यहाँ तक की अंग्रेजी सत्ता से असहयोग की नीति का पालन करते हुए,सामाजिक ,राजनैतिक परिवर्तन को भारतीय हित में देखने के लिए अपना सरकारी पेंशन तक छोड़ देते हैं | वे मीरी जाति से हैं परन्तु समाज में नेपाली और असमिया जाति भी उनका बहुत सम्मान करते हैं | समाज में किसी तरह की आवश्यकता होने पर चेतना के प्रसार करने में वे बहुत आगे नज़र आते हैं |

अंग्रेजी सत्ता ब्रह्मपुत्र नदी में बहकर आने वाली लकड़ियों के लिए वहां निवास करने वाली जनता से टैक्स वसूल करती थी,जबकि स्थानीय लोगों को लगता था ब्रह्मपुत्र नदी अपने जल से विनाश लेकर आती है ,कभी कभी तहस नहस करती है और कभी कभी अपने साथ नदी में लकड़ियां बहाकर लाती है जिस बहाने वह यहाँ की जनता की सेवा करती है | नदी से मछलियां पकड़ने के लिए भी उन्हें भुगतान करना पड़ता था |नदी में स्वत: बहकर आने वाली चीज़ों के लिए भी सरकार जिस तरह कर वसूला करती थी जिसके कारण उनके मन में काफी आक्रोश भरा हुआ था, जिसका विरोध अतुल ,राखाल काका और नीरद जैसे पात्र करते हैं ,उन्हें जेल की सजा होती है परन्तु जब वे जेल से लौटते हैं तब सबके मध्य वे नायक हो जाते हैं |उनकी

वाहवाही होती है |नीरद उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र है जो लेखक की भूमिका में है और अपनी राजभक्ति ,राष्ट्रभक्ति अपनी लेखन के माध्यम से व्यक्त करने में विश्वास करते हैं परन्तु अपने आस पास जिस प्रकार से परिवर्तन हो रहा था उससे वह अपने को बचा नहीं पाता और खुलकर अंग्रेजी सत्ता के विरोध में मैदान में उतर आते हैं | उपन्यास में लिली अँगरेजी लड़की है जो यह समझ चुकी है कि तलवार के बल पर अँगरेज़ यहाँ ज्यादा दिन टिक नहीं सकते हैं ,वह एक डॉक्टर है, उसके लिए मानवता की सेवा महत्वपूर्ण होती है ,इसलिए उसने दिसांगमुख में ही एक अस्पताल खोलकर लोगों की सेवा करना आरम्भ कर दिया है | देश भर में गांधी का आन्दोलन अपना पैर फैला रहा है ,इधर गाँव में देवकांत के प्रभाव से कई अन्य युवाएं उसके पथ का अनुसरण करने को तैयार हो जाते हैं | रंजन जैसा शिकारी गाँव का गाँव बूढ़ा नारायण दारोगा के अत्याचार से मर जाता है परन्तु देवकांत से दगा करने का नहीं सोचता | चेतना के स्तर पर अब वे अपने गाँव ,समाज से इस कदर जुड़ चुके हैं कि धीरे धीरे वे अपनी सीमाओं को त्याग कर एक दुसरे की मदद करने को तैयार होते हैं |व्यक्ति नवीन ढंग से अपने परिवेश को जानने समझने के लिए विवश होता है | लोगों की आर्थिक दशा पहले से बहुत कमजोर थी,दिन भर मेहनत न करो तो शाम को चूल्हा जलना कठिन हो जाता था | ऐसे में धर्मानंदी जानता था कि नदी में किस स्थान पर मछलियाँ अधिक मिलती है | वह यह भी जानता था कि सुबह अथवा शाम के समय जाल में मछलियाँ ज्यादा फंसती है | वैसे तो जब भी वह जाल डालता था, कुछ न कुछ मिल ही जाता था | नाव रुकवाकर ब्रह्मपुत्र में जाल फेंकते हुए वह कहता था, "सावधान मछलियों! आराम से चली आओ, हमारी जाल के भीतर,हम सरकार को पैसे देते हैं, मुफ्त तो हमें कोई मछलियाँ पकड़ने नहीं देता |" [38] इससे साफ पता चलता है कि अंग्रेज भारतीयों का भरपूर आर्थिक शोषण किया करते थे| उपन्यास में शहरी जीवन का उल्लेख भी हुआ है | देवकांत काफी समय तक कोलकाता में रहा है | इसलिए वहां की वैचारिक स्थिति भिन्न है ,वहां का वातावरण दिशान्मुख के वातावरण से बिलकुल अलग है इसलिए वह अपने दोस्तों के मध्य उनका साझा किया करता है |आरती ब्रह्मपुत्र के किनारे बैठकर अपनी सहेली से कहती है,"देवकांत ने बताया था कि कोलकाता में हजारों गलियां है | मन ही मन वह उन

[38] वही- पृ. 117

गलिओं को गिनने लगी | उन हजारों गलियों में रहने वाले लोग कैसे होंगे ? वे अपने ही सुख-दुःख में खोये रहते होंगे | देवकांत ने एक बार मुझे कोलकत्ता दिखाने का वचन दिया था | मैं अवश्य कोलकाता देखने जाउंगी |कोलकत्ता देखकर यहाँ आ जाउंगी| फिर में यहाँ के लोगों को देवकांत से भी कहीं अच्छी-अच्छी कोलकाता की कहानियां सुनाया करुँगी | [39]ग्रामीण अंचल में रहने वाले सामान्य लोगों के लिए शहर का वर्णन बड़ा अनोखा सिद्ध होता है,इसलिए उनके मन में कोलकाता जैसे शहर को जानने की जिज्ञासा है |

दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी ने त्यागपत्र दे दिया था जिसके पश्चात लोगों को अनेक अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, वैसे भी लोग आर्थिक स्थिति से बहुत ही कमजोर थे फिर फिरंगी उनसे अनेक प्रकार का चंदा उठवा रहे थे | लोग रत्न के दुकान पर बैठकर चाय पीते हुए बातें कर रहे थे | इतने में एक व्यक्ति ने कहा,"मैं बस आज तक यह नहीं सोच सका, त्यागपत्र देकर उन्होंने भलाई की या बुराई |"[40] चाय बनाते हुए रत्न ने हंसकर कहा, "लाल कपड़ा देखकर सांड डरता है | उन्होंने फिरंगी को लाल कपड़ा दिखा दिया |" [41] उन सबके बीच बैठा एक व्यक्ति ने कहा,"फिरंगी सरकार तो वैसे ही चल रही है | टैक्स और बढ़ गये युद्ध के नाम पर | भाई, हम तो चंदा देते तंग आ गए |" [42]यहाँ फिरंगी सरकार का अत्याचार और शोषण है,भारतीय जन पहले से आर्थिक मार झेल रहे थे उस पर कर के बोझ से उन्हें लाद दिया था,लेकिन अब भारतीयों के मध्य चेतना आ गयी थी ,वे देश दुनिया की घटना पर चर्चा परिचर्चा कर रहे थे ,अपना उचित और अनुचित जान रहे थे |

उपन्यास में दिशांगमुख के मझुली में स्थित गाँवों की समग्रता का चित्रण हुआ है | स्वाधीनता से पूर्व एवं स्वाधीनता के पश्चात अनुकूल -प्रतिकूल परिस्थितिओं से जूझते हुए वे अपने जीवन में आगे बढ़ रहे हैं | समाज की उच्च,निम्न सभी जातियों में अब धीरे -धीरे अपने गाँव और समाज के प्रति चेतना जागी है | वे

---

[39] वही- पृ. 118
[40] वही- पृ. 251
[41] वही- पृ. 251
[42] वही- पृ. 251

अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं है बल्कि चाय और नाइ की दूकान उनके परिचर्चा के लिए उपयुक्त केंद्र बन गए हैं और देश दुनिया की घटनाओं पर उनकी तटस्थ दृष्टि लगी हुई है | देवकांत,अतुल ,राखाल काका जैसे लोग फिरंगी राज्य की प्रतिकूल परिस्थितियों का अपने स्तर पर विरोध कर रहे हैं | उपन्यास में देवकांत अपने देश की फिरंगी सत्ता के समर्थक सेनाओं से भिड़ते हुए मर जाता है , एक महान उद्देश्य की प्राप्ति के अभियान में उसका अंत हुआ है परन्तु कईयों के त्यागबल से प्राप्त होने वाली आज़ादी भारतीयों के जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन लेकर नहीं आ पाता है |

उपन्यास में लगभग दो दर्जन से अधिक पात्र हैं पर लेखक ने किसी का वर्णन करते हुए अतिरिक्त उत्साह का परिचय नहीं दिया है | ब्रह्मपुत्र के आस पास बसने वाले लोगों का जीवन ,संस्कृति और छोटी बड़ी घटनाएँ ही कहानी को विस्तार देती है | ब्रह्मपुत्र जीवन देता है तो जीवन विध्वंसक भी होता है इसके बावजूद भी सबके वह प्रिय होता है | सबके लिए वह श्रद्धा का पात्र है |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ

‘ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ’ उपन्यास में ब्रह्मपुत्र नदी एवं दिशांगमुख के मध्य रहने वाले लोगों का यथार्थ चित्रण हुआ है | इस पुरे उपन्यास में मानवीर का परिवार केंद्र में है ,मानवीर के परिवार में उसकी पत्नी और उसका गुमाने नाम का एक बेटा होता है | मानवीर का परिवार नेपाल में जीविका संबंधी समस्याओं से जूझते हुए असम आ जाते हैं |उस समय गुमाने तीन साल का होता है | तीन साल के गुमाने का तीस वर्ष तक का सफ़र क्या कैसा रहा एक तरह से कहानी उसी के इर्द-गीर्द चक्कर काटती है | दिशांगमुख में रहने वाले लोग ज्यादातर पशुपालन एवं कृषि क्षेत्र में कार्य करते थे | जो लोग साहूकार, महाजन के यहाँ रहते थे उनका किस प्रकार शोषण होता था इसे बहुत ही सुंदर ढंग से छेत्री जी ने प्रस्तुत किया है | उपन्यास में स्पष्ट तरीके से दो वर्ग दिखाई पड़ते हैं एक शोषक दूसरा शोषित | इस उपन्यास में पच्चीस तीस वर्षों में गुमाने के आस पास के जीवन में जो परिवर्तन आया है उसी का विश्लेषण हुआ है | इस उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास माना गया है | यहाँ के स्थानीय लोग ब्रह्मपुत्र नदी में आने वाली दैवीय प्रकोप से भयभीत होकर जंगल और

दुसरे गाँव में जाने को मजबूर होते हैं | समाज में शिक्षा व्यवस्था उतनी व्यवस्थित नहीं थी जिससे सब कोई पढ़ सकें | कहीं-कहीं पर जातिगत भेद भाव भी देखने को मिलता है | एक तरफ समाज में नारी शिक्षा में प्रगति आई है दूसरी तरफ उसकी अवहेलना भी दिखाई पड़ती है |

जिस प्रकार मानवीर तथा उसके परिवार नेपाल से एक नयाँ जीवन यापन करने हेतु देश छोड़कर निकल आते है | रेल यात्रा करते हुए सैनिक के सहारे असम पहुँच जाते हैं | जिस सुखमय जीवन को खोजते हुए वे असम की ओर आये थे पर यहाँ का जीवन उसे और ज्यादा कष्टप्रद लगता है पर एक बार जब देश से निकल आये हैं तो लौटना उसे अब उचित नहीं लगता है | महाजन के साथ उसके घर पहुँचते हैं और गौशाला में अपना नयाँ जीवन शुरू करते हैं | मानवीर का पुत्र गुमाने जब छोटा ही था कि उसके माँ का देहावसान हो जाता है और अर्धांगिनी मौत के पश्चात शोकाकुल होकर कुछ साल बाद पिता का भी अंत हो जाता है | जीवन की कठिनाइयों ने कहीं उनका साथ नहीं छोड़ा था वे एक ऐसे महाजन के चंगुल में फंस गए थे जहाँ आना तो आसान था पर उसके प्रभाव से निकल भागना किसी के लिए भी आसान नहीं था |वह आर्थिक रूप से अपने ग्वालों का शोषण किया करता था ,बहला ,फुसला कर उन्हें इस तरह अपने पालतू नौकर बना लेते थे कि सामने वाला उसी का गुलाम बनकर रह जाता था |गुमाने अपने माता-पिता के प्रेम-वात्सल्य से छोटी उम्र में ही वंचित हो गए थे | सन् 1950-51 का समय रहा था जब मानवीर ने ब्रह्मपुत्र के किनारे अपना निवास्थान बनाया था | उसे असम आये हुए 8-9 साल हो गया था | जब वह असम आया था तो एक तरफ विश्वयुद्ध चल रहा था वहीं दूसरी तरफ भारत स्वाधीनता संग्राम अंतिम चरण में पहुँच गया था | कई गोर्खे जवान ब्रिटिश सेना में भर्ती होकर अपनी जान का बलिदान दे रहे थे | कुछ भारतीय नेपाली आजादी के लिए अपने जीवन अर्पण करते हुए देश भक्ति का परिचय दे रहे थे पर असम के आम नेपाली जन-जीवन अपने ही गति में गतिमान थे | वे लोग गौचारण, भैंसचारण में ज्यादातर अपने जीवन व्यतीत कर रहे थे | कुछ लोग जंगल काटकर खेती करने का स्थान बना रहे थे और कुछ लोग भोजन के चक्कर में पूंजीपतियों के शरण जा रहे थे |

मुख्यतया इस उपन्यास में गुमाने पात्र को केन्द्रित कर कथा कही गयी है और पाठक वर्ग भी इसी चरित्र के प्रति जिज्ञासु हैं | असम में निवास करने वाले लोगों में भी दो तरह की भावना देखने को मिलता है | कई बर्षों से असम को कर्मभूमि मानकर रहने वाले नेपालियों में स्थायित्व का भाव है और नेपाल से पलायन होकर जीविकोपार्जन की तलाश में आने वालों में स्थायित्व बोध नहीं बल्कि वे सोचते हैं अच्छा कमाकर अपने देश ही लौट जाएंगे | उदाहरणार्थ जीविकोपार्जन के लिए नेपाल से आये लोगों के मन में इस प्रकार की धारणा व्याप्त है, "यहाँ जमीं खरीदने के लिए क्यों न मिले , पर हम ने तो ख़रीदा नहीं , अंत में अपने देश में ही सुख मिलेगा, यहाँ जमीं खरीदने से क्या फ़ायदा |"1 [43] इस उद्धरण से पता चलता है, उन लोगों की अपने देश में लौटने की चाह है वे असम को केवल आर्थिक स्थिति मजबूत करने के प्रसंग में ही देख रहे हैं | केवल अपने जीवन यापन करने के लिए आये हैं | आखिर आदमी जैसा भी हो अपने जन्म स्थान में ही उसे सुख की अनुभूति करता है | काम की तलाश में वे नेपाल से आये थे और असम में यहाँ वहां फैलकर रह रहे थे | सरकार उन्हें नये लोग कहकर भगाने का षडयंत्र कर रही थी | जब सरकार के षड्यंत्र से परिचित होते हैं तो उन्हें भी इस बात का एहसास होता है कि आने वाले समय में किसी भी मुसीबत से लड़ने के लिए उनमें संगठन का बल होना बहुत जरुरी है | उपन्यास में एक पात्र इसी भाव बोध से भरकर कहता है,"कैसे भगायेंगे अगर हम संगठित होकर बैठे तो, किसकी इतनी क्षमता कि वो भगा सके ? हम ही न माने तो किसका क्या लगेगा |"[44] कई नेपाली ऐसे भी थे जिन्होंने वहां बसने की दृष्टि से जमीन खरीदकर बसना शुरू कर दिया था इसी प्रसंग में एक नेपाली कहता है,"उधर दरंग जिल्ले में जमीन खरीदकर मजबूती के साथ रह रहे हैं |"[45]

शिक्षा की आवश्कयता मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ बढ़ने लगता है | ऐसे में शिक्षा के महत्व को समझने वाले असम क्षेत्र के नेपालियों को कभी अपनी मातृभाषा का ज्ञान हासिल करने का सौभाग्य प्राप्त

---

[43] [43] ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ- लीलबहादुर क्षेत्री- 1986- पृ. 81

[44] ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ- लीलबहादुर क्षेत्री- 1986- पृ. 81

[45] वही

नहीं हुआ पर कई लोगों ने अपने आर्थिक बलबूते पर स्कूल खोले | गुमाने काम के चक्कर में गुहाटीचला गया था और वहां पर नेपाली मंदिर के पास उसका भेंट एक व्यक्ति से होता है | गुमाने मेट्रिक पास करके वहां चला गया था | वह व्यक्ति से बात करने के क्रम में वह व्यक्ति पूछता है बाबू पढाई कहाँ तक हुई है ?"[46] तव गुमाने कहता है "इसी साल मेट्रिक पास किये हैं | प्रथम स्थान में आया था |" [47] तव वह व्यक्ति फिर से कहता है "ओह ! पहले स्थान मेट्रिक पास होने से तो उपर हमारे स्कूल में ले जाना पड़ेगा चाचा ! इस बाबू को तो | बच्चे ऐसे ही बेकार हो रहे हैं इसलिए नेपाली स्कूल खोला था | एक बिहारी मास्टर था, वह भी चला गया | स्कूल ऐसे ही बेहाल पड़ा है |" [48] कुछ लोग फिर से स्कूल खोलने की योजना में रहते हैं | उस समय पढ़ा लिखा व्यक्ति गुमाने सामने आता है | कुछ गाँव के बड़े बुजुर्ग गुमाने की शैक्षिक स्थिति से परिचित है इसलिए उसे शिक्षक नियुक्त करना चाहते हैं पर वेतन का कुछ अता-पता नहीं होता है | इस स्थिति में एक चाचा गुमाने को पढ़ाने का प्रस्ताव रखते हैं तब उत्साहित गुमाने पूछता है,"सरकारी स्कूल है क्या ?" चाचा कहते हैं "काहे की सरकारी ! उही चंदा उठाकर देना पड़ेगा मास्टर का वेतन |" [49] पर कोई भी चंदा देकर पुन: स्कूल को खुलवाने की स्थिति में नहीं होता है |

उपन्यास में नारी शिक्षा को महत्व दिया गया है | इससे पूर्व नारी को केवल घर की चारदीवारी के भीतर काम करने वाली समझा जाता था पर कुछ लोगों के नेक विचार थे कि नारी को भी शिक्षित होना चाहिए | ऐसे में केशवकाकती अपने देश के सभी निवासी शिक्षित होता हुआ देखना चाहते हैं | नारी शिक्षा के प्रति उनकी भावना काफी अच्छी थी | उनका विचार ' **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता** ' वाली थी | वे चाहते थे कि जब तक समाज में नारी शिक्षित नहीं होंगी तब तक देश का विकास होना संभव नहीं | अगर हम नारी को सदा अवहेलना की दृष्टि से देखेंगे तो कभी ऊँच स्थान प्राप्त नहीं कर सकेंगे | ऐसे में अपने विचार प्रकट करते हुए वे कहते हैं "असम प्रान्त की नारियों को भी एक विदुषी होकर निकलना पड़ेगा |

---

[46] वही- पृ.78
[47] वही- पृ.78
[48] वही- पृ. 78
[49] वही

तभी हमारी जाति का विकास हो सकता है | नारी को पीछे रखकर कोई भी जाति आगे नहीं बढ़ सकती है |"[50] वहीँ पर मालती की माँ और भाई हरेन ऐसे विचार से सहमत नहीं होते दीखते हैं ,उसकी माँ सोचती है "एक स्त्री के लिए मेट्रिक पास करना पर्याप्त है | अब उसको काम धंदे की तरफ लगना पड़ेगा | जल्दी ही घर और वर मिला तो शादी कर देनी पड़ेगी |"[51] वास्तव में हरेन नारी स्वछंदता का कट्टर विरोधी दिखाई देता है पर इतने विरोध होने पर भी काकतीबाबू तेजपुर कॉलेज में बेटी को दाखिला करवा देते हैं |काकती का उद्देश्य बेटी की नौकरी की नहीं थी बल्कि नारी समाज शिक्षित होकर देश की उन्नति होगी, उनका यही उद्देश्य था | महात्मा गाँधी के प्रेरणा से उनमें यह सामाजिक भावना जागृत हुई थी | इसी वजह से वे समाज का कल्याण एवं उन्नति चाहते थे | केवल स्त्री शिक्षा पर ही नहीं पुरुष के प्रति भी सजग भावना है उनकी | जब गुमाने के माता-पिता पित्रलोक पधारने के पश्चात डायरी महाजन उसे नौकर के रूप में रखना चाहते थे पर काकती बाबु को यह मंजूर नहीं था उन्होंने गुमाने को अपने घर में स्थान दिया और मालती तथा गुमाने को साथ पढ़ाया | जब डायरी महाजन गुमाने को अपने नौकर रूप में रखना चाहते हैं तब काकती बाबू कहते हैं,"देखिए महाजन ! इस लड़के को काम के लिए ही रखने से नहीं होगा | पिता का जीवन तो दूसरे के नौकर बनने में चला गया पर अब इससे नौकर बनाने से नहीं होगा,यह लड़का होनहार है | अगर इसे पढ़ने का अवसर प्राप्त हो तो एक दिन बढ़ा आदमी बन सकता है | इसलिए इसको पढ़ाएंगे तो आप रखिये वरना मैं ले जाता हूँ| जब तक मेरे में क्षमता रहेगा तब तक पढ़ाउंगा |" [52] डायरी महाजन के चंगुल से गुमाने को निकालकर उसे एक शिक्षित व्यक्ति बनाने में काकती बाबू पूर्ण सहयोग करते हैं | गुमाने असम प्रान्त का न होकर भी उस स्थान को कर्मभूमि मानकर शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सजग होता हुआ दिखाई देता है वह इसलिए क्योंकि काकती बाबु ने उस जैसे को शिक्षित कर इंसान बनाया था इसलिए वहां शिक्षा के लिए कुछ करना वह अपना फर्ज समझता था | गुमाने कहता है "गाँव में एक पुस्तकालय और वाचनालय की

[50] वही- पृ. 102
[51] वही- पृ. 102
[52] वही- पृ.37

जरुरत है | गाँव के लोग जब तक साक्षर और शिक्षित नहीं होंगे तब तक गाँव का विकास नहीं होगा |" [53] शिक्षा के क्षेत्र में लोग बहुत सजग दिखाई देते हैं पर सभी लोगों को साक्षर एवं शिक्षित होने का नसीव प्राप्त नहीं होता है और जिससे अवसर प्राप्त हुआ वे लोग विकास के राह में बहुत आगे बढ़ गये थे |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास में समाज में दो वर्गों का चित्रण हुआ है उच्च एवं निम्न वर्ग | उसमे भी शोषक और शोषित | आज भी अपने आस पास फलने फूलने वाले समाज में यह वर्ग दिखाई देते हैं परन्तु अब शोषण का वह स्पष्ट रूप दिखाई नहीं देता | ग्रामीण परिवेश में महाजन, पूंजीपति कमजोर लोगों का शोषण किया करते हैं | यह केवल आज की स्थिति नहीं वर्ग संगर्ष सदिओं से चली आ रही है | यह दो वर्गों के मध्य संतुलन बनाने आये दिन किसान और मजदूर वर्ग आन्दोलन करते रहते हैं | मगर पूंजीपति अपनी चालाकी और कुटिलता के आगे इन लोगों को हर संभव दबाने की कोशिश करती है | शोषित वर्ग का जीवन अत्यंत दयनीय होता है | यह लोग समाज में केवल जीवन जीने को विवश हैं | उपन्यास में गुमाने के माता-पिता का देहावसान के पश्चात वह बड़ा असहाय हो जाता है | बाल्यावस्था में ही अपने माता पिता के वात्सल्य से वंचित होना इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ? उस समय महाजन अपने मन में कल्पना करते हैं और कहते हैं "गुमाने आखिर कहाँ जायेगा| मेरे यहाँ ही रहेगा | उसके भैंस और जो कुछ भी है अब मुझे ही संभालना है | वह भी ग्यारह-बारह के उम्र में एक जिम्मेवार योग्य हो गया है | नौकर तो मुझे चाहिये ही | एक गुना खाएगा दो गुना काम करेगा | बाद तक मेरे लिए एक तरफ से कार्य करने वाला जिम्मेवार व्यक्ति इश्वर ने मुझे प्रदान की है | मानवीर का देहावसान होकर यह अनाथ होना भी मेरा भाग्य चमकना है | एक के बिना ख़राब हुए वैसे दूसरा कहाँ सफल होगा |"[54] इस तरह के विचार से स्पष्ट होता है कि किसी के असहाय होने पर कुटील बुद्धि वाले व्यक्ति का नजर उसके कमज़ोर नस को पकड़ लेता है | ऐसे ही एक दिन उसके स्थिति को देखते हुए महाजन गुमाने को बुलाकर कहते हैं "अभी तुम अकले अपना कारोवार नहीं चला सकते, अभी तुम बच्चे ही हो | तुम भी मेरे बेटे समान हो | अब से मेरे यहाँ रहकर जितना हो सकेगा

[53] वही- पृ. 162

[54] वही- पृ.35

काम कर लो | तुम्हारे भैंस भी हमारे जमीं पर रह लेगा|" [55] महाजन हर संभव प्रयास कर रहा था गुमाने को अपने प्रभाव में लाने के लिए पक्ष | महाजन का दोगला चरित्र उपन्यास में उभर कर आया है जो जुबान से मीठी बात करने वाला महाजन भीतर से बहुत ही गहरे पैठे हुए था | कमज़ोर असहाय जन का शोषण करना उसके चरित्र का अहम् हिस्सा था | कई तो उसके चरित्र की उस सच्चाई को आसानी से पकड़ ही न पाए | गरीव दुखी का विकास वह कभी नहीं चाहते थे क्योंकि उन्हें लगता था गरीब की अगर स्थिति ठीक हो जाएगी तो उन्हें नौकर कहाँ से नसीब होगा?किसी का मालिक बने रहने के लिए बहुत जरुरी था कि कोई उसका जी हजुरी करने वाला नौकर हो | उनके लिए निम्न वर्ग का आदमी कितना भी जीवन में ऊंचाई पर पहुँच जाए वह उसे निम्न होने का औकात दिखाने से कभी नहीं हिचकते थे , इस उपन्यास में गुमाने के जीवन में जो भी सकारात्मक परिवर्तन आए उससे वह कभी प्रसन्न नहीं हुए बल्कि मन में सदैव उससे खुन्नस खाए रहते, गुमाने का अपमान या उसकी उन्नति में रूकावट के कोई अवसर महाजन अपने हाथ से जाने नहीं देते थे |

एक स्थान पर मानवीर पूंजीपतियों से विरक्त होकर कहता है,"पर मानव द्वारा निर्मित चिकित्सालय भी मनुष्य के लिए नहीं था | वह केवल धनी के लिए ही है | हम घनहीन लोग तो केवल इश्वर की भक्ति न करें तो क्या करें बाबू |" [56] मानवीर की पत्नी सही वक्त पर इलाज न मिलने से गुज़र गयी थी जिसका गम मानवीर को भी निगल गया | उसे अपनी गरीबी से अपना सबसे बड़ा शत्रु नज़र आने लगा |

इस उपन्यास में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा गया है परन्तु कई प्रसंग ऐसे भी हैं जहाँ नारी की भावनाओं का अपमान और अवहेलना हुई है | मालती और गुमाने इस कथा के केंद्र में हैं | गुमाने और मालती के विषय में डायरी महाजन पुरे मोहल्ले भर में अफवाह फैला देते हैं |डायरी महाजन गुमाने के प्रति कटु भाव रखता है जिसके माता पिता उसके यहाँ नौकर थे उसके बेटे को अपना नौकर न बना पाने का भड़ास उसके में भरा होता है | जिससे मालती की माँ और उसके विरोध में उठ खड़े होते हैं | मालती एक असम प्रान्त के

[55] वही- पृ.36

[56] वही- पृ.31

संपन्न परिवार की पुत्री होती है और गुमाने एक नौकर का बेटा | गुमाने जैसे व्यक्ति के साथ उसका सम्बन्ध जुड़ना उन लोगों के लिए अपमानित होने वाली बात होती है | श्रीमती काकती मालती के उपर भड़कती है जब उनकी जानकारी में आती है कि गुमाने और मालती नदी किनारे घूम रहे हैं,"तुम को वही नौकर मिला घुमने के लिए ? ऐसे में निम्न वर्ग के साथ मत घुमाकर, वह हमारे जाति का भी नहीं और बेसहारा, आवारा के साथ चलना तुम्हे शर्म नहीं लगती ?" [57] उसके बाद वह गुमाने के ऊपर उबल पड़ी,"तुम नौकर होकर मेरी बेटी मालती के साथ बराबरी करते हो ? बेसहारा को सहारा दिया तो मालिक बनते हो ? अपना औकात मत भूलो | यहाँ घर में काम बेहाल पड़ा हुआ है और वह मालिक बनकर घूम रहा है|" [58]दोनों एक दुसरे से प्रेम में बंधे हैं परन्तु उनके प्रेम संबंध को परिवार और समाज स्वीकारने को कतई तैयार नहीं होता है | गुमाने की कोई सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं है इसलिए मालती की माँ और उसका भाई किसी भी स्थिति में इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं होते हैं | अपने को मालती के योग्य बनाने के लिए वह असमिया समाज से निकल जाता है | यहाँ वहां की ठोकर खाता हुआ वह अंत में सेना में भर्ती हो जाता है,परन्तु अपने निर्दिष्ट वक्त पर गुमाने मालती तक नहीं पहुँच पाता है और मालती का विवाह डॉ. अरुण वैश्य से कर दिया जाता है | लाख कोशिश करने पर भी अब मालती के समक्ष विवाह के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं होता,गुमाने की कोई जानकारी उसके पास नहीं होती है | अपने पिता को दिए वादे के मुताबिक वह मूर्तिवत अन्य पुरुष से ब्याह कर ससुराल चली जाती है | यहाँ समाज के तमाम बन्धनों के कारण विवाह होना असंभव होता है | मालती अपने पिता को गुमाने का खत दिखाकर उसे अपने लिए इन्साफ मांगती है और पिता किसी हद तक कुछ समय देने को तैयार होते हैं हैं,पत्रपढ़कर पिता कहते हैं,"हाँ..... पत्र देहरादून से लिखा गया है | नेपाली लड़का है,हो गया होगा सैनिक में भर्ती पर वो आकर भी क्या लाभ होगा ? तुम्हारा विवाह उसके साथ संभव नहीं दिखाई देता है मुझे | जाति और समाज कुछ भी मेल नहीं रखता | तुम्हारे भाई, माँ और सारा

[57] वही- पृ.41

[58] वही- पृ.42

समाज इसके विरुद्ध में खड़े हो जाएंगे |" [59] सदियों से चली आ रही जातिगत भेदभाव इस उपन्यास में पूरी तरह परिलक्षित होता है | उपन्यासकार ने असमिया समाज में मौजूद वर्ण और जाति के महत्त्व के साथ सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति लोभ को बहुत ही बारीकी से दर्शाने का प्रयत्न किया है,जहाँ उनके लिए अपने बच्चों का सुख तक की तिलांजलि देते हुए उनके परिवार को कोई तकलीफ नहीं होती है | मालती और गुमाने के प्रेम संबंधों के प्रति काकती बाबु का दृष्टिकोण सिद्ध करता है कि इन क्षेत्रों में स्त्री के विचार और भावना का मान होता है ,अपवाद हर जगह देखने को मिलता है पर पिता का जिस तरह संबल बेटी को मिल रहा है वह वाकई बहुत ही प्रशंसनीय है | वहाँ पर काकती बाबू कहते हैं "हम अपने को बड़े और सब को हेय समझते हैं | क्या गुमाने मानव नहीं है ? इस धरातल की एक जाति होती है 'मिट्टी' चाहे वह किसी भी देश का क्यों न हो| मानव एक ही जाती का होता है, वह मनुष्य चाहे कोई भी भाषा बोले | धरती का उपभोग वही करता है जो पौरखी होता है | गुमाने का परिवार नयाँ जीवन शुरू करने के लिए आकर कुछ नहीं बिगाड़ा है | उसने तो इस धरती को अपना लिया है | बस स्फूर्ति के अभाव हम ही लोग अपने देश के अंदर ही पराधीन हो रहे हैं, हम लोग किसी के सेवा के याचक हैं |"[60]

मालती की शादी एक पुरुषत्वहीन व्यक्ति से कर दिया जाता है | गुमाने अपने जीवन संघर्ष का मुकाबला करते हुए पुनः असम लौट आता है ,युद्ध में गया गुमाने बहुत विकृत होकर अपने घर गाँव लौटता है,जिसे देखकर मालती अपने को संभाल नहीं पाती है | अपने जीवन को त्रिशंकु की भांति झूलते पाकर है वह बहुत ही निराश होती है| कोई भी कामना उसके पूर्ण नहीं होती है,अंत में निराश होकर आत्म हत्या कर लेती है | बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में सामाजिक व्यवस्था धीरे-धीरे बदल रही थी और पुराने रीति-रिवाज को रूढ़ मानकर हटाया जा रहा था पर मालती के पक्ष में वही पुराने रीति-रिवाज रह जाते हैं | भारतीय नारियों को अभी भी अपने चुनाव के लड़के से ब्याहने के लिए अनेकानेक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है उन पर परिवार ,घर और समाज की इज्जत के साथ मर्यादाएं जुडी होती है,जिसके बोझ तले वह ऐसी दबी होती है

[59] वही- पृ. 107

[60] वही- पृ.73

कि अपना गला घोंटना ही उसके लिए सबसे आसान पर मुक्ति का रास्ता मालूम देता है | अपने बड़ों के सामने निर्भीक होकर अपनी पसंद को साझा भी नहीं कर सकती है | दूसरी जाति के साथ विवाह करना भी समाज आसानी से नहीं स्वीकारता,उस पर लड़के की आर्थिक स्थिति ठीक न हो तो स्थिति और भी पेचीदा हो जाती है | यही हाल मालती के साथ होता है | इसलिए मालती का विवाह उसी की जाति के डॉ. वरुण वैश्य के साथ हो जाता है | सामाजिक बन्धनों में बंधी स्त्री अपने जीवन का नाश कर बैठती है | उसका पूरा जीवन नारकीय हो जाता है कई ऐसे बेमेल जीवन में संतुलन बनाने की चेष्टा में जीवन गुज़ार लेती है और मालती जैसी लड़की टूट जाती है,समाज और परिवार की मर्यादा,पति के अधूरेपन और उस पर गुमाने का इस रूप में वापसी अपने भीतर के तूफ़ान को सँभालने की ताकत उसमें नहीं रहती है और अंत में अपने को समाप्त करती है | मालती की मौत असमिया समाज में व्याप्त जातिगत विसंगतियों का नंगा चिट्ठा खोलती है |

कहानी आगे विस्तार पाता है,डायरी महाजन अपनी बेटी उर्मी का विवाह गुमाने के साथ करने की साजिश करता है,जो दिमागी रूप से कुछ ठीक नहीं होती है | गुमाने के मन में मालती बैठी है,फिर गुमाने जिस थाली में खाता है उसी में छेद करना नहीं चाहता है |दूसरी ओर वह महाजन को पिता और उनकी बेटियों को बहन के रूप में देखता है | विवाह के प्रस्ताव को लेकर गुमाने महाजन की डायरी की नौकरी छोड़ने को विवश होता है | गुमाने नारायण यानि छोटे महाजन को बुलाकर डायरी का हिसाब-किताब देकर डायरी का काम छोड़ने की बात करता है | यह बात डायरी महाजन को पता चल जाता है और वह कहते हैं "बेसहारा को सहारा कहाँ हजम होती है ? जैसा भी हो बिन माँ बाप का बेटा समझकर जितनी दया दिखाने की कोशिश करे, उतने सर के उपर चढ़ जाता है |" कुछ देर मौन रहकर फिर कहते हैं,"डायरी के पैसा चोरी किया ऐसा कहकर थाने में कम्प्लेन कर देना और ले जाकर जेल खाने में डाल देना | उसके बाद क्या कर लेगा देखते हैं |"[61] डायरी महाजन की पैनी दृष्टि गुमाने के भीतर को जान चुका था इसलिए उस जैसे सीधे दामाद को पाकर तो वह अपने को धन्य समझ रहा था इसलिए वह अनेकों वास्ताएं देकर उसे अपने पक्ष में करने की चेष्टा

[61] वही- पृ.101

करता है ,उससे खूब लाड प्यार दिखाया जाता है जिसको देखकर गुमाने का मन भी बड़ा प्रसन्न होता है ,सीधा -साधा गुमाने डायरी महाजन की कुटिलता को कैसे समझ पाता ! वह यह समझ चुका था उनकी बेटी उर्मी के लिए गुमाने जैसा योग्य कोई हो नहीं सकता इसलिए वह उसे अपने दिए अहसानों को गिनागिना कर ऐसी स्थिति में ला देता है कि वह कुछ कह नहीं पाता है जबकि उनका बेटा नारायण भली भांति जानता है कि यह बेमेल रिश्ता होगा इसलिए गुमाने के ना कहने पर उसे कोई असर नहीं होता है जबकि अपनी असफलता जानकार डायरी महाजन गुमाने को फांसने की चेष्टा करता है परन्तु नारायण उनकी धांधली में साथ नहीं देता है |

समाज में जीवन रूपी रथ को चलाने के लिए दो पहियों की जरुरत पड़ती है | समाज और जीवन रूपी दो सारथी स्त्री और पुरुष हैं | समाज में इन दोनों का महत्व समान है, एक के अभाव में समाज विकलांग हो जाता है| सही ढंग से जीवन चलाने के लिए दोनों के मध्य सामंजस्य होना अत्यंत आवश्यक है | पौराणिक काल से ही स्त्री-पुरुष को समान माना गया है पर कुछ विचारकों की गलत सोच के परिणाम से समाज में विकृति पैदा हुई है | स्त्री-पुरुष कंधे से कंधा मिलाकर अपने कर्म क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं | स्त्री हमेशा पुरुष की प्रेरणा का श्रोत बनती आयी है | अगर समाज में पुरुष बल है तो स्त्री बुद्धि है और यह दोनों के एक हो जाने से समाज मजबूत बन जाता है | हमारे शास्त्रों में नारी को एक अर्धांगिनी के रूप में स्वीकारा गया है | जबकि उपन्यास में स्त्री से ज्यादा पुरुष को महत्व दिया गया है पर किसी नारी को चरित्र हीन भी नहीं है | सभी लोगों ने सामाजिक मर्यादा का पालन करते हुए एक उत्कृष्ट समाज बनाने का प्रयास किया है | समाज में नारी की सुरक्षा ही पुरुष की सुरक्षा है | बिना नारी की हम अच्छी समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं | इस उपन्यास में नारी को अल्पायु तक ही सीमित रखा गया है, कोई भी नारी पात्र की भूमिका शुरू से अंत तक नहीं दिखाया गया है |

'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास में असमिया जाति की स्थिति तो ठीक जान पड़ी परन्तु नेपाली समाज में अधिकतर लोग ग़रीबी की हालत में हैं | हर कोई इससे उभरकर ऊपर निकल आना चाहता है साथ ही

ज्यादातर परिवार संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है | स्वाधीनता से पहले जिस जीवन की कल्पना होती है, स्वाधीनता के बाद भी उस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होता है,मोहभंग की स्थिति देखने को मिलती है | उनके जीवन में किसी तरह का कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं दीखता है | शिक्षा के क्षेत्र में नेपाली जन अपनी मातृभाषा का अध्ययन करने के अधिकारी नहीं थे,नेपालियों को भी असमिय भाषा से ही शिक्षा हासिल करनी पड़ती थी | समाज में बिना भेद भाव के स्त्री-पुरुष दोनों को समान शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था दिखाई पड़ती है | हाँ कुछ एक छोटे विचार वाले लोग स्त्री शिक्षा में व्यवधान बनते हुए दिखाई पड़ते हैं | समाज में बड़ी जातियां ,धनाड्य लोग निम्न और विपन्न लोगों का अत्याचार करते दिखते हैं | शोषण की यह स्थिति केवल असमिया समाज में ही नहीं बल्कि प्रत्येक समाज में इस प्रवृत्ति को देख सकते हैं | पूंजीपति,संपन्न लोगों द्वारा निम्न जाति को कुछ न समझने की प्रवृति इस उपन्यास में है

4.2.आंचलिक राजनीति और राजनीति का आंचलिक जीवन में हस्तक्षेप

ब्रह्मपुत्र

राजनीति समाज का अनिवार्य अंग माना जाता है | समाज के निर्माण तथा वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति के उत्थान पतन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है | वैसे देखा जाये तो मानव जीवन के हर क्षेत्र में राजनीति व्याप्त है | ग्रामीण समाज से लेकर नगरीय समाज में एक में अनिवार्य रूप में इसकी व्याप्ति होती है | वास्तव में सामान्य व्यक्ति का राजनीतिक परिवेश और जीवन से कटकर रहना अत्यंत कठिन कार्य होता है उस पर एक लेखक के लिए तो यह और भी कठिन हो जाता है| एक सच्चा साहित्यकार जिस मिट्टी पर अपना जीवन यापन करता है, जिस समाज के भीतर रहता है और जिस समय के राजनीतिक परिवेश से उसके व्यक्तित्व का विकास होता है, उसी परिवेश का उसके साहित्य पर गहरा प्रभाव देखा जा सकता है | एक कुशल और सचेत रचनाकार भला राजनीतिक परिस्थितियों के प्रभाव से अपने को कैसे मुक्त रख सकता है ? देवेन्द्र सत्यार्थी अपने समय से निरंतर संवाद करते रहने वाले रचनाकार हैं इसलिए 'ब्रह्मपुत्र' उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिवेश का मार्मिक एवं यथार्थ रूप का चित्रण हुआ है |

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में ही ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत पर अपनी नींव स्थापित कर लिया था | अंग्रजों ने साम्राज्य विस्तार तथा आर्थिक सम्पन्नता को दृष्टि में रखकर अपने शासन सम्बन्धी सुधार किए | भारत ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बन गया था | अंग्रेजों की क्रूरता एवं अमानवीयता का अत्याचार लोगों के लिए असहनीय थी | आम जनता के साथ गुलामों जैसे व्यवहार किया जाता था | भारतीयों का होटलों में जाने की सख्त मनाही थी, जब कि अंग्रजों के कुत्ते बड़े शान से वहाँ जाते थे | ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारतीयों की कैसी दयनीय स्थिति थी इस सन्दर्भ में सत्यार्थी कहते हैं," कलकत्ता में ऐसे-ऐसे होटल है, जहाँ हिन्दुस्तानियों को घुसने की आज्ञा नहीं है | अंग्रेजों को खुली आज्ञा है कि अपने कुत्तों को भी साथ

ले जाये |" [62] विदेशी सत्ता के लिए भारतीय व्यक्ति का महत्त्व उनके कुत्तों से भी गया गुज़रा है,अपने ही देश में भारतीयों की स्थिति बहुत ही शोचनीय हो गयी थी| सत्यार्थी अंग्रेजों की नीति से पूर्णरूप से परिचित थे तथा उन्होंने ब्रह्मपुत्र उपन्यास के माध्यम से इसका परिचय दिया | अंग्रेजी शासन का प्रतिनिधित्व नारायण दरोगा,चित्ताप्रसाद,दारोगा गोपीनाथ जैसे लोग उपन्यास में कर रहे हैं जो विदेशी सत्ता के विरोधी तत्वों का नृशंस हत्या कर रहे थे | एक ओर अतुल को गाँव बूढ़ा बनाकर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करता था | सरकार ने मिरियों को ही अपने पक्ष में नहीं किया था बल्कि नेपाली जन-जातियों को भी आर्थिक बल पर खरीद लिया था | अंग्रजों के विरुद्ध आवाज उठाने वाले को अनिष्ट का सामना करना पड़ता था |गाँव वाले आपस में बातचीत करते हुए कहते थे, "सरकार से टक्कर लेना तो ऐसा है , जैसे छोटी सी नाव बाढ़ के पानी से होड़ लेना चाहे |"[63]

विदेशी शासन को बनाये रखने के लिए अंग्रेजों ने पुलिस और फ़ौज का सहारा लिया तथा प्रतिदिन गांववालों पर उनकी क्रूरता बढ़ती गई और लोगों को अमानवीय रंग दिखने लगा | लोगों पर लगातार पुलिस का अत्याचार बढ़ता गया | पुलिस और फौजवालों को लोगों से रिश्वत लेना और वेवजह उन्हें पकड़कर पीटना आम बात हो गई थी | तत्कालीन पुलिस की क्रूरता का यथार्थ अंकन करते हुए सत्यार्थी ने लिखा गया है,"मैं तो खाली हाथ हूँ | खाली हाथ भी किसी का काम बना ? पुलिस का विभाग ऐसा है | ये लोग तो नकद नारायण चाहते हैं..... या फिर अच्छी खासी घूस कोई मुर्गी-सूअर या कबूतर बत्तख |" [64] नारायण दरोगा सबकी नजर में एक भ्रष्ट पुलिस के रूप में सामने आता है | वहाँ के लोगों पर मनमाने ढंग से अत्याचार किया करता है | किसी भी प्रकार से वह घूस लेने से पीछे नही रहता था, सामान्य सीधे गाँव वालों के समक्ष भयावह स्थिति का चित्रण कर वह सदैव रिश्वत लेने की चेष्टा करता था | गाँव वाले नारायण दरोगा के इस प्रवृत्ति के कारण से परिचित थे इसी सन्दर्भ में राखाल काका अतुल से कहते हैं,"एक

[62] देवेन्द्र सत्यार्थी- ब्रह्मपुत्र- 1956- पृ. 37

[63] [63] देवेन्द्र सत्यार्थी- ब्रह्मपुत्र- पृ. 261

[64] वही पृ.75

बार हाथ में डाली हुई हथकड़ी को खुलवाने की दक्षिणा सौ से एक दमड़ी कम नहीं लेते दरोगा जी | वैसे कम न बने तो कालापानी भिजवाने की धमकी देते हैं | लाख रोओं-धोओं,लाख पैर पकड़ो | पगड़ी उतार कर उनके सामने रख दो | दंडवत प्रणाम करो, चाहे देवता मानकर मंगलाचरण पढ़ो | ये देवता तो मुफ्त में पसीजने से रहा | कभी सौ से उतर कर भी तो अस्सी पर आ रुके | बात-बात पर दरोगा यही बोल लाएंगे, "जेल तुम्हारी राह देख रही है | कभी कहेंगे जेल का भात खाए बहुत दिन नहीं हो गए ?"[65]

पुलिस हमेशा सीधी -साधी जनता पर अत्याचार करती थी | दोषी जनता का कुछ अता-पता नहीं बल्कि निर्दोष लोग उसके चंगुल में फंस जाते थे | जब नारायण दरोगा को पता चलता है कि जादू को देवकांत का पता है तब उसे मार-मार कर उसकी हालात बदल देता है, अंतत: उसका देहावसान हो जाता है | यही नहीं दरोगा धर्मनंदी और उसकी बेटी आरती को पकड़ लेता है | वह आरती को अनेक प्रकार की यातनाएं देता है | यहाँ पर एक स्त्री के स्त्रीत्व पर अन्याय होता हुआ दिखाई देता है | दरोगा फिरंगी सरकार को प्रसन्न करने के लिए अपने ही गाँव घर के लोगों पर जुल्म ढाना नहीं छोड़ता ,बहुत निर्दयता के साथ उनके साथ उसका व्यवहार होता है |राखाल द्वारा उनको छुड़वाने की तमाम कोशिशें विफल हो जाती हैं तब राखाल काका कहते हैं,"यदि नारायण दरोगा मेरी बात मान लेता, उसका क्या जाता ? धर्मनंदी को छोड़ता तो न सही, आरती को ही छोड़ देता |"[66]

पुलिस अधिकारी द्वारा इतनी यातनाएं दी जाती थी कि वहाँ से छुटने पर भी अंतर मन में एक भयावह स्थिति बनी रहती थी | उन लोगों के मन में डर रहता था कि फिर से पुलिस पकड़कर न ले जाए | उपन्यास में आरती कहती है "नारायण के हत्थे चड़ने का मतलब है, मृत्यु की राह देखना | हम तो भाग्यशाली थे कि मुक्त

[65] वही- पृ.91

[66] वही- पृ.85

होकर आ गए पर अब भी क्या भरोसा है | देवकांत पुलिस के हाथ नहीं लगा | पुलिस चाहे तो बापू और मुझे दोबारा हिरासत में रख सकती है |"[67]

विदेशियों की शासन के आड़ में पुलिस इतनी निर्दयी और अत्याचारी हो गई है कि वह स्त्रियों पर अपनी क्रूरता दिखाने से भी पीछे नहीं हटते थे एवं अनेक प्रकार के अप्रत्याशित व्यवहार करते थे | पुलिस द्वारा उन्हें बेमतलब प्रताड़ित करना ,तमाचे लगाना, उल्टा लटकाना, आदि उनके लिए आम बात हो गई थी | दरोगा के द्वारा आरती को अनेक यातनाएं दी गयी थीं | नीलमणि का सर चकराने लगता है और वह मन ही मन नारायण दरोगा को गलियां देता हुआ कहता है "यह सब नारायण दरोगा का खेल है | वह दिशांमुख को पूरी तरह लांछित और अपमानित करने पर तूल गया है |" [68] "जादू की बहन पठचली पर हाथ उठाने से भी नारायण ने संकोच नहीं किया और तो और सताग मीरी की बेटी गोपी को थाने बुलाकर जादू के बारे में पूछताछ की गयी वह वेचारी क्या बोलती, चुपचाप थप्पड़ खाती रही |"[69]

पुलिस के दुर्व्यवहार का चित्रण करते हुए सत्यार्थी ने यह स्पष्ट किया है कि अत्याचारों की घटनाएँ वैयाक्तिक नहीं थी | अधिकारिओं के बदल जाने पर भी व्यवहार ज्यों का त्यों रहता था | नारायण दरोगा के बदले गोपीनाथ दरोगा के आ जाने पर भी लोगों की यही धारणा थी और वे आपस में बातचीत करते हुए कहते थे,"नारायण दरोगा गया, गोपीनाथ आया | क्या फरक पड़ता है ? पुलिस तो वही करेगी, जो फिरंगी चाहेंगे |"[70]

पुलिस की इस क्रूर, अत्याचार एवं अमानवीय व्यवहार के जिम्मेदार ब्रिटिश सरकार हैं | परन्तु ब्रिटिश सरकार तो विदेशी सरकार हैं अपने ही भारतीय लोग अपने फायदे के लिए अपनों पर जुल्म अत्याचार कर रहे थे ,ऐसे लोग देश में बहुत बड़ी संख्या में तो नहीं थी पर वे इतने सामर्थ्यवान थे कि वे

---

[67] [67] देवेन्द्र सत्यार्थी- ब्रह्मपुत्र- पृ116

[68] वही-पृ.74

[69] वही- पृ.201

[70] वही - पृ. 159

बहुत कुछ करने में सफल हो जाते थे | उस पर गाँव के लोगों में जो राजनैतिक चेतना आई उसकी गति बहुत धीमी है पर आई तो फिर रुकने का नाम नहीं ली बल्कि वह विस्तार पाता गया | पुलिस के अत्याचारी व्यवहार पर लगाम लगाने के बजाय वे उन्हें प्रसन्न होकर पदोन्नति एवं पारितोषिक देते | उपन्यास का खलनायक नारायण हवलदार से दरोगा बनने के पीछे यही वजह थी | उसे सदैव यही लगता है कि लोग हमेशा सरकार के प्रति षड़यंत्र रच रहें हैं | उसकी क्रूर व्यवहार से कौन लांछित नहीं हुआ ? जिस समय वह हवलदार था तब भी वह ऐसा ही था,उसका व्यवहार अपने लोगों के प्रति उचित नहीं था इसलिए सरकार ने प्रसन्न होकर इनाम स्वरुप उससे दरोगा बना दिया गया था |

ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान पुलिस के अभद्र व्यवहार का यथार्थ चित्रण करते हुए सत्यार्थी ने यह भी बताने की चेष्टा की है कि धीरे धीरे जनता के मध्य जिस तरह राजनैतिक चेतना प्रबल हो रही थी उसी तरह अत्याचारी देशी पुलिस की मन:स्थिति में भी परिवर्तन आता चला जा रहा था | उनके मन में यह बात बैठ जाती है कि,"यह विद्रोह करने वाले तो अपने ही भाई हैं, जब फिरंगी तो सात समुद्र पार के हैं, वे अपने कैसे हो सकते हैं ? उपन्यास में एक पात्र गोपीनाथ दरोगा का है जिसने लम्बे समय तक अपने लोगों का खूब अत्याचार किया| परन्तु अब उनका मन बदल रहा था,उनके मन में यह भाव आया जो भारतीय संदर्भ में बहुत ही सकारात्मक स्थिति का परिचय देता है ,"यह सब बंधू बांधव है, सात समुद्र और तेरह नदियों पार से आने वाला फिरंगी तो बन्धु बांधव होने से रहा |"[71] उस समय जब यह पाता चलता है कि अतुल शासन के विरोध में आवाज उठा रहा है तो गोपीनाथ दरोगा उसे समझाते हुए कहता है,"तुम नहीं जानते अतुल कि मैंने कितनी बार तुम्हारा वारंट कटते कटते बचाया है | अब भगवान के लिए लोगों को सरकार विरुद्ध प्रचार करना छोड़ दो |"[72] अतुल के प्रति उसकी सहानुभूति केवल दिखावा भर का नहीं रहता बल्कि व्यवहारिक होता है | गोपीनाथ देवकांत जैसे क्रांतिकारी व्यक्ति को बचाने के प्रयास में अंग्रेज शासकों के विरुद्ध मुकाबला करता है जहाँ उसका अंत होता है| गोपीनाथ जैसे फिरंगी साम्राज्य के समर्थक उपन्यास के अंतिम

[71] वही पृ. 269

[72] वही पृ.269

पड़ाव में देश के हित में अपनी क़ुरबानी कर जाता है जो राजनैतिक चेतना के स्तर पर बड़ी घटना मालूम देती है ,घर ,गाँव ,समाज और अब देश के निवासियों में अपनी भूमि के प्रति मर मिटने की प्रेरणा विस्तार पा रही थी |

अत: संक्षेप में कहा जा सकता है कि सत्यार्थी ने अंग्रेजी शासन का यथावत वर्णन किया है ,उनके शोषण और अत्याचार के विभिन्न रूपों को भिन्न-भिन्न तरीके से प्रस्तुत किया | जहाँ उनके अत्याचारी बहुमुखी चेहरे उभर कर सामने आए |

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी महात्मा गांधी के द्वारा चलाये गये धार्मिक, राजनैतिक, एवं सामाजिक बहिष्कार के निर्णय से प्रभावित होकर जनता ने निजी स्वार्थ को छोड़कर अंग्रेजी शासन का बहिष्कार किया | इस उपन्यास का एक प्रमुख पात्र राखाल काका की दृढ़ता यह बात को स्पट करता है,"अपनी धरती अपना धान, थोडा चाहे ज्यादा, जितना भी मिल जाया करेगा | अब अपनी धरती के धान से ही दो जून पेट भरकर रह जाऊंगा; फिरंगी की पेंशन नहीं लूँगा, नहीं लूँगा,नहीं लूँगा |"[73]

देश के लेखकों एवं साहित्यकारों ने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु जन जागरण की चेतना को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया एवं उपनिवेशवादियों के विरोध में आवाज उठाई |सत्यार्थी पर शुरू से ही रविन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महान लेखकों का प्रभाव रहा | उपन्यास में नीरद एक स्वतंत्र लेखक के रूप में प्रस्तुत हैं वह अपने देश के प्रति कर्तव्य बोध से परिचित है और लेखकीय रूप में अपने देश और समाज के प्रति अपनी भक्ति भाव को प्रदर्शित करना चाहते हैं |उपन्यास में नीरद के माध्यम से लेखकीय उर्जा की तरफ भी लेखक ने ध्यान आकर्षित किया है कि समाज में नवीन चेतना और परिवर्तन के लिए लेखक की भूमिका भी बहुत अहम् होती है | अपने लेखन के माध्यम से वे अपने समाज में सकारात्मक पहल कर सकने की असीम क्षमता रखते हैं | उपन्यास में नीरद सभा को संबोधित करते हुए कहते हैं,"मैंने बहुत यात्रा की है और सर्वत्र भारतमाता की दर्शन की हैं | एक दिन भारत माता स्वतंत्र होकर रहेगी | इससे तो अंग्रेज भी इनकार

[73] वही पृ.209

नहीं सकते | जब भारत माता स्वतंत्र होगी, वह अपने बेटों की मिली जुली भक्ति से स्वतंत्र होगी | मैं राजनीति में पड़ा हुआ मनुष्य नहीं हूँ | मैं तो एक साधारण लेखक हूँ | मेरा मार्ग न हिंसा का मार्ग है न अहिंसा का | मेरा मार्ग तो लेखनी का मार्ग है | शिकारी गाँव वालों के साथ मेरी पूरी सहानुभूति है | मैं शिकारी गाँव का गाँव बूढ़ा होता तो आग लगाने वालों के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हुए गाँव बूढ़ा की पदवी त्याग देता | एक लेखक भी त्याग करना जानता है, मुझे सरकार ने कोई उपाधि नहीं दी पर इस अवसर पर मुझे रवीन्द्रनाथ ठाकुर की याद आती है, जिन्होंने अमृतसर के जलियाँवाला बाग में डायर के हत्याकांड से दुखी होकर सरकार को 'सर' की उपाधि लौटा दी थी | मैं कहता हूँ उस दिन रविंद्रनाथ ठाकुर ने भारतमाता की आखों में आँसू देखकर ही विदेशी सरकार द्वारा दी हुई उपाधि लौटा दी थी | भारत माता को अपनी माता मानते हुए आज मैं एक लेखक का धर्म पहचानता हूँ |"[74]

गाँव के लोग बहुत लम्बे समय तक अंग्रेजों के चंगुल में पिसते रहे ,धीरे-धीरे सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर लोग अपनी समस्याओं को लेकर सचेत होते दिखाई दिए | अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिए वे आन्दोलन में अग्रसर हुए तथा विदेशियों द्वारा लगाये अनेक स्थानों के टैक्स देने से मुकर गए | धीरे धीरे वे प्रशासन के विरोध में तैयार होने लगे |इसी प्रसंग में अपनी दृढ संकल्प में राखाल काका कहतें हैं,"ब्रह्मपुत्र में बहकर आई हुई लकड़ी भी हमारी है | इस टैक्स के विरोध में चलेगा हमारा आन्दोलन | ..... अब मौका है हम फिरंगीयों को चुनौती दें |" [75] दिशांगमुख के लोग अंग्रेजों से भिड़ने का सोचने लगे हैं | किस प्रकार अंग्रेजों को इस देश की माटी से उखाड़ फैंके इसी पर गाँव के सचेत लोग चर्चा -परिचर्चा करते |

दिशांगमुख में भी अंग्रेज शासन के खिलाफ अनेक आन्दोलन हुए | पुलिस के प्रति जुलूस, जन आन्दोलन एवं तमाम सभाएँ की गई | इतने पर भी उन पर कोई असर नहीं हुआ | लोगों ने इन आन्दोलनों को यथावत रखा तब जाकर फिरंगी सत्ता के ऊपर उसका कुछ असर दिखने लगा | इसी सन्दर्भ में ब्रह्मपुत्र उपन्यास के सभी पात्र यह समझने लगे थे कि उनकी ज़िन्दगी की बदहाल स्थिति का कारण फिरंगी सत्ता है

[74] वही- पृ. 195-196

[75] वही-पृ. 282

,उन्होंने साफ़ तौर पर अपनी मिट्टी के शत्रु को पहचान लिया था,वे कहते हैं,"हम न्याय चाहते हैं, हम जीने का अधिकार चाहते हैं | जो भी अन्याय की बाढ़ लगाएगा,उसे मूक होना पड़ेगा, मुंह फिर के रह जाना होगा | हम असहाय है, विवश नहीं | हम जन-जन प्रतिनिधि है ..... शिकारी गाँव पर अत्याचार बंद करो | ..... वह मछुआ, जो सात समुद्र और तेरह नदियाँ पार कर के ब्रह्मपुत्र में जाल डालने आया है, उससे अब यहाँ से जाना होगा |" [76] पूरा देश ही नहीं बल्कि दिशांगमुख के लोग भी गांधी बाबा द्वारा चलाए गए आन्दोलन से परिचित होते ,उनके भीतर भी उत्साह भर आता और वे नए जोश और उम्मीद के साथ आगे बढ़ते गए | इसी प्रवाह में कुछ के ऊपर देशद्रोह होने का लांछन भी लगा ,जिन्होंने अपने लोगों का साथ देने के बजाय अंग्रेजों का साथ दिया परन्तु गोपीनाथ और नारायण दारोगा जैसे लोग अपने अंतिम भूमिका तक आते आते उनके ह्रदय नरम पड़ गए थे, गोपीनाथ दरोगा तो देवकांत की रक्षा करते हुए मौत को गले लगा लेते हैं |

कथा में शुरू से अंत तक सघन मिरी अपने स्वार्थ और प्रशासन का साथ देते दिखाई पड़ते हैं,उनके लालच और गद्दारी का परिणाम देवकांत,गोपीनाथ दरोगा के साथ गाँव के कई असहाय जन बेमौत मारे जाते हैं | जिसकी टीस कईयों के ह्रदय को भेद देती है,सरकार की इन क्रूरताओं से जनता का ह्रदय डगमगाता नहीं है बल्कि वे और सजग हो जाते हैं |

भारत देश आजाद हो चुका था पर हालत वही थे,लोग इसी वजह से परेशान भी थे | स्वतंत्र पूर्व औपनिवेशिक कानून अंग्रेजों से मुक्त होने के पश्चात भी बने रह गए थे | ऐसे स्थिति में राखाल काका कहते है,"आजादी तो आई पर वह आजादी तो अभी दूर है, जिसकी कल्पना की थी |" [77] इस कथन से स्पष्ट रूप में अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वतंत्रता पश्चात् भी देश की हालत यथावत बनी हुई थी| आजादी के दो साल बाद भी रानी गोईडालो को कैद से नहीं छोड़ा था | ऐसे में उपन्यास का एक पात्र कहता है,"देश की आजादी के साथ ही रानी गोईडालो को क्यों नहीं छोड़ दिया गया ?आजादी के बाद भी रानी गोईडालो को

[76] वही -पृ. 275

[77] वही- पृ. 299

छोड़ने में दो बरस क्यों लग गए ?" [78] सरकारी दफ्तरों में कार्य किस तरह होते हैं ,उसमें काम को लेकर ढिलाई को देखते हुए राखाल काका कहते हैं,"फिरंगी सरकार हो चाहे अपनी सरकार | फ़ाइल जरा धीरे-धीरे ही घूमता है | हमारे नार्मन साहब कहा करते थे, कभी कभी तो एक फ़ाइल को उसी दफ्तर के एक कमरे से दूसरे कमरे तक जाने में छ: महीने लग जाते हैं |" [79] इस उद्धरण से अंदाजा लगाया जा सकता है स्वतंत्र पूर्व अथवा स्वातंत्र्योत्तर समय की राजनीतिक परिदृश्य में किसी तरह का कोई परिवर्तन नहीं आया | जिस आज़ादी की प्राप्ति के लिए कईयों ने अपना घर बार,अपनी खुशियाँ,यहाँ तक की जीवन का भी त्याग किया उसी के मिलने के पश्चात जीवन में जब किसी तरह का कोई बदलाव नज़र नहीं आया तो आज़ादी से देशवासियों का मोहभंग होता दिखाई देता है | सत्ता और प्रशासन में बैठने वालों का सिर्फ चेहरा बदला था,उनकी नीयत और कार्य पद्धति में किसी तरह का अंतर दिखाई नहीं देता है |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ

आज के सन्दर्भ में इस तथ्य से लोग भली भांति परिचित हो चुके हैं कि समाज और जीवन का स्वरुप निर्धारण करने के लिए राजनीति की भूमिका अहम् होती है | यह जनता की सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य हो गया है | राजनीतिक चेतना लोगों की समाज और व्यक्ति के आने वाली हितों के लिए सटीक पहचान कराती है और दूसरी ओर अपने स्थान के राष्ट्रीय यथार्थ से जुड़ने का कार्य करती है | आंचलिक उपन्यासकारों ने स्थानीय पिछड़ेपन में एक ऐसी राजनीतिक चेतना को ढूढ़ निकाला है जो यथार्थ के दवाब को पहचानकर मानव मूल्यों का बोध कर सकें | आंचलिक उपन्यास स्वतंत्रता पश्चात की देन है पर उसे पूर्व कई उपन्यासों में राजनीतिक चेतना विकसित हो गयी थी | स्वतंत्रता से पहले उपन्यास साहित्य में राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति सफलतापूर्वक हो चुकी थी | स्वाधीनता से पहले ग्रामीण

[78] वही- पृ. 301

[79] वही-पृ.301

परिवेश में थोड़ी बहुत राजनीतिक चेतना पहुँच चुकी थी पर उसका पूर्ण रूप स्वतंत्रता के पश्चात विकसित होता दिखाई देता है |

'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास में राजनैतिक जीवन के चित्रण पर लील बाहदुर छेत्री का ध्यान बहुत ज्यादा केंद्रित नहीं हुआ है परन्तु इस उपन्यास में भी देश दुनिया में गांधी और कोंग्रेस के बल पर जो कार्य हो रहे थे या जो आन्दोलन चलाए जा रहे थे उसकी सफलता और असफलता पर गाँव के सजग लोग बातचीत करते,उसके प्रति चिंता व्यक्त करते | **'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ'** उपन्यास में सन 1952 से 1967 तक की राजनीतिक स्थिति का चित्रण हुआ है |इसमें नेपाली समाज के एकाध लोगों को ही चुनावी मैदान में दिखाया है | राजनीति का प्रत्यक्ष उल्लेख इस उपन्यास में नहीं है बल्कि लोगों के वार्तालाप से प्रसंगों की जानकारी मिलती है | कछुगाँव के लोग ब्रह्मपुत्र में आने वाली बाढ़ से अत्यंत दुखी है | गाँव की ओर सरकार की दृष्टि कभी नहीं जाती है | ऐसे में शहरी क्षेत्र होता तो बांध बनाकर अथवा कुछ और उपाय लगाकर बाढ़ से बचाव का रास्ता निकाला जा सकता था पर गाँव में इन सब कष्टों को कौन ध्यान देगा ? सरकार इस ओर ध्यान नहीं दे रही थी | ब्रह्मपुत्र नदी जिस प्रकार अपना प्रकोप दिखा रही थी, कछुगावं एवं आस-पास के कुछ अन्य गाँवों का अस्तित्व मिटने को था | वहाँ निवास करने वालों में अपनी जान माल की रक्षा की चिंता है | वे कहाँ जाये ?और क्या करें ?इस बात की चिंता उन्हें खाए जा रही थी | सरकार इस स्थिति में मदद भी नहीं कर रही थी,ऐसे में लोग अपनी जीवन एवं संपत्ति को बचाने में लगे हुए थे | समस्याग्रस्त लोगों के समक्ष यह एक विकट समस्या थी कि अब वे जाएँ तो कहाँ जाएँ?इस स्थिति में एक व्यक्ति काकती बाबू से प्रश्न करता है,"सरकार जब तक हमें रहने के लिये जमीन नहीं देंगी,हम कहाँ जाकर रहेंगे ? क्या खाकर बचेंगे ?"[80] तब काकती बाबू उसका उत्तर देते हुए कहते हैं,"सरकार से मांगना,उनसे कुछ खोजना बाद की बात है | अभी इस दैवीय प्रकोप से खुद को बचाना है | आस-पास के जंगल एवं अन्य गाँव

[80] ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ-लीलबहादुर क्षेत्री-1986- पृ.43

में जिसको जिस तरफ आसान होगा,उसी तरफ घर बार लेकर जाने की तैयारी करनी चाहिए |"[81] उस स्थिति में गाँव के लोग कोई जंगल की ओर कुछ अन्य गाँव में जा पहुँचे और अपने लिए नए पता ठिकाना खोजने लगे |

नेपालियों की सर्वभारतीय पर्याय की गोर्खा लीग प्रचार-प्रसार करने वालों में जयप्रसाद सुब्बा थे | गोर्खा लीग का संस्थापक डम्बर सिंह गुरुंग जब असम आते हैं तब जयप्रसाद सुब्बा उनके पीछे लगकर सरकार से नेपाली ग्रेजियर लोगों की समस्याओं से उन्हें अवगत करते और उनके लिए आवाज उठाने वालों में वे भी रहते हैं | वे सरकार से ग्रेजिंग का संरक्षण एवं वहां से विरोधियों को हटाने की मांग सरकार समक्ष रखे थे | भारतीय स्वाधीनता संग्राम के आन्दोलन कर्ताओं के नेताओं को सुब्बा ने बागे छपड़ी में कई दिनों तक उन्हें वहां छुपाए रखा | उनमें से कई नेता आज मंत्रीपद में थे | इसलिए कई सरकारी अधिकारी एवं मंत्री लोग जयप्रसाद सुब्बा का बहुत सम्मान करते थे | जय प्रसाद सुब्बा चाहते तो इसका लाभ लेकर अपने स्वार्थों की पूर्ति कर सकते थे परन्तु उनको अपने से ज्यादा लोगों की चिंता थी | आज वे एक समाज सेवी बनकर अपने समाज की सेवा कर रहे हैं | देश की स्वाधीनता संग्राम में जयप्रसाद ने प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया परन्तु उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से अपनी उपस्थिति उसमें दर्ज की | राजनीति का घिनौना रूप उनके अन्दर आया नहीं उनके लिए स्व हित की अपेक्षा परहित महत्त्व रखता था |

सन 1957 में स्वाधीन भारत में दूसरे चुनाव की हवा चारों तरफ फैली हुई थी | नेपाली जिसका खाते थे उसी का समर्थन करने के पक्ष में थे, वहाँ का सत्ताधारी दल कांग्रेज का साथ दे रहे थे | गाँव के महाजन, भूमिपति और शहर के कुछ बड़े नेपालियों को कांग्रेज पार्टी ने अपने पक्ष में कर रखा था और सामान्य नेपाली भी इनके पीछे ही लगे हुए थे | नेपालियों में ऐसा कोई नहीं था जो उम्मीदवार बनकर चुनाव में खड़ा हो और जीत हासिल कर सके | उसके पीछे कारण था कि वे सभी बिखरे हुए थे | जातीय कांग्रेज पार्टी के दल से चुनावी टिकट मांगने पर नेपलोयों को एक से अधिक देना नहीं चाहते थे | इसी वजह से स्वाधीन भारत का

[81] ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ-लीलबहादुर क्षेत्री-1986- पृ.43

प्रथम चुनाव में 1952 में नेपालियों ने प्रांतीय गोर्खा लीग के समर्थक सात लोगों को खड़ा किया था पर किसी को भी जीत हासिल नहीं हुई थी | दूसरे चुनाव में नेपालियों को कांग्रेज पार्टी के शरण में जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा चारा नहीं था | नेपालियों को लगता था जिसके पास ताकत है उसी के शरण में जाना ही उचित है, वहीं से कुछ लाभ हो सकता है | जातीय कांग्रेज के कुछ केन्द्रीय नेताओं ने अन्य कई नेपाली लोगों को भी अपने साथ शामिल कर लिया था, नेपालियों में कोई नेता बनने की स्थिति में नहीं था इसलिए वे कोंग्रेस का ही समर्थन कर रहे थे |

महखुटी समष्टि के अंदर महखुटी और पहुमारा के मध्य आने वाली सभी गाँव हाल ही में नदी के अंदर समाया हुआ आगे का कछुगाँव, बयरआंटी और अन्य सभी गाँवों, बागे छपड़ी आस-पास का सबकुछ, मैनापाड़ा के जंगल, पास ही का चाय की बाग़ के सारे इलाके, और नजदीक के शहर का एक अंश भी पड़ता है | इस समष्टि के अंदर नेपाली मतदाताओं की संख्या अधिक हैं | उसी कारण नेपाली लोगों की नेतृत्व में सभा का आयोजन हुआ | महखुटी समष्टि के अंतर्गत से राष्ट्रिय कांग्रेस दल से नेपाली समुदाय के लिए टिकट मांग करने का प्रस्ताव पारित हुआ | सभी ने जयप्रसाद सुब्बा का नाम दर्ता करने का प्रस्ताव रखा पर सुब्बा ने मना कर दिया | ऐसे में हेडमास्टर सूर्यप्रसाद के नाम में टिकट मांगने का निश्चय हुआ | संघठन के तरफ सूर्यप्रसाद के लिए कांग्रेस हाईकमांड में आवेदन भेजा गया |

इधर केशव काकती स्वाधीनता संग्राम के सेनानी थे साथ ही कांग्रेज कार्यकर्ता भी | एक तरफ से इस समष्टि के लिए राष्ट्रीय कांग्रेस से काकती बाबू के लिए कांग्रेज का टिकट दिलाने की चेष्टा हो रही थी | लेकिन कांग्रेज पार्टी ने न ही सूर्यप्रसाद को टिकट दिया न ही काकती बाबू को | उसके स्थान पर पुराने विधायक को टिकट दे दिया| चुनाव ख़त्म हुआ और परिणाम भी घोषित हुई | राज्य में फिर से कांग्रेज बहुमत प्राप्त हुआ |महखुटी समष्टि में भी फिर से कांग्रेस पार्टी ने ही विजय प्राप्त किया | टोपे मास्टर ने नेपाली लोगों से बीस प्रतिशत ही प्राप्त किया और अन्य लोगों से पांच प्रतिशत | नेपाली की ओर से बिहाली गाँव से कांग्रेज दल के विष्णुबाबू विजयी हुए थे | 1952 में स्वाधीन भारत का पहला आम चुनाव में कांग्रेज दल से एक ही

नेपाली दलवीरसिंह लोहार विजयी हुए थे, अभी भी एक ही लोग विजयी हुए | उसमें फर्क केवल इतना था कि 1952 में डिब्रूगढ़ जिले से वे निर्वाचित हुए थे अभी दरबंगा से |

ब्रह्मपुत्र के तट से दुसरे स्थान पर जाने के पश्चात नेपाली जनों को गाय, भैंस पालने में भी बहुत मुश्किल हो रहा था ,पशुपालन उनका मूल व्यवसाय था ,उनकी रोजी रोटी का सबसे बड़ा जरिया | वहाँ के कुछ दुष्ट लोग भैंस लेजाकर जो उन लोगों का पिंजड़ा था वहाँ बंद कर देते थे | कारण यह था कि कुछ भैंसों ने जाकर उनके कुछ क्षति कर दिए थे | ऐसे स्थिति में सरकार कुछ सुन नहीं रही थी, अगर अपनी बात मनवाना हो घूस देनी पड़ती थी जो सबके लिए असंभव था | वहाँ का एसोसिएसन से भी धीरे-धीरे विश्वास कम हो रही थी | इस स्थिति में जैसे तैसे महाजन, के साथ शिलोंग पहुँचते हैं और एस.डी.सी के यहाँ प्रस्ताव प्रेषित करते हैं तो वे कहता है "महाजन! कार्य तो थोड़ा जटिल है | मुझे पूरी जिम्मेदारी लेनी होगी पर..... इतने से तो..... |"[82] इससे साफ पता चलता है कि लोगों को आज कार्य करवाने के लिए कितनी घुस देनी पड़ती थी | तव महाजन कहते हैं "सर! मैं हूँ न लेकिन कार्य जल्दी होना चाहिये | भैंस तीन दिन से पिंजड़े में बंद है | हमारे आस पास कुछ दुष्ट लोगों ने आतंक मचा कर रखा है उसको जल्दी ठीक कर देना होगा नहीं तो हम भैंस नहीं पाल सकते |"[83] तव एस.डी. सी कहता है "हाँ हो जायेगा ! चिंता लेने की कोई बात नहीं | मैं कल ही छोड़ने के लिए पियून के हाथ में नोटिस भेज दूंगा | भैंस छुड़वाने के लिए नजदीक के पुलिस ठाणे में भी लिख दूंगा |"[84]

जो नेपाली बाढ़ से बचने के लिए मैनापाडा जंगल में जाकर बसे थे, उन्हें वहाँ से भी हटने की नोटिस सरकार की ओर से जारी हो चुका था | लोगों की भयाक्रांत स्थिति थी | वे वहां से कहाँ जाएंगे,उसकी चिंता उन्हें सताने लगी | कुछ समझ नहीं आ रहा था | राजनैतिक दल भी उन लोगों की बात नहीं सुन रही थी | एम .एल ए भी उनका सिर्फ इस्तेमाल किया करते थे | नेपाली लोगों को मालूम था कि उनके राजनैतिक नेता केवल

---

[83] वही- पृ- 62

[84] वही

वोट के समय नज़र आते थे उसके बाद वे कभी नज़र भी नहीं आते थे | सरकार ने यह धमकी दी थी कि अगर नेपाली जन मेनापाड़ा से अपना घर बसेरा नहीं उठाते हैं तो उनके घर को जबरदस्ती गिरा दिया जाएगा | टोपे इस संबंध में कहते हैं,"अगर वहाँ से घर न हटाए गए तो हाथी और पुलिस लाकर घर तोड़ने के लिए मजिस्ट्रेट खुद आयगा |"[85]

हेडमास्टर ,टोपे, गुमाने आदि नेताओं से बातचीत करने के लिए शिलोंग जाने को तैयार हुए परन्तु अब उनका नेताओं पर से भरोसा उठ चुका था | तव टोपे शंका भरी दृष्टि से कहता है "नहीं ! अब तो मैनापाडा में एसोसिएसन भी कहाँ है ? प्राय: लोग जंगल को हटाकर खेती करने लगें हैं | हम लोगों को देख-देखकर बांकी ट्रायवल भी आ गये | जंगल में गाय-भैंस तो कोई एकाध लोगों ने रखा है | इन लोग तो भूस्खलन के कारण आये हुए भूमिहीन लोग है | इनको हटाकर मैनापाड़ा मव निवास करवाने के लिए प्रस्ताव रखते आयें हैं | कर भी दे रहे हैं | हमारे एम्.एल.ए ने भी जमीं वितरण करने के लिए पहले ही कहा है | पर वही अभी नये लोग आकर जंगल में बसे हुए लोग कहता है |"

तव हेडमास्टर कहते हैं "भोट लेने के समय में कई उम्मेदे दिलाता है और चुनाव ख़त्म होने के बाद नये आये लोग कहता है | अभी तक तो वही कहता आया है | बारह, तेरह साल अब नयाँकहकर अलग करेगा | अब शिलोंग जाकर हमारी बात नेताओं को समझाना होगा | हमारे नेपाली एम्.एल.ए विष्णुबाबू भी वहीँ है |"[86]

मैनापाड़ा में अनेक समस्याओं की समाधान करने के लिए गुमाने नेताओं को बुलाकर लाता है, पर नेता मैनापाड़ा न जाकर सीधे डायरी महाजन के यहाँ पहुँच जाते हैं और भोजन कर उन्ही की प्रशंसा करते हैं | लोगों को यह बात सहन नहीं होती | तव गुमाने उसके प्रतिवाद में निर्भीक होकर कहता है "यह सभा मैनापाड़ा गाँव में है और सरकार की कठोर निर्णय से विचलित है, वहाँ सभा करने के लिए नेताओं को

[85] वही- पृ. 126
[86] वही-

बुलाया था | पर हमारे नेता किसी भी गाँव में जाते समय वहाँ के उद्योगपति अथवा किसी बड़े लोगों के पास रुकने के लिए पहुँच जाते हैं | कारण वहाँ अच्छा भोजन और रहने के लिए अच्छी व्यवस्था होती है | उन लोगों को यह मलिम नहीं होता की वहाँ के बड़े लोग गरीव दुखी जनता का कितना शोषण करते हैं | हमारे नेताओं को मांसाहारी भोजन कर महखुट्टी में भाषण देना उन लोगों के लिए किसी धूर्त जानवर के पूछ पकड़कर कीचड़ से बहार निकलना जैसा है|" [87] इसी उद्धरण से अंदाजा लगाया जा सकता है कि सरकारी लोगों का ध्यान केवल प्रयोग की द्रष्टि तक सिमित है

जब गुमाने सैनिक जीवन से वेहाल अवस्था में गाँव पहुचने के बाद वहीँ रहकर समाज सेवा करने विचार कर लेता है पर उस स्थिति में उसका साथ देने के लिए कोई भी तैयार नहीं था | इतने पर भी गुमाने ने अपनी साहस टूटने नहीं दिया | उस स्थिति में उसकी पूर्व प्रेमिका मालती जैसा भी हो उसका साथ देती है पर एकाध लोगों का साथ देने से कुछ नहीं होने वाला था | 1967 की चुनाव नजदीक आ रही थी | धीरे-धीरे लोगों ने फिर से पराया लोगों की मदद करने से अच्छा अपने लोगों की सहायता करना ठीक समझा और गुमाने का साथ देने लगे | कुछ मान्य व्यक्ति जैसे हेडमास्टर, टोपे जैसे व्यक्ति ने उसे चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया लेकिन उसमे लड़ने की साहस नहीं थी | तव हेडमास्टर कहते हैं "उठ सकते हो! जीत गये तो ठीक है वरना एक अनुभव तो होगा |"

उस स्थिति में निरास भाव में गुमाने कहता है "चुनाव लड़ने के लिए पैसा भी तो चाहिये ? उतनी पैसा कहाँ मिलेगी?"तव टोपे उसको तसल्ली देते हुए कहता है "कुछ पैसे तुम्हारे पास होंगे | बांकी का खोज लिया जायेगा | अगर नहीं हुआ तो चंदा भी उठायेंगे | हमारे युवा काम करने के लिए हैं ही | जितना हो सके कम खर्च में काम चल जायेगा |"[88]

[87] वही- पृ. 131-32

[88] वही- पृ. 146-47

मैनापाड़ा लोग फिर से एक बार गुमाने के पक्ष में दिखाई देतें हैं | भोट उसी को देने का विचार कर लेतें हैं | टोपे और गुमाने का परिश्रम और मालती के प्रचार से उन लोगों को को प्रभावित कर लेता है | चाय बाग के श्रमिकों का मतदान गुमाने की ओर आने की आशा है | इधर मछुआपाड़ा में भी ज्यादातर लोग उसी के पक्ष में दिखाई देते हैं| महखुट्टी में महाजन कांग्रेज के पक्ष लेते हैं पर अंदर से गुमाने के ही समर्थक हैं | छपड़ी में कांग्रेज के बहुत समर्थक दिखाई देते हैं पर नेपाली होने के कारण उन लोगों की भोट आने की आशा है | काकती बाबू भी गुमाने के ही पक्ष में हैं | एसे गुमाने का पक्ष अधिक मजबूत दिखाई देता है |

किन्तु उधर कांग्रेज पार्टी लोगों को भड़काकर तसल्ली देता है | यह सब गुमाने तथा वहाँ के लोगों के खिलाफ षडयंत्र था | महिराम अपने दल के साथ हट के कागज लेकर मैनापाड़ा पहुँच जाता है और वहाँ के जनता को कागज दिखाते हुए कहता है "वन अंचल से सोरह सौ कट्ठा जमीं में जंगल को हटाकर आठ कट्ठा दो सौ परिवार को देने का यह कागज है | निर्वाचन के पश्चात ही यह कार्य शुरू होगा | बांकी के लोग जो कुछ भी कहें आखिर सारा कांग्रेज पार्टी के हात में हैं | यह कार्य कांग्रेज ही कर सकता है | त्यसर्थ अपने हित के लिए खुद ही विचार कीजिये भोट किसको देना है ? यदि निवास स्थान चाहिये तो कांग्रेज पार्टी को भोट देकर विजय करवाइए |"[89]

गुमाने उस बात को सुनकर हतास हो जाता है | गुमाने जल्दी ही निराश हो जाता था | कांग्रेज की इस षडयंत्र को देखकर हतास हो जाता हो जाता है | उस समय उसके दल के लोगों ने आशा दिलाते हुए कहते हैं "यह केवल मोहिरामका भोट आकर्षित करने की चाल है | जंगल हटाने का वैसा कोई आदेश नहीं निकला है |"[90] पर कांग्रेज को भोट न देने से वहाँ से हटाने की संत्रास जनता के मन में छप चुकी थी | फिर से गुमाने चुनाव में असफल हो जाता है औरे कांग्रेज पार्टी की जीत हो जाती है |

[89] वही- पृ. 149

[90] वही- पृ. 149-50

अन्त्य में यही कहा जा सकता है कि कांग्रेज पार्टी का दवाब सबसे ज्यादा था, जिस तरह औपनिमेश में फिर्रंगियों का था | स्वतंत्रता के पश्चात भी वही नियम कानून यथावत रहता है | लोगों की सपनों को कांग्रेज ने कुचलकर आगे बढ़ता हुआ दिखाई देता है | जो स्वतंत्रता से पहले लोगों ने अपने सपने सजाया था पर स्वतंत्रता पश्चात भी स्थिति यथावत रहने से लोगों के मन में आशा के किरण समाप्त हो चूका था |

4.3.आंचलिक जीवन की सांस्कृतिक जीवन्तता

ब्रह्मपुत्र

मनुष्य जब जन्मता है तभी वह किसी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हो जाता है | संस्कृति मानव जीवन को संस्कारित करती है | जिसका तात्पर्य है असल बनना, परिमार्जित करना, मानव को मानवता का बोध कराना, जीवन शैली को सुसज्जित बनाना आदि हैं | संस्कृति जीवन जीने के तौर तरीके से सम्बद्ध है ,हमारे यहाँ संस्कृति को एक विस्तृत फलक पर देखा जाता है,रीति-रिवाज, कला, त्यौहार, रहन-सहन, खान-पान, परिवेश, साहित्य, शिक्षा, धर्म सभी इसके अंतर्गत आते हैं | संस्कृति जीवन का मूल धरोहर है | धर्म-संस्कृति ऐसे व्यापक शब्द हैं जो समाज या जाति के इतिहास एवं उसकी जीवन की सम्पूर्णता को वहन करने का सामर्थ्य रखती है | संस्कृति के बल पर मानव जीवन में प्रेरणा एवं प्रकाश संचरित होता है |संस्कृति हमारे जीवन की गतिविधि एवं प्रगति में सहधर्मी होती है जो जीवन और मानव को नवीन और सार्थक मूल्यों से भर देता है | संसार की सभी जातियों में यह किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रहती है | हर जाति की संस्कृति दूसरे से विशिष्ट होती है,यही संस्कृति ही एक समूह को दूसरे समूह से भिन्न करती है | भारत बहुभाषी देश के साथ बहुसंस्कृति वाला देश है,यही जीवन को इन्द्रधनुषी आभा से युक्त करता है |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में देवेन्द्र सत्यार्थी ने असम को अनेक संस्कृतियों का संगम स्थल मानते हुए इस उपन्यास की कथा कहने के क्रम में मीरी,असमिया ,नेपाली जन समूह के द्वारा मनाई जाने वाले अनेक पर्व त्योहारों के साथ यहाँ के लोगों की जीवन शैली ,उनका रहन सहन के तरीके,खान -पान ,उनके गीत संगीत ,उसमें प्रयुक्त

होने वाले वाद्य यंत्र सबका यथासंभव चित्रण किया है|इन पर्वों में स्थानीय देवी-देवतओं की पूजा, नारियल पूजा, वृक्ष पूजा, दबूर पूजा, बिहू जिसमें काती बिहू ,माघ बिहू ,बोहाग बिहू आदि पर्वों का बड़ा जीवंत वर्णन मिलता है |बिहू के अवसर पर मृदंग ,झांझ ,पैपा,बांसुरी आदि वाद्य यंत्रों को बजाया जाता है | बोहाग बिहू नए धान का त्यौहार है ,प्रत्येक घर का भराल नए धान से भरा पूरा होता था | प्रत्येक प्राणी नूतन उल्लास का प्रतीक था | युवक -युवतियां जश्न के साथ गाते नाचते थे | खूब खुशियाँ मनाई जाती थी |बोहाग बिहू का आरम्भ गोरु बिहू से होता था ,खेतों के काम आने के कारण गोरु या बैलों को खूब सम्मान दिया जाता था ,उन्हें खूब रगड़ -रगड़ कर नहलाया जाता था ,उनकी पूजा होती थी ,गोहाली की सफाई होती थी वहां अगरबत्ती जलाकर उस वातावरण को सुगन्धित किया जाता था | इस अवसर पर विशेष तरह का मिठाई बनाने का रिवाज था जिसमें से कुछ भाग गोरु को भी दिया जाता था |

इस अवसर पर लाओ पानी का पान किया जाता था | इस उपन्यास में अतुल के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस परंपरागत पेय पदार्थ का निर्माण कैसे किया जाता था और असमिया समाज में इसका क्या महत्त्व है |

माघ बिहू के अवसर पर आस -पास का पूरा समाज उसमें शरीक होते हैं ,असमिया समाज के लोग यह पर्व मानते हैं परन्तु इसमें जो आग जलाई जाती है उस पवित्र आग को सेंकना नेपाली और मीरी दोनों लोग बहुत शुभ मानते हैं जिसे वे मेजी कहा करते हैं | पर्व और त्योहार समाज में व्याप्त जातिगत भिन्नता और उनमें आई दूरियों को भी कम कर देता था सभी लोग बहुत समरस भाव के साथ माघ बिहू का जश्न मनाते थे |

असम में लोग खेती किया करते हैं इसमें लेखक ने इस ओर भी ध्यान आकर्षित किया है कि वहां धान की भिन्न भिन्न खेतियाँ होती थी जिसको रोपने और जिसकी खेती के तरीके भी भिन्न हुआ करते थे | धान की तीन फसलों का जिक्र मिलता है आहू ,बाहू और शाली धान | जिसे असमिया और यहाँ किसानी करने वाले लोग बदल बदल कर अपने खेतों में लगाया करते थे | फसलें तो तीन थी परन्तु धान की किस्में तो अनगिनत थी जिनसे याहं के लोग परिचित थे |

मीरी बस्ती में दबूर पूजा का त्यौहार मनाया जाता था | मीरी भाषा में इस पूजा के लिए 'उई' शब्द का प्रयोग होता है | मीरी लोग इस त्योहार को 'दबूर उई' कहते थे |असमिया और नेपाली लोगों को विश्वास था कि दबूर इंद्र देवता का ही मीरी रूप है,इसलिए वे दबूर पूजा के स्थान पर इंद्र पूजा कहना पसंद करते थे| वर्ष में दो बार यह पूजा होती थी एक वर्षा ऋतु से पहले,दूसरी पूजा आश्विन में होती थी | यह पूजा वस्तुतः इंद्र भगवान को प्रसन्न करने के लिए की जाती थी उनका मानना था कि दबूर पूजा न की जाए तो अत्यधिक वर्षा के कारण सब नदियों में बाढ़ जाने का भय रहता था | इंद्र के प्रकोप से बचने के लिए ही असल में यह पूजा होती थी | मीरी लोग जब इस पूजा में शामिल होते थे उस समय बाहर से किसी का आना वर्जित होता था ,उसी गाँव का भी कोई बाहर होता था उसे भी उस समय बस्ती में प्रवेश नहीं मिलता था | इसलिए पूजा वाले दिन प्रात:काल से गोधूलि तक किसी व्यक्ति का बस्ती में प्रवेश वर्जित था | इसमें सूअर ,मुर्गे ,मुर्गियों की बलि दी जाती थी | पूजा में सम्मिलित होने वाले सभी लोग मांस पकाते ,इंद्र भगवान के नाम पर सहभोज करते | फिर सभी "लाओ पानी"का नशा करते |

इस पर्व के अवसर पर गाँव की लडकियां साथ मिलकर नाचा करती | गीत गाए जाते | सबके सुन्दर सुखद भविष्य की कामनाएं होती,स्त्रियों को पुत्रबधू होने का आशीर्वाद दिया जाता | सबके मन में एक दूसरे के प्रति प्रेम,समर्पण का भाव हो ऐसी कामना की जाती |

अतुल और जुनतारा के ब्याह के माध्यम से असमिया ब्याह संस्कार का उल्लेख मिलता है | असमिया समाज में शुभ मुहर्त के अवसर पर पान और ताम्बूल भेंट करने की रीति का पालन होता है | शादी ब्याह के अवसर पर जो संस्कार होते हैं उसे दो सहेलियों के मध्य की वार्तालाप के माध्यम से उपन्यास में विस्तार मिला है | इनके यहाँ विवाह से पूर्व वर-वधु का सात दिनों तक ब्रह्मपुत्र के जल से स्नान होता है ,वे इन सात दिनों में दूध और केला खाकर रहते हैं | शादी के शुभ मुहर्त पर वर वधु के ऊपर फूल और चावल वारे जाते हैं उसके पीछे निहित कई लोक विश्वासों का भी यहाँ विस्तृत वर्णन मिलता है |

ब्रह्मपुत्र नदी के सम्बन्ध में यह धारण है कि इसके पानी में स्नान करने से शरीर के रोगों का निवारण होता है सत्यार्थी जहाँ भी जाते थे वहां के लोक गीतों से वे गहरे जुड़ जाते थे | ब्रह्मपुत्र नदी के आस पास फलने फूलने वाले असमिया ,नेपाली और मीरी सभी समाजों में भी ब्रह्मपुत्र नदी का महत्त्व बहुत अधिक था | वे उनके प्रत्येक संस्कारों में किसी न किसी रूप में उपस्थित रहती |उन्होंने अपने उपन्यास की भूमिका में संस्कृत एवं असमिया लोक गीतों के माध्यम से ब्रह्मपुत्र नदी में स्नान करने के महत्व को दर्शाया है |

संस्कृत में :-

"ब्रह्मपुत्र महाभाग शांतनुकुलनंदन |

अमोघगर्भसंभूत पापं लौहित्य में हरे ||" [91]

अर्थात, हे ब्रह्मपुत्र ! हे शाकुंतल नंदन ! हे अमोघ गर्भ से जन्मे लौहित्य मेरे सरे पापों को हर लो |

असमिया में -

"ब्रह्मपुत्र कानो ते बरहमथुरी जुपी,

आमी खरा लोरा जाई

ऊटवाई निनीवा ब्रह्मपुत्र देवता

तामोल दी मनोता नाई |"[92]

अर्थात- ब्रह्मपुत्र के किनारे पर वरमुथि गाछ, जहाँ पर हम ईंधन लाने जाते हैं | इसे लील मत लेना ब्रह्मपुत्र देवता, हममें इतना भी सामर्थ्य नहीं है कि हरी सुपारी से ही तुम्हारा वंदन कर सकूं |

[91] ब्रह्मपुत्र- देवेन्द्र सत्यार्थी- 1992- पृ.21

[92] वही- पृ. 21

भगत जी हमेशा अध्यात्म की ओर ज्यादातर आकर्षित थे | वे अपने लोगों से घर्म निष्ठा की बातें किया करते थे | वे चाहते थे कि लोगों के मन में सदाचार का भाव जागे | भगतजी विशेष रूप से वैष्णव संप्रदाय से जुड़े हुए थे | वे नीलमणि और कल्याण भगत को वैष्णव घर्म के महत्त्व को समझाते हुए कहते हैं "सच्चा वैष्णव वही नहीं जो अंडा मछली और मांस से दूर भागता है ; सच्चे को तो पराई पीड़ा को जानना होता है, पराई पीड़ा को अपनी पीड़ा मानकर चलना होता है |" [93] धर्म के नाम पर बाह्य आडम्बर होते हैं,मुंह में राम बगल में छुरी वाली बात को चरितार्थ करने वालों की कमी नहीं होती है परन्तु भगत जी जैसे लोग इस उपन्यास में पात्र हैं जो वैष्णव धर्म पर आस्था रखते हैं और जो यह समझते हैं कि सच्चा धर्म खान -पान पर रोक लगाना ,शुद्ध शाकाहारी होना नहीं है बल्कि धर्म आदमी के अंतर्मन को शुद्ध करना है,जो यह कार्य कर जाने में सफल होता है,जिनके लिए स्व पीड़ा और पर पीड़ा में किसी तरह का कोई भेद नहीं होता,असल में वही सच्चा,धार्मिक या वैष्णव होता है |

हिन्दू समाज में दहेज़ प्रथा लेने देने की स्थिति देखने को मिलती है | अधिकतर जगहों ऐसी प्रथा मिलती है | असम के आदिनामी जाति में वधुमूल्य की प्रथा है | प्राचीन समय से आज तक यह प्रथा यथावत चलती आयी है | उपन्यास में वधुमूल्य का उल्लेख करते हुए कहता है "जमाई इसलिए आता है कि ससुर अपना ऋण चुका दे पर जमाई बनना भी क्या इतना सहज है ? उसकी भी तो परीक्षा हो जाती है और यदि उसकी गाँठ खाली हो तो मिलती है दुल्हन ?" [94] विवाह से पहले यहाँ पर वर की अनेक तरीके से परीक्षा ली जाती है | अगर सफल हुआ वधू उसे मिलता है अन्यथा नहीं |

असम राज्य में अनेक जातियां निवास करती हैं | जिनके रहन-सहन के तरीके अलग-अलग हैं | सत्यार्थी ने अनेक जातियों की रहन-सहन,उनकी संस्कृति को भिन्न भिन्न तरीके से दर्शाने का कार्य किया है | उपन्यास में असम के मीरी लोगों की रहन-सहन को उल्लेख करते हुए कहा है "चारों ओर बगीचा, बीच में तीन चार झोपड़ियाँ निवास के लिए सामने वाले द्वार से भीतर जाने पर दाईं ओर पशुओं के लिए पृथक गोशाला और

[93] वही- पृ. 27

[94] वही- पृ. 33

बाई ओर अनाज रखने के लिए पृथक 'बखार' | गोशाला को 'गोहाली' कहते थे और बखारकी 'भराल' | खाते-पीते असमिया के घर में अपना पोखर भी होता था, जिससे घर की आवश्यकता के लिए मछलियाँ मिल जाती थी, जब बत्तखें तैर रही होती , तब पोखर अति सुन्दर प्रतीत होता था | असमिया किसानों के अतिरिक्त नावरिया और मछुए भी अपनी शक्ति के अनुसार इसी प्रकार के घर बनाते थे, जिसमें छोटा-मोटा बगीचा अवश्य रहता था, झोपदोयों की संख्या निर्धनता के कारण कम रखनी पड़ती थी और पोखर के नाम पर भी 'पुखरी' से ही काम चला लिया जाता था | भले ही इसका छोटा नाम मात्र ही क्यों न हो |"[95]

उपन्यास में फख्ताओं को लेकर लोक में व्याप्त मान्यताओं का लेखक ने उल्लेख किया है | लोग शुभ और अशुभ दोनों को अपने अनुभव के आधार पर ताड़ लेते थे | मीरी लोगों की परंपरा अतुल को विशेष रूप से प्रिय थी | यह परंपरा फाख्ता के संबंध में थी "जब बहुत से फाख्तायें घर पर झुरमुट में आकर गिरती थीं अथवा बार-बार फुर से उड़कर छत पर आ बैठती थी तो मीरी लोग सदा यह अनुमान लगाते थे कि उनके पुरखों की आत्माओं को कष्ट हो रहा है | फाखाताओं को चावल खिलाया जाता था ताकि पुरखों का कष्ट दूर हो जाये |"[96]

जहाँ एक ओर अनेक संस्कृतियों के संगम से लोगों के मन में विश्वास की भावना जगी है वहीं दूसरीओर ईश्वरीय सत्ता के नकार का भाव भी देखने को मिलता को मिलता है | एक स्थान पर आरती अपने पिता की अनास्था की बात करती हुई कहती है,"बापू कभी-कभी कहता है कि देवता वेवता कोई नहीं होता | ये सब कहने की बातें है | बापू का तो कहना है कि पेट ही सब करता है | पेट भरा हो तो नाच-गान भी अच्छा लगता है, पूजा भी करते रहो बैठकर पर जब पेट खाली हो तो देवता के गुण-गान से भी पेट नहीं भरता |"[97]पूजा के लिए तन्मयता ज़रूरी होता है , ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करने के लिए एकाग्रचित्त होना पड़ता है | यह एकाग्रता पेट की आग के सामने घुटने टेक देती है | आरती के बापू के लिए मछली पकड़ना

[95] वही- पृ. 43
[96] वही- पृ. 57
[97] वही- पृ. 56

और उन्हें बेचना उससे प्राप्त धन ही उनकी आमदनी है ,ऐसे में जीवन की ज़रूरतों को आसानी से प्राप्त करना उनके लिए सहज नहीं होता है ,इसलिए वे कहते हैं देवता नहीं होते हैं ,अगर वे होते तो किसी को खाली पेट रहना नहीं पड़ता ,पूजा से ही पेट भरना संभव होता तो दुनिया बिलकुल भिन्न हो जाती | जीवन में जिनका बहुत अधिक संघर्ष रहता है उन्हें यह स्वाभाविक लग सकता है | भगवान पर से उनका भरोसा खतम हो जाता है |

असम में बैशाख माह को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस माह को बैशाख बिहू के रूप में मनाया जाता है | बैशाख के लिए असमिय शब्दों में 'बोहाग बिहू' जिससे पहला दिन 'मानु बिहू' के रूप में मनाया जाता है, मानु शब्द का तात्पर्य मनुष्य से हैं | चारों ओर घरों में खुशियाँ ही खुशियाँ नजर आती थी |चैत माह से ही घरों और खेतों में बिहू पक्षी की मधुर स्वर गूंजने लगती थी | दिशांगमुख में इसको भव्य रूप में मनाया जाता था | दिशांगमुख का बिहू सर्वत्र प्रचलित एवं प्रसिद्द है | बिहू का मंगलाचरण कुछ इस प्रकार से शुरू होता है :-

"बिहू व चराय करे बिहू बिहू

आमर बिहू कापर लाई

समनियाई सुफिले कमे लिये बूती

सरुते मरीले आई |"[98]

असम प्रान्त में अनेक संस्कृतियों फल फूल रही है | ब्रह्मपुत्र नदी को वे लोग देवता मानकर हमेशा पूजा करते हैं | कोई भी समस्या हो असमिया लो बढ़डीडक्करी कहकर आगे बढ़ते दिखाई देते हैं | सभी जातियां अपनी संस्कृति से गहरे में जुड़े हुए हैं | वे अपने घर्म संस्कृति के प्रति अत्यंत श्रद्धा भाव रखते है|

[98] वही- पृ.104

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ

ब्रह्मपुत्र के आस पास पड़ने वाली कछुगाँव ,बयरआंटी,पहुमारा ,महखूंटी ,मछवापाड़ा ,सदिया ,मेनापाड़ा जैसे नेपाली बहुल क्षेत्रों को कथा का केंद्र बनाया गया है | इसमें लगभग चौबीस ,पच्चीस वर्षों के इतिहास का वर्णन हुआ है | इस उपन्यास में औपन्यासिक तत्वों के साथ ऐतिहासिक तत्वों का भी समावेश हुआ है | इसमें केवल कथा नहीं बल्कि इतिहास सम्बन्धी कई तथ्य भी उपलब्ध हैं | नेपाली समाज में इस बीच में हुए परिवर्तन को स्पष्ट किया गया है | दूसरा महायुद्ध खत्म हो चुका था | हिटलर की साम्राज्यवादी ताकत का अंत हो चुका था | युद्ध के आतंक से वर्मा से कई भारतवासी भागकर हिंदुस्तान आ गये थे | अंग्रेजों ने भारत का विभाजन कर दिया था | भारत में भी अलग सा पाकिस्तान बन गया था | असम का भी एक अंश सिलहेट पाकिस्तान के अंदर चला गया था | इसके बाद फिर से देश में दूसरा आतंक शुरू हो गया | हिंदु और मुसलमान के मध्य साम्प्रदायिक दंगे शुरू होने लगे | हिंसा का नागा नाच होने लगा | पाकिस्तान से हिन्दुओं को प्रताड़ित कर भारत भगाया गया और भारत से मुसलमान पाकिस्तान जाने लगे | यह सब धार्मिक मसला था जिसके प्रवाह में पूरा भारत आया था | अंग्रेजों ने फूट डालो राज करो की राजनीति के तहत पुरे भारत में वैमनस्य का जहर घोल दिया था जिसका प्रभाव तो असम के आस पास देखने को नहीं मिलता परन्तु चर्चा के तौर पर असमिया जनता आपस में वार्तालाप के माध्यम से देश की वास्तविक स्थिति से परिचित हो रहे थे और देश की इस बदहाल स्थिति को देख दुखी थे |

ब्रह्मपुत्र के आस-पास निवास करने वाले नेपाली जनों में कई नेपाली ऐसे थे जो कई सालों पूर्व से नेपाल से यहाँ आ बसे थे उनके लिए अब वही उनका निवास स्थान था ,उनमें स्थायित्व का भाव आ गया था ,उन्होंने वहीँ जमीं खरीदकर अपना स्थायी आसरा बना लिया था | लेकिन ऐसे भी नेपाली समूह थे जो नेपाल से किसी कारण वश आकर असम में बस गए थे ,वे वहां केवल काम की तलाश में आये थे | मानवीर का परिवार नेपाल के सामंतों के शोषण से पीड़ित होकर असम की ओर आया था | इन लोगों का लक्ष्य केवल

असम में पैसा अर्जन करना था ,वे सभी चाहते थे कि अंत में उन्हें अपने जन्म स्थान नेपाल को लौट जाना है |

सभी नेपाली जन असम में गाय पालन कर घी दूध का व्यापार करते | कई नेपाली जन ऐसे थे जो सामंतों के यहाँ नौकर की भूमिका में कार्य कर रहे थे | गाय,भैंस पालन करते ,खेती करते यही उनका व्यवसाय था जिसका व्यापक चित्रण उपन्यास में हुआ है |

ब्रह्मपुत्र नदी असमिया नेपाली जन के लिए भी बहुत ही पूजनीय है | उनके पर्व और त्योहारों में उसका विशेष महत्त्व रखता है | नेपाली जन के लिए जहाँ ब्रह्मपुत्र नदी पूजनीय है ,उसे रक्षक की भूमिका में देखते हैं क्योंकि उसी नदी से लायी उपजाऊ धरती में फसल उगाकर उनका जीवन गति कर रहा है वहीँ दूसरी और वही ब्रह्मपुत्र नदी उनके लिए कभी काल बनकर उनकी खुशियों को रोंदने का काम करता है | इस उपन्यास में ब्रह्मपुत्र नदी का चित्रण रक्षक और भक्षक दोनों ही भूमिकाओं में उसका विस्तृत चित्रण हुआ है | असमिया नेपाली में मकर नहाने ,रोग बीमार से ग्रस्त होने की अवस्था में तंत्र मन्त्र और झाड़-फूंक करने का विधान ,गोहाली की पूजा अर्चना आदि का वर्णन उपन्यास में है | नेपालियों के मध्य विवाह ,विवाह मंडप सम्बन्धी खाड़ो जगाना ,कवित्त सिलोक का पाठ करना ,रत्योली खेलना जैसी प्रथाओं का उल्लेख हुआ है | मांगलिक कार्यों के अवसर पर होने वाले रात्रि जागरण का वर्णन भी उपन्यास में हुआ है | नेपाली समाज के पर्वों का उल्लेख भी इस उपन्यास में हुआ है,दसई,तिहार जैसे चाड-पर्वों में मालश्री,देवसी भैली खेलने की जो जातीय परम्परा है उसका उल्लेख हुआ है | नेपाली समाज द्वारा अपने विशेष पर्वों में दही चुरा खाने का जो विधान है उसका भी उल्लेख मिलता है | वेश-भूषा स्त्रियाँ नेपाली परिधान में नज़र आती है जबकि पुरुष में थोड़ी भिन्नता दिखाई पड़ती है | प्राय: पुरुष धोती को छोटा करके पहनते हैं अथवा असमिया अंगोछा भी वे बांधते हैं | ऊपर से वे कुरता पहना करते हैं | कंधे पर अंगोछा डालकर चलने की प्रथा भी इनमें देखने को मिलता है | टोपी के स्थान पर अंगोछा ही लपेटते हैं |

इस उपन्यास में केशव काकती जैसे संपन्न असमिया हैं जो हेड मास्टर का कार्य करते हैं ,वे शिक्षा के प्रति काफी सजग ,सचेत नज़र आते हैं वे एक दिन मानवीर से कहते हैं,"मानवीर ! तुम्हारे बेटे की उम्र बहुत हो गयी है | इसको तुम्हे पढ़ानी चाहिए, इससे स्कूल भेज दिया करो | इस गाँव से अन्य बच्चे भी स्कूल जाते हैं | दो किलोमीटर ही तो है |"[99]

मानवीर जुरेली की मौत के पश्चात बहुत अकेला हो जाता है | जीवन भर दुःख कष्ट को भोगते हुए पति को अपनी पत्नी के चले जाने के बाद जीवन बिलकुल बदला हुआ महसूस होता है | वह उहाफोह की स्थिति में गोटा लगाता रहता है ,उसके मन में कई तरह के विचार आते जाते रहते हैं जो जीवन मरण के सम्बन्ध में होता है उसे लगता है जीवन में जो भी आदमी दुःख कष्ट भोगता है वह उसे पिछले जन्मों के कर्मों का फल है | लोक विश्वास में जन्म मरण और कर्म फल सम्बन्धित जो धारणाएं हैं उसी का विस्तृत वर्णन लेखक ने किया है | उसे लगता है मानव जीवन एक समय का पेट भरने ,तन ढकने के लिए कपड़े की व्यवस्था करने में ही पूरा जीवन संघर्ष में व्यतीत हो जाता है "हालाकि पूर्वजन्म का कर्म इस जन्म में भोग रहे होंगे | पूर्व जन्म के कर्म ख़राब रहने से ही हम इस जन्म में दुःख भोगते हैं | इसी कारण इस जन्म का मोल दुसरे जन्म में मिलता है | अगर ऐसा हो होता तो पूर्व जन्म की यादें हमे क्यों याद नहीं रहते ? जो बात हमारी चेतना में नहीं है,उसका फल हम भोगते हैं ? यह कहाँ का न्याय है ?शास्त्रों में पूर्वजन्म की बातें हैं जिसको आज के वैज्ञानिक दृष्टि और समझ रखने वाले लोग भी मानने को विवश होते हैं |" [100] ग्रामीण अंचल में रहने वाले लोग आज भी पूर्वजन्म और कर्मफल सम्बन्धी धारणाओं को मानते हैं और इस कारण कई लोग नियतिवादी हो जाते हैं | जीवन के संघर्ष से उन्हें मुक्ति कभी नहीं मिलती है | गुमानसिंह उर्फ़ गुमाने के पिता आजीवन संघर्ष में उनका जीवन गुज़र जाता है परन्तु वह अपने जी तोड़ प्रयास के बावजूद भी अपने जीवन का नक्शा बदल नहीं पाता है | वह अपने जीवन के संघर्षों से तंग आ जाता है और अंत में उससे मुक्त होता

[99] ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ- लीलबहादुर क्षेत्री- 1986- पृ. 29

[100] वही- पृ. 32

है तभी जब वह अपना भौतिक शरीर को छोड़ देता है | कई दफे उसका अपने जीवन पर से विश्वास उठता हुआ महसूस होता है |

ब्रह्मपुत्र के आस पास निवास करने वालों में नेपाली बहुल बस्तियां हैं तो कई बस्ती ऐसे भी थे जहाँ असमिया जन की संख्या अधिक थी और उनके साथ कुछेक नेपाली जन भी रहते थे | नेपाली लोग अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति बहुत सजग दिखाई देते हैं | असम में उनकी नेपाली मातृभाषा में शिक्षा अर्जन का कोई माध्यम नहीं है जिसके निमित्त वे प्रयास करते हैं और नेपाली जन में भी जो आर्थिक स्थिति से सम्पन्न नज़र आते हैं वे अपने वैयक्तिक प्रयास के माध्यम से कई गैर सरकारी संस्थानों का निर्माण करते दिखाई पड़ते हैं जो इस बात का प्रमाण देते हैं कि असमिया क्षेत्र में रहते हुए भी वे अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षार्थ प्रयासरत हैं |

ब्रह्मपुत्र नदी रक्षक और भक्षक दोनों ही रूपों में इनके जीवन में व्याप्त हैं |ब्रह्मपुत्र नदी ने जब अपना विकराल रूप धारण किया और सब लोग अपने को बचाने के लिए उस क्षेत्र से पलायन करने लगे | कई लोग छपडी की ओर गए,अन्य कई लोग जंगल की ओर चले गए | ऐसी स्थिति में टोपे कहता है "लो, महाजन के साथ जाने वाले उन्ही के संग चले जाये | हमारे पास दूसरा उपाय कुछ नहीं है | ऊपर जंगल की तरफ भैंस छोड़ देंगे | बाद में जो होगा देखा जायेगा |" [101] तभी पंडित गेहनाथ कहते हैं " मैं तो और दो चार दिन देखूँगा | कल से महायज्ञं शुरू करूँगा | बाबा भोलेनाथ की शक्ति से इस गाँव तक नदी नहीं पहुंचेगी ऐसा मुझे लगता है | इतने पर भी नहीं हुआ तो थोड़े से ऊपर झाड़ी के पास चला जाऊंगा |" [102] ऐसी भयंकर स्थिति में भी गेह्नाथ जैसे लोग हैं जो धर्म पर से आस्था नहीं तोड़ते बल्कि पूजा पाठ और और भोलेनाथ को प्रसन्न करने की मुद्रा में लगे हुए हैं | नदी की इस भयंकर स्थिति में पंडित गेहनाथ अपनी झोपड़ी में छोटा सा मंडप बनाकर उसमें महायज्ञ की प्रतिष्ठा कर गायत्री मन्त्र की साधना करने लगे | उनके आस पास उनका परिवार एवं कुछ भक्तजन भी इसी आस्था एवं विश्वास के साथ बैठे हुए हैं कि भोलेनाथ उनकी रक्षा करेंगे जबकि

[101] वही- पृ.46
[102] वही

स्थिति इस हद तक बिगड़ चुकी थी जहाँ अब साधना का कोई फल मिलने वाला नहीं था | नदी अपना विकराल रूप धारण करते हुए उस गाँव को ग्रसने के लिए आगे बढ़ रही थी |

छपड़ी में बसने वाले नेपाली जन नेपाल के पूर्वी पहाड़ी भाग से आए थे उनका चाल-चलन,रीति-रिवाज, कला संस्कृति आदि पहाड़ो में जैसे यथावत पाया जाता है वैसे ही होता था | छपड़ी में होने वाले कुछ व्यवहारिक शब्द भले ही असमिया हो पर बोलचाल की भाषा नेपाल की भांति है |असमिया बहुल जन-जीवन में निवास करने वाले नेपाली असमिया संस्कृति के बहुत करीब दिखाई पड़ते हैं जो अपनी भाषा संस्कृति की रक्षा के साथ साथ असमिया संस्कृति और समाज के साथ सामंजस्य बनाए हुए चल रहे हैं | वे जिस तरह अपनी संस्कृति से प्रेम करते हैं उसी भांति असमिया संस्कृति का सम्मान करते हुए दिखाया गया है | जैसे डांगरिया पूजा और वैशाख बिहू में उनके लिए कोई अंतर नहीं है वे दोनों ही पर्वों को बड़े उत्साह के साथ मानते हैं |बयरआंटी केशव काकती असमिया हैं माघ बिहू के अवसर पर महाजन के घर असमिया बुना हुआ गमछा भेंट स्वरूप आता था वही काकती बाबु के घर महाजन के घर से दूध,घी ,क्रीम आता था इस तरह नेपाली और असमिया समाज सांस्कृतिक रूप से एक दुसरे से गहरे अर्थों में जुड़े हुए थे | असमिया नेपाली के मध्य सांस्कृतिक समरसता की स्थिति देखने को मिलता है |

असम में माघ संक्रांति का बड़ा महत्व है | माघ में (मकर संक्रांति) संक्रांति में यहाँ पर बहुत बड़ा मेला लगता है | परशुराम कुंड में नहाने की परंपरा है और इसमें यह मान्यता है कि ऐसा करने से पाप का निवारण होता है | इस पवित्र कुंड में नहाने आने वालों में नेपाली लोगों की संख्या अधिक होती है | उन लोगों की धर्मभीरुता कहा जाये अथवा जीवन की अनोखी लोमहर्षक अनुभूति ढूढने वाली जाति कहा जाए, नेपाली यह दुर्गम एवं कष्टप्रद पहाड़ की राह की यात्रा को स्वीकार कर, उत्तर भारत, नेपाल, वर्मा, असम, भूटान, सिक्किम आदि से इस परशुराम कुंड के आस-पास जमा होते थे और इसे एक पवित्र पर्व के रूप में मानते थे |

ब्रह्मपुत्र के आस -पास निवास करने वाली असमिया और नेपाली समाज में बहराल शिक्षा की बेहतरीन अवस्था असमिया जाति में दिखाई पड़ती हैं जहाँ लड़कियों को भी शिक्षा दी जाती है जबकि नेपाली समाज जीवन की छोटी मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हुए हैं | काकती बाबु जैसे असमिया पात्र समाज में व्यापक जन चेतना फैलाने का कार्य करते हैं | उनकी समझ काफी विकसित अवस्था में हैं और वे अपने समझ के माध्यम से गाँव और समाज में भी परिवर्तन करते दिखाए पड़ते हैं | उनके इसी व्यवहार का कारण है कि वे न केवल असमिया समाज में बल्कि नेपाली समाज में बहुत सम्मानित व्यक्तियों में थे ,जिनके चरित्र में किसी तरह की कटुता या प्रपंच नहीं था ,उनके लिए मानवता की सेवा ही सर्वोपरि था | **"धर्मो रक्षति रक्षित'** अर्थात धर्म की रक्षा करने से ही हमारी रक्षा होगी | जब गुमाने अपने सैनिक जीवन से अपांग होकर असम पहुँचता है तो लोग देखकर दंग रह जाते हैं | उस समय हेडमास्टर काकती बाबु कहते हैं,"तुम तो भाग्यमानी हो | जैसा भी हो देश के लिए लड़े तुम| जिस देश का अन्न पानी खाकर हम बड़े हुए हैं, उस देश की रक्षा करना सौभाग्य की बात है | इसकी रक्षा नहीं होगी तो हमारे धर्म की भी रक्षा नहीं होगी | वैदिक संस्कृत जो सभी संस्कृति की जननी है, उसकी रक्षार्थ ही भारत की रक्षा होनी चाहिये |" [103] इससे यह स्पष्ट होता है कि देश की रक्षा ही धर्म की रक्षा है | काकती बाबु और गुमाने जैसा चरित्र इस उपन्यास में बहुत सहज ,सरल व्यक्तित्व के धनी हैं | जिनके चरित्र की व्यापकता पाठकों का मन मोह लेती है |काकती बाबु स्वयं भी एक शिक्षक के साथ समाज सेवा के कार्य में निरत हैं ,कथा के अंत तक आते आते गुमाने भी पूरी तरह समाज सेवा को अपना लक्ष्य मानकर असम की नेपालियों के मध्य मौजूद समस्याओं के निदान में अपने को समर्पित कर देते है |

असम में निवास करने वाले नेपाली समाज की संस्कृति की बहुरूपता को इस उपन्यास में दिखाने का प्रयत्न हुआ है |

[103] वही- पृ. 117

4.4. मूलभूत सुविधाओं हेतु जूझता अंचल

ब्रह्मपुत्र

अर्थ जीवन की धुरी है |आर्थिक जीवन से ही जीवन के सभी आयाम परिभाषित होते हैं |अर्थ से ही जीवन की सार्थकता और व्यर्थता का बोध होता है | किसी भी समाज को पूर्णतया समझने के लिए उसके आर्थिक स्थिति से परिचित होना अनिवार्य होता है | समाज में अर्थ से ही सम्बन्धों का भी निर्धारण होता है | यही आर्थिक स्थिति ही सामाजिक चेतना का आधार भी बनता है | देवेन्द्र सत्यार्थी ने दिशांगमुख में रहने वाले लोगों की अनेक समस्याओं बारीकी से अध्ययन किया है | जिनमें उनका आर्थिक स्थिति और उससे जुडी समस्याएं भी महत्वपूर्ण हैं | सत्यार्थी विशेषकर मार्क्सवादी विचारधारा से बहुत प्रभावित दिखाई पड़ते हैं | ब्रह्मपुत्र उपन्यास में लेखक ने तमाम स्थितियों, समस्याओं, विसंगतिबोध का चित्रण बहुत बेबाक तरीके से किया है | जातिगत भेदभाव के साथ आर्थिक विषमता का उल्लेख भी लेखक ने किया है |

आलीसीगा के पास धनसिंह की चाय की दुकान का जिक्र है | वहां पर लोग जमा होकर गाँव के विषय में चर्चा परिचर्चा करते हैं | घर्मानंदी एक मछुवारा है ,मछली पकड़कर उसे अपनी आमदनी निकालना उसका काम है उसके इस कार्य में उसकी बेटी आरती हर दम उसका साथ देती है | अब्दुल कादिर किसानी करके अपने जीवन का गुज़ारा करता है | धर्मानंदी का मानना है उसकी खेती केवल जल से ही होती है तथा उसके फैलाये जाल पर छोटी-बड़ी मछलियाँ आ फंसती हैं | लेकिन अब्दुल कादिर को एक ही बात की चिंता सताती है | भगत जी तीर्थों की यात्रा कर आ चुके हैं पर आज के दिन तक वे हज नहीं कर पाए हैं | धर्मानंदी अपने गाँव के लोगों से बातचीत करते हुए जो उसके व्यवसाय के संबंध में उससे परिचर्चा कर रहे हैं | जब भगत जी पूछते हैं मछलियाँ पकड़ में आने से इनकार तो नहीं करती इस पर उसके प्रत्युत्तर में वे कहते हैं,“इनकार करके कहाँ जाएगी ब्रह्मपुत्र की मछलियाँ ? सच पूछो तो मछलियाँ पकड़ना

भी हरिनाम जपने से कुछ कम कठिन नहीं | क्यों मिया अब्दुल कादिर ?" [104] लोग हाट बाजार में मछलियाँ बेचकर अपना गुज़ारा किया करते थे | अपने जीवन का गुज़ारा करने के लिए सब कोई न कोई पेशा चुनने को विवश हैं |

ब्रह्मपुत्र के आस पास रहने वाले असमिया लोग किसानी किया करते थे,इसके अतिरिक्त कुछ लोग नावरिया और कुछ मछुए थे | इसी सन्दर्भ में दिसांगमुख के गाँव बूढ़ा से नावरिया बादल कहता है ,"आप तो भाग्यवान है देवता ! कल आप का बापू गाँव बुढा था, आज आप गाँव बूढ़ा है, कल अतुल होगा गाँव बूढ़ा | इधर भी घी में, उधर भी घी में पर हमारी जो थोड़ी बहुत प्रतिष्ठा है, वह तो इसी ब्रह्मपुत्र से है| जिस दिन आर-पार चार फेरे लगा लूँ, दाल भात मिल जाता है और जिस दिन से हडसन साहब ने इंजन वाली नाव ठेका लेकर चेतन को खड़ा कर दिया है मेरे सन्मुख, उस दिन से तो पेट पालना भी कठिन हो गया है |"[105]

दिसांगमुख में निवास करने वाले असमिया जाति में आर्थिक वैषम्य देखने को मिलता है ,कईयों का आर्थिक जीवन सरल और सहज गति से बढ़ रहा है जो संपन्न अवस्था में वहीँ नावरिया और मछुए के व्यवसाय से जुड़े लोगों का आर्थिक मसला संतोषजनक नहीं है ,व्यवसाय नहीं चलने की स्थिति में उनका पेट भरना भी मुश्किल हो जाता है | समाज में जो आर्थिक रूप से संपन्न हैं उनका समाज में मान प्रतिष्ठा हैं ,लोग उनका सुनते हैं ,उनकी बातें बिकती हैं और जो आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग है | जिनका जीवन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सिमट जाता है उनसे सामाजिक संदर्भों में किसी तरह के परिवर्तन में सक्रियता की उम्मीद नहीं की जा सकती है |

लोग ब्रम्हपुत्र के प्रकोप से बचने के लिए दिशांगमुख के लोगोंने बांध बनाने की प्रतिज्ञा कर मैदान में उतर आये हैं | हाथ पर हाथ धरे बैठकर यह्व नदी पर नारियल और दूध चढ़ाकर उसका क्रोध शांत करने

---

[104] वही-

[105] वही- पृ.47

का समय ख़त्म हो चूका था | भक्ति का मार्ग से कुछ होता तो आज के ज़माने में कहीं भी अनहोनी घटनाएँ नहीं घटती | क्या मिरी, क्या नेपाली, क्या मुस्लमान, क्या असमिया हिंदी मुश्लिम, बूढ़े, बच्चे, स्त्री, पुरुष सभी लोगों ने दृढ प्रतिज्ञा कर ली थी | वे लोग अपने हाथों से ऐसा बांध तैयार करने के लिए उतर आये थे जिससे देखकर ब्रह्मपुत्र भी घुटने टेक देगा | कोई हाथ में कुदाले, कोई टोकरियाँ, कोई अन्य सामग्री के साथ निकल पड़ते हैं | इतने में एक कहता है "जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ | यह वेगार नहीं, फिर हाथ धीरे-धीरे क्यों चले ?"[106] लोगों की सभी फसलें बरबाद हो चुके थे | कार्य धीरे-धीरे चल रही थी इतने में एक बोला "अरे वा रे पट्ठे कमाल कर दिया |" [107] तव दूसरा व्यक्ति बोला "दिशांगमुख का इतना मोह न होता यो हम यहाँ से भाग खड़े होते | इधर मंथर गति से काम चला तो तीन मास में भी बांध नहीं बन पायेगा |" [108] इसे देखकर लगता है कि सचमुच ब्रह्मपुत्र अपने प्रकोप से मनुष्य एवं प्रकृति को भी बरबाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा जबकि अब गाँव वालों में यह समझ आ चुकी थी अपनी समस्याओं के लिए किसी से मदद लेने के बजाय स्वयं संगठित होकर कार्य करेंगे तो हर समस्या का समाधान निकाल सक्रेंगे | ब्रह्मपुत्र का बाढ़ प्रत्येक वर्ष भारी संख्या में जान माल को हानि पहुंचाती थी और लोग तब तक सचेत नहीं होते थे जब तक परेशानी उनके मत्थे न आ जाए परन्तु अतुल जैसे समाज सेवक जब इस दिशा में पहल करता है तो सारा समुदाय इस दिशा में कार्य करने को तैयार होता है इस तरह सदियों से जिस ब्रह्मपुत्र नदी की पानी से उनको बहुत नुक्सान झेलना पड़ता था वहां अब स्थिति को काबू में कर लिया गया था ऐसे में समाज में मौजूद सभी समुदाय जिसमें मुसलमान,मीरी,नेपाली और असमिया जाति जातिगत भेदभाव को भुलाकर एक हो गए थे | उन सबके सामूहिक प्रयास के माध्यम से ब्रह्मपुत्र में बाँध बनाने में वे सफल हुए थे | जिससे अब जान माल की हानि से सम्पूर्ण लोग बाख गए थे |

---

[106] वही- पृ. 277

[107] वही-पृ. 288

[108] वही- पृ. 288

नेपाली जातियां गाय भैंस पालते ,घी दूध और डायरी के व्यवसाय पर उनका कब्ज़ा था | कई नेपाली ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी गाय भेंसे बेचकर खेती का कार्य करना शुरू कर दिया था | कई नेपाली संपन्न अवस्था में भी थे | मीरी लोग भी किसानी का कार्य करते थे |

पेट की आग ही सारे संघर्ष की जड़ में होता है इसी संदर्भ में धर्मानंदी कहता है,"अब कल हाट -बाज़ार है | अच्छे खासे पैसे बन जाएंगे | ब्रह्मपुत्र की कृपा बनी रहे | वह हमारे लिए चीतल ,साल और न जाने कौन - कौनसी मछलियाँ लाता रहे | हमारा जाल बना रहे ,हमारी भुजाओं में शक्ति बनी रहे | पेट ही सब कराता है | जैसी थल खेती -वैसी जल खेती है |" धर्मानंदी के लिए थल खेती और जल खेती में किसी तरह का कोई अंतर नहीं है जैसे खतों में फसल लगाता है उसी भांति नदी की मछलियाँ उसके लिए फसल है जिसकी कटाई वह केवल अपनी पेट की आग को शांत करने के लिए करता है | जिस दिन तक बाज़ार में मछली की मांग बनेगी तब तक वह इसका व्यवसाय करता रहेगा |

अँगरेज़ जब भारत आए उन्होंने सबसे पहले भारतीय उद्योग धंधे पर चोट की क्योंकि अँगरेज़ समझ गए थे भारत आर्थिक रूप से बहुत ही संपन्न देश है उसकी सम्पन्नता का बहुत बड़ा कारण उसके कुटीर उद्योग हैं जो घर घर लगे हैं | जिसने प्रत्येक व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़े होने का बल प्रदान किया था ,आर्थिक सम्पन्नता ही उसको आत्मविश्वास देता है उसी आत्मविश्वास और स्वाभिमान के भाव को तोड़ने की चेष्टा उसने की जिसमें वह सफल भी हुआ | यहाँ अँगरेज़ अफसर हडसन साहब की यह स्वीकृति कारीगरी में भारतियों को जीतना आसान नहीं वह यह सिद्ध करता है कि उसी कारीगरी तंत्र को अँगरेज़ ने तोडा,समाप्त किया | यहाँ से कच्चे माल विदेश भेजकर वहां से बनाए सामानों की बिक्री भारतीय बाज़ार में होने लगा जिसने यहाँ कुटीर उद्योग में बने सामानों का खपत के लिए मुश्किलें खड़ी हो गयी |"दे आर वंडरफुल स्पिनर्स एंड विवर्स |"जो बड़ी बड़ी मीलों में बनने वाले कपड़ों को भी पराजित कर दें ऐसी अद्भुत क्षमता भारतीयों के हाथों थी इस बात से शत्रु भी इनकार नहीं करते थे | यह अंग्रेजी सत्ता का आर्थिक शोषण है जिसने भारतीयों की आर्थिक स्थिति को पूर्णतया डावांडोल अवस्था में कर दिया परन्तु ईश्वर के घर देर है

अंधेर नहीं ! भारतीय जनता अंग्रेजी सत्ता के शोषण को अब पहचान चुकी है इसलिए अब उनके खिलाफ आवाज़ उठाने को तैयार हो जाते हैं |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ

भारतीय ग्रामीण अंचल की अर्थ व्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि उद्योग है | गाँव में रहने वाले कृषकों की आर्थिक स्थिति विशेष रूप से भूमि के स्वामित्व पर निर्भर करता है | भारत में स्वाधीनता से पूर्व अर्थ व्यवस्था के अंतर्गत अंग्रेजों की शासन में भूमि का स्वामित्व जमींदारों के हाथों में था | समसामयिक ग्रामीण समाज की अर्थ व्यवस्था में अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए | आंचलिक उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में पूंजीपतियों का विशेष दवाब बना रहा | ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में उस क्षेत्र में निवास करने वाली नेपाली और असमिया समुदायों में आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा अंतर दिखाई पड़ती है | मानवीर का परिवार नेपाल में गरीबी ,भुखमरी और सामंती शोषण से तंग आकर असम में आये थे परन्तु वहां डायरी महाजन के हाथों उनके जीवन का नया अध्याय आरम्भ होता है | जो जुल्म और अत्याचार की नयी कहानी कहती है | मानवीर की पत्नी जुरेली भी वक्त पर इलाज के न मिलने से उसकी मौत हो जाती है | जीवन भर संघर्ष करने पर भी जुरेली और मानवीर अपने जीवन स्तर में किसी तरह का कोई सुधार नहीं पाते और अंत में मानवीर भी तमाम इच्छाओं को मन में दबाए नारकीय जीवन से मुक्त हो जाता है |

ऐसे ही महाजन ने अपनी बेटी को जबरजस्ती शादी जैसे पवित्र रिश्तों को थोपना यह मानसिक चाल थी | मालती गुमाने के साथ प्रेम कर दूसरे के साथ विवाह करने की पीड़ा और विवाह के बाद पति से शाररिक यौन तृष्णा का तृप्त न होने की पीड़ा को दिखाया गया है | इस पीड़ा के कारण मन में दमित वासना, कुंठा और सामाजिक बन्धनों के कारण आत्महत्या करने को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रण हुआ है | ऐसे ही ब्रह्मपुत्र नदी की बाढ़ से अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है | दैवीय प्रकोप से बचने के लिए किन-किन संघर्षों का सामना करना पड़ा उपन्यास में इसका वरिकी से चित्रण मिलता है | गुमाने तथा उसके आस-पास घटित घटनाओं का मूल कारण ज्यादातर आर्थिक स्थिति ही थी | हमे सवसे पहले समाज में हो

रही अनेक घटनाओं को समझने के लिए उसके पीछे की आर्थिक स्थिति को समझना अत्यंत आवश्यक है तभी अन्य परिस्थितिओं को समझ सकेंगे | उपन्यास में दिशांगमुख में निहित अनेक गाँव के लोगों की आर्थिक स्थिति किस प्रकार उभरकर सामने आती है इसको वरिकी से दिखाया गया है |

मानवीर का परिवार अपनी पैतृक सम्पति को छोड़ गरीवी हटाने के लिए अपने स्थान को छोड़ निकल पड़ता है | सामंती समाज, साहूकार, मुखिया सब मिलकर गरीवी रूपी पर्दा को चारो तरफ से खींचकर लम्बा कर दियें हैं | उसके अन्दर मानवीर का छोटा सा परिवार भी फंस गया | इस पर्दा को हटाने के लिए मानवीर के पास कोई उपाय नहीं था | अंत में एक दिन नेपाली परम्परानुसार अपनी पत्नी एवं सपरिवार सामान के साथ निरुदेश्य निकल पड़ता है | कहाँ जाना क्या करना इसका कोई पता नहीं था | पहाड़ के नीचे तक आते-आते मानवीर का भेंट असम जाने वाले एक नेपाली के साथ हो जाती है | उसी से मालूम चला कि असम में अधिक नेपाली जाती गौशाला एवं कृषि कार्य कर जीवन यापन कर रहे हैं | उसके मन में आशा जगी कि वहां जाने पर कुछ न कुछ जुगाड़ हो ही जाएगा | मानवीर को किसी एक दिशा में जाना हि था | उन लोगों के लिए रेल यात्रा का प्रथम वारी था | जैसे तैसे ट्रेन में चढ़ गए परन्तु जाना कहाँ तक यह पता नहीं था | जिस डिब्बे में वह लोग चड़े थे वहां पर कुछ सैनिक भी सवारी कर रहे थे | वहां पर स्त्री के नाम पर केवल मानवीर की पत्नी जुरेली ही थी | उसको देखकर कुछ सीख सैनिक मजाक उड़ाते हैं | यह सुनकर एक गोरखे सैनिक कहता है "मत छेड़ ये पगड़ी वाले ! नेपाली नारी को | अभी तुम्हारे दाड़ी, वाल छिलकर रख देंगे |"[109] मानवीर के तरफ देखते हुए फिर कहता है "भैया यहाँ बैठो, इतनी कठिन समय में अपने बाल बच्चे को लेकर किधर जा रहे हो |" [110] ऐसे मानवीर का अपने देश को छोड़ दुसरे स्थान पर प्रथम संघर्षों का दौर शुरू होता है | यात्रा के दौरान अनेक प्रकार के कष्टों को झेलते हुए आगे बढ़ता है | उसके बाद रास्ते डायरी महाजन से अचानक भेट होता है | ऐसे ही महाजन पूछ-ताछ करते हुए परिचय को आगे बढ़ाते हैं | इतने पर महाजन अपने यहाँ ले जाने के लिए तैयार हो जाते हैं | तव मानवीर लम्बी साँस

[109] ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ -लीलबहादुर क्षेत्री- 1986- पृ. 9

[110] वही

लेते हुए कहता है "हाँ हो गया ! अब हम लोग आप ही के पीछे जायेंगे | भाग्य ने यहाँ तक ले आया अब उधर भी जहाँ तक ले जायेगा |"[111] इस तरह मानवीर के जीवन की नये पहलू धीरे-धीरे आगे बढ़ता है |

मानवीर एवं जुरेली का नये अध्याय कुछ इस तरह आरम्भ होता है | असम के छपड़ी गौशाला के बीच डायरी महाजन के छत्र छायाँ में जीवन के नये पहलुओं को शुरू करते हैं | गर्मी का मौसम था ब्रह्मपुत्र के पास में विस्तृत स्थान पर फैला स्थान और दूर-दूर तक फैला जंगल था | पास में कांस की झाड़ी, खगडी, इकडी आदि से लोग जा नहीं सकते थे | उसी के अंदर गाय, भैंस चरते थे | जंगली जानवर गैडा, बाघ, हिरण, जंगली सुवर आदि भी वहां पर रहते थे | बर्षा के समय में ब्रह्मपुत्र नदी पर पानी का बहाव तेज हो जाता था | छपड़ी के बिलकुल पास तक जलमय हो जाता था | बाढ़ के बढ़ने पर घर, गौशाला एवं अन्य झोपड़ी सब डूब जाते थे | लोग अपने घर के उपर वाले माले पर आश्रय लेते थे | बच्चे, बूढ़े, एवं नारियों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया जाता था | अनेक जीव, कीट, पतंग आदि लोगों की विस्तार तक पहुँच जाते हैं | अन्य जानवर भी घर एवं सूखे स्थान को खोजते हुए आ जाते थे | मानवों से दूर रहने वाले रहने वाले जीव भी इस समय सूखे स्थान को ढूढ़ते-ढूढ़ते आ जाते थे | भैंस पानी में डूबते-डूबते लापता हो जाते थे | ऐसे में नौकर लोग छोटे-छोटे नाव लेकर उसे ढूढने जाते थे | इसी में मानवीर और जुरेली नये अनुभवों के साथ इस स्थिति में जूझने पहुँच जाते हैं |

गुमाने उर्फ़ गुमानसिंह पढ़ना लिखना चाहते हैं परन्तु शिक्षा प्राप्ति की गहरी रूचि रखने पर भी वह शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं पाता है ,इस संबंध में वह अनेकों कष्ट भोगता सहता आगे बढ़ता है |गाँव के स्कुल से पढाई करने के बाद आगे का क्या करना है रास्ता उसके लिए बिलकुल शून्य है | अपने को परिस्थितियों के समक्ष पूर्णतया बंधा हुआ पाता है |अनाथ गुमानसिंह निराश हो जाता है |ऐसे में मालती उसे उत्साहित करते हुए कहती है, "तुमको कॉलेज में नाम लिखवाना चाहिये | तुम होनहार हो | तुमको आगे

[111] वही- पृ.11

बढ़ना चाहिए|"[112] तव गुमाने हँसते हुए कहता है,"आगे तो बढ़ना चाहिए इसमें मुझे कोई संदेह नहीं | पर रास्ता कहाँ है? कॉलेज पढ़ने के लिए साधन चाहिए| आगे बढ़ना चाहिए यह मेरा प्रश्न नहीं है पर प्रश्न है आगे कैसे बढ़ना है |"[113]अनाथ और उस पर आर्थिक रूप से कमज़ोर गुमानसिंह जीवन की सामान्य जरुरत के लिए भी जब अन्यों पर निर्भर है तो शिक्षा तो दूर का मसला था | जितना पढ़ने लिखने का कार्य उससे हुए था वह भी काकती बाबु की कृपा से संभव हुआ था जिसके लिए उसने हरेन और काकती बाबू की पत्नी का बहुत अत्याचार सहे थे |

नेपाल से कई लोग गरीबी से तंग आकर कुछ काम की तलाश में आये थे जिनमें सुब्बा भी था | उन्हें लकड़ी काटने का काम तो मिला पर उसके लिए कई कठिनाइयों का उन्हें सामना करना पड़ा | कुछ कमाकर लौट जाने की चाह है परन्तु अब डायरी महाजन जैसों की चंगुल में फंस गया है जहाँ आना तो अपनी मर्जी से हो सकता है पर वहां से निकलन आसान नहीं था | उन्हें अब इस बात का भय है की इतने सालों में तो हमारे परिजन भी हमें भूल गए होंगे |सुब्बा महाजन से कहता है,"मैं पहले लकड़ी काटने के लिए ही आया था | मेरे साथ कई अन्य लोग भी थे, गाँव से अपने साथ एक लिम्बू को भी भड़काकर लाया था | उसके बाद नीचे सीमा पर उसके पहचान वाले एक ठेकेदार ने हमको पहाड़ के ऊपर घनघोर जंगल में पहुंचा दिया | ओह ! वो तो बहुत बड़ा जंगल था | सभी लकड़ी काटने वाले ही थे | दिनभर बड़े-बड़े लकड़ी काटते थे | सूर्य अस्त होने पर खाना बनाकर खाते थे और क्या वह टुंग कहते हैं | बड़े-बड़े पेड़ों के उपर झोपड़ी बनाकर सोना पड़ता था | घांस की झोपड़ी बनाओ, सायं काल में उसी के उपर चढ़कर रहना पड़ता था | ऐसे में नींद कैसे आती ?उसके बाद सभी इकट्ठा होकर आग जलाकर बैठते थे | रातभर जंगली जानवर दहाड़ते हुए चलते रहते हैं | अकेले सोने से जानवर के निकलने का डर रहता था | तीन महीने जैसे-तैसे मैंने वहां काटा! फिर मन में बहुत धिक्कार आया मुखिया भाई|" [114] इसी तरह लोग कई महीनो तक जंगल में लकड़ी

---

[112] वही- पृ. 69

[113] वही

[114] वही- पृ.17

काटकर जीवन बिताते थे | इसके आलावा उन लोगों के पास कोई दूसरा चारा नहीं होता था | उसके बाद सुब्बा वहां से निकलकर महाजन के यहाँ रहने लगा था अब यहाँ भी उसे शान्ति नहीं मिल रही थी वह लौटना चाहता था और महाजन उसे छुट्टी देने को तैयार नहीं होता था | बहुत जोर जबरदस्ती करने पर भी सुब्बा को महाजन छुट्टी नहीं देता तो वह अपना इतने दिनों से किया हुआ कार्यों का पारिश्रमिक लिए बिना वहां से भाग जाता है | एक तरह से महाजनों और संपन्न लोगों का असहाय लोगों का आर्थिक शोषण हैं जहाँ उनके चाहने पर भी उन्हें उनके सेवा भाव से मुक्त नहीं किया जाता था | सीधे साधे नेपाली जन को ठगना ,उन्हें उल्लू बनाकर अपना मतलब सीधा करना डायरी महाजन के लिए आसान था इसलिए वह इनके शोषण के बल पर दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करता आगे बढ़ रहा था |

जब लोग शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो जाते तो आर्थिक अवस्था के कारण सही से उपचार भी नहीं करा पाते थे | आस-पास में कोई अस्पताल भी नहीं था | जब जुरेली अस्वस्थ होती है तव उन लोगों के पास अस्पताल ले जाने की कोई चारा नहीं था | गाँव में ही तांत्रिक के भरोसे रह रहे थे | वहां पर किसी तरह से काकती बाबू को बुलाया जाता है | काकती उस हालत को देखते हुए कहते हैं "ऐसे क्या देख रहे हो ? तुम लोगों के देखने से यह ठीक नहीं हो जायेगी | इनको जल्दी ही अस्पताल पहुँचाना पड़ेगा | अस्पताल नहीं पहुँचाया तो बचना मुश्किल है | शारीर का खून ख़त्म हो चुका है | चलो जल्दी से उठाकर ले जाने की व्यवस्था करो |" [115] शिक्षा के अभाव में लोग तंत्र मन्त्र जैसे विश्वासों में उलझे रह जाते हैं जिसके कारण जुरेली की स्वास्थ्य संबंधी इलाज वक्त पर शुरू नहीं हो सका | गरीबी मुंह खोले जुरेली को सता रही थी,नवजात शिशु की माता होकर भी जुरेली के खान पान में पोष्टिक भोजन का कोई अंश नहीं था ,उसे क्षयरोग ने पकड़ लिया और खून की कमी के कारण अंत में जुरेली की मौत हो जाती है | गरीबी के कारण उनके समक्ष कई समस्याएं आती हैं जिसके कारण कभी कभार वे अपने जीवन से भी हाथ धो बैठते हैं |

[115] वही- पृ. 30

ब्रह्मपुत्र में बढ़ आते समय लोगों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता था | ऐसे स्थिति में लोग चारों तरफ बिखड जाते थे | ज्यादातर लोगों का आय श्रोत दूध बेचकर होता था | गाय, भैंस चराने के लिए कोई जंगल नहीं मिलता था | लोगों को संकुचित स्थान पर मिलकर रहना पड़ता था | ग्राज़िंग के लिए जो जगह थी वहां पर भी शक्ति संपन्न लोग अपना कब्ज़ा जमाए हुए थे ऐसे में नेपाली पशुपालन के व्यवसाय से जुड़े लोगों के समक्ष कठिनाइयाँ आने लगी थी |

'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ'उपन्यास में असमिया समाज में रहने वाले नेपाली जन की आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण लेखक के द्वारा हुआ है | यह मुख्यतया एक सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास हैं और इस कथा के अंतर्गत ब्रह्मपुत्र के आस पास रहने वाली नेपाली और असमिया जनजीवन का बहुत ही मार्मिक चित्रण हुआ है | इस कथा की केंद्र में गुमानसिंह जो पात्र है उसकी जीवन की व्यथा कथा के साथ साथ उसी के घेरे में पुरे नेपाली समाज की वास्तविकताओं का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है | गुमानसिंह का जीवन पूर्णतया संघर्षों से भरा हुआ होता है जिसके पीछे मूल में उसका आर्थिक रूप से विपन्न होना है | गरीबी की अवस्था के कारण ही काकती बाबु की बेटी मालती के साथ उसके रिश्ते का विरोध होता है | मालती असमिया है जबकि गुमानसिंह नेपाली छेत्री जाति से है जात इतना महत्त्व नहीं रखता जितना उसका आर्थिक स्तर ,यही आर्थिक स्थिति ही आपने संबंधों को जोड़ने और जोड़ने का कारण होता है | समाज में मान और प्रतिष्ठा का निर्धारण व्यक्ति की आर्थिक शक्ति ही निर्धारित करता है | वर्तमान समय इस मामले में दो कदम आगे निकल आया है | ऐसे में मन की चमक की बजाय जेब का भार कितना है उसे तौला जाता है | सम्बन्ध तभी तक होते हैं जब तक आपका एक स्तर होता है उसके अभाव में आपका अपना आपको पूछना छोड़ देता है |

4.1. 'ब्रह्मपुत्र' एवं 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' में बदलता सामाजिक परिवेश का तुलनात्मक अध्ययन

ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ मूलतः एक ही स्थान विशेष को लेकर लिखा गया उपन्यास है, परन्तु दोनों की कथावस्तु में अंतर है | दोनों में चित्रित कथा का केंद्र बिंदु लगभग एक है परन्तु उनका समय थोडा भिन्न है | देवेन्द्र सत्यार्थी ने ब्रह्मपुत्र उपन्यास में दिसांगमुख और उसके आस पास के गांवों को केंद्र मानकर अपनी कथा बुनी है | जिसमें उनका ध्यान आद्यांत उस समाज में रहने वाले सभी समुदायों की और समान दृष्टि से गया है | असमिया मीरी, नेपाली और मुसलमान इन समुदायों में मुसलमान तो अपने को असमिया समझते हैं तीनों जातियों की सामाजिक विशेषताओं को समग्रता में चित्रित करने की चेष्टा हुई है |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में समाज का जो चित्र उभर कर आया है वह विविधता से युक्त है उसमें वहां रहने वाली मीरी ,असमिया,नेपाली और मुसलमान जातियों का वर्णन है ,साथ रहने के क्रम में आपसी मतभेद और वैमनस्य की स्थिति भी है | इसका तात्पर्य यह नहीं कि इनमें आपसी सोहार्द दिखाई नहीं देता | मीरी जाति का साधन मीरी नेपाली जाति के प्रति सकारत्मक भाव नहीं रखते हैं,उनके मन में नेपाली जन के प्रति नफरत दिखाई पड़ता है |असं में मीरी असम के निवासी हैं वे यह भली भांति जानते हैं कि नेपाली नेपाल से पलायन कर असम को आए हैं इसलिए उनके मन में उनके प्रति आक्रोश है | नेपाल से आकर बसे हुए नेपाली आज असमिया धरती में दूध घी के व्यवसाय पर कब्ज़ा किए हुए हैं |उसने वहां मीरियों से जमीन खरीदना शुरू कर दिया था | इसलिए साधन मीरी नेपाली जाति के संबंध में कहते हैं,एक दिन यही नेपाली हमें हमारी अपनी धरती से उखाड़ फेकेंगे | ऐसे ही विचार सामाजिक विसंगतियों को जन्मने और फैलने का अवसर देते हैं | कभी कभार इससे समाज में अराजक तत्व सर उठाते हैं जिसके कारण मतभेद की स्थिति बढ़ जाती है,समाज की सामुदायिक संगठनों में तनाव की स्थिति आती है |जिसका लाभ अंग्रजी सत्ता और उसके पैरोकार पुलिस उठाते नज़र आते हैं |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में छेत्री जी का ध्यान ब्रह्मपुत्र के आस -पास निवास करने वाली नेपाली जातियों केन्द्रित हैं परन्तु नेपालियों का चित्रण करने के संदर्भ में आवश्यकता अनुरूप असमिया लोग और समाज भी व्यक्त हुआ है | यह उपन्यास एक तरह से नेपाली जाति का आख्यान है | उनके जीवन संघर्ष की कहानी है | इसमें नेपाली युवक गुमानसिंह ही कथा की धुरी में उपस्थित है | उसी की कथा कहना ही लेखक का उद्देश्य रहा है,उस कथा के क्रम में कई अन्य घटनाएँ,पात्र आएं हैं जो गुमाने की कथा,जीवन को पूर्णता देने के क्रम में हैं |

ब्रह्मपुत्र के आस पास रहने वाली जातियां असमिया भाषा बोलते हैं | सत्यार्थी जी ने उस क्षेत्र में निवास करने वाली मीरी,असमिया ,नेपाली और मुसलमान सभी जातियां को संपर्क भाषा के रूप में असमिया का प्रयोग करते हुए दिखाया है | ऐसे में साधन मीरी के मन में यह विचार आता है कि क्यों सभी असमिया का ही प्रयोग करते हैं ,मीरी भाषा का क्यों नहीं ? साधन मीरी के मन में इस तरह के विचार इस बात का संकेत है कि उन्हें अपनी भाषा की स्थिति संकटमय नज़र रही है | जातीय अस्मिता और भाषाई अस्मिता बोध इस उपन्यास में अभिव्यक्त है |

लीलबाहदुर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में इसी तरह का भाषाई अस्मिता का प्रसंग आता है जब नेपाली लोग अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं और असम में उसका कोई प्रावधान नहीं होता है | सभी के लिए शिक्षा की भाषा असमिया हैं | जब काकती बाबु मानवीर से गुमाने को विद्यालय भेजने की बात करते हैं तब मानवीर कहता है,असमिया पढ़कर उसे करना क्या है ? मानवीर जैसा अनपढ़ गरीब आदमी भी मातृभाषा की ताकत को जानता है असमिया उनकी भाषा नहीं है ,उसको सीखना इतना आवश्यक वह नहीं समझता है | जातीय समुदाय में भाषा सम्बन्धी संकट को महसुस किया जा रहा है |

सत्यार्थी जी की रचना ब्रह्मपुत्र में दिशांगमुख की समग्रता का चित्रण मिलता है जबकि ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में व्यक्ति विशेष को केन्द्रित करते हुए नेपाली समाज और उनकी संस्कृति का उल्लेख हुआ है | ब्रह्मपुत्र में स्वाधीनता पूर्व की घटनाएँ,प्रसंग का चित्रण अधिक है | देश की आज़ादी में सामाजिक और

राजनैतिक चेतना को विकसित होने के सारे अवसरों को इसमें विस्तार से दिखाया गया है |समाज में लोग एक दूसरे के प्रति जो मतभेद रखते थे उसे अंग्रेजी सत्ता के शोषण और अत्याचार ने सबको एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया था | अपने देश भारत माता या दिसांगमुख में अतुल जैसे पात्र कोई अंतर नहीं मानता था जबकि कोलकाता में रहते हुए देवकांत भारत माता और अपने देश की वास्तविकताओं से परिचित हो जाता है वह गाँव में अपनी साथियों के मध्य अपने क्रांतिकारी विचारों का परिचय देता है और भारत माता का निराश ,असहाय अवस्था का चित्रण कर सबको भी सोचने को विवश करता है | उसे ज्ञात हो चुका है कि भारत माता संकट में है ,दुखी और संत्रस्त है उसे मुक्त या उसके दुख हरण के लिए उसके पुत्रों को संघर्ष के लिए तैयार रहना होगा | सत्यार्थी जी अपने पात्रों के मध्य जो संवाद की सृष्टि करते हैं भारत माता के सम्बन्ध में इन्हीं संवादों के माध्यम से अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे लोग बहुत ही सीधे साधे लोग हैं ,ज्ञान का अभाव उनमें है | चेतना के स्तर पर वे इतने व्यापक फलक पर नहीं सोच सकते हैं | जब देवकांत भारत माता के दुःख तकलीफ का जिक्र आरती ,अतुल के समक्ष करता है तब आरती पूछती है यह भारत माता कहाँ रहती है ? वह कोलकाता में ही क्यों रहती है ? इससे स्पष्ट है इस समय तक भारत कहने से पुरे हिन्दुस्तान का बोध नहीं होता था | देश प्रेम और मातृभूमि का सम्बन्ध अपने गाँव और कस्बों तक को मान लिया जाता था |इससे गाँव वालों का सरल,सहज स्वभाव का परिचय मिलता है |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में ऐसे प्रसंग नहीं के बराबर हैं | उपन्यास की कथा में आज़ादी के बाद की घटनाएँ अधिक हैं ऐसे में भारत माता और देश प्रेम सम्बन्धी जागरूकता की स्थिति इसमें नहीं है | देश विदेश में घटने वाली घटनाओं का परिचय लोगों को संवादों के माध्यम से हो रहा है | आज़ादी के बाद देश का जो विभाजन हुआ ,पकिस्तान से कई हिन्दुओं को खदेड़ा गया जिसमें कई भारी संख्या में लोग इन इलाकों में भी आए,पशुचारण के लिए जो जमीने थी वहां भी अब लोग अपना घर बार बसाकर रहने लगे जिसके कारण नेपाली समाज जो पशु पालन किया करते थे उनके पास ग्रेज़िंग की जमीं की कमी होने लगी |जिसके कारण खेती किसानी करने वाले नेपाली लोगों के लिए यह एक भारी समस्या थी | वे समाज में निवास करने वाली जातियों में ऊंच नीच का भेदभाव खूब ज्यादा है | यह भेदभाव जातिगत आधार पर

बहुत नज़र नहीं आता इसमें आर्थिक मामला सर्वोपरि रहता है | आर्थिक रूप से मजबूत व्यक्ति जिस भी जाति का होगा उसके साथ समाज का रवैया ठीक रहता है ,समाज में ऊँची बड़ी सभी जातियां उसका मान - सम्मान करता है परन्तु जाति में उच्च हो पर आर्थिक रूप से संपन्न नहीं तो स्थिति बिलकुल दयनीय हो जाती है | अनाथ गुमाने जिसका अपना कहने वाला कोई नहीं था ,वह निर्धन ,नौकर का बेटा वह काकती बाबु की बेटी मालती के साथ प्रेम में पड़ता है | समाज और परिवार के द्वारा इस रिश्ते को स्वीकृति नहीं मिलती क्योंकि इसे अनमेल विवाह कह कर नकार दिया जाता है | समाज की झूठी मान मर्यादा के नाम पर बेटी की इच्छा और सपने दफ़न हो जाते हैं | जबकि सब जानते हैं कि गुमाने के पास अर्थ नहीं है परन्तु एक सच्चा प्रेमी और सच्चा आदमी का वह ह्रदय है जो हर लड़की का सपना होता है | उपन्यास के अंत में काकती बाबु गुमाने से इस बात को स्वीकार करते हुए कहता है,"मुझे मालूम है मालती की मृत्यु ने मुझे जितना तोडा है उससे दुगुने आधार पर तुम टूटे हो | मुझे तुम्हारे संबंधों की जानकारी थी ,दोष मेरा है | जाति,भाषा ,धर्म ,अपना पराया के फंदे में मैं फंसा हुआ था | जबकि ह्रदय को ह्रदय का संबंध चाहिए होता है | उसे किसी जाति,भाषा ,अपने पराए के बांध में बांधकर रखा नहीं जा सकता | इसी संकीर्णता के कारण सारा सर्वनाश हुआ है |" काकती बाबु मालती का विवाह गुमाने से करने में असमर्थ होते हैं ,उसका विवाह गुवाहटी के एक डॉ से कर दिया जाता है | जिसके साथ मालती अपने को किसी भी स्थिति में ढाल नहीं पाती है और अंत में आत्महत्या कर लेती है | बेटी के गुज़र जाने के बाद माँ का भी कुछ दिनों के बाद अंत होता है | बेटा हरेन अपनी पापों की सजा जेल में बैठकर काट रहा है | झटके में काकती बाबु का पूरा परिवार का नाश हो जाता है | परिवार बिखड कर रह जाता है | उसके पीछे कारणों की पड़ताल करें तो कहीं न कहीं गुमाने का रिश्ता मालती के साथ अस्वीकृति से सारी स्थिति गड़बड़ा जाती है |"वास्तव में हरेन नारी स्वछंदता का कट्टर विरोधी था|..फिर वह हीनताबोध से भी पीड़ित था |"

हरेन अपनी बहन मालती को शिक्षित देखकर जलता था ,वह पढ़ नहीं पाया था इसलिए अपनी बहन हो देखकर उसमें हीनता बोध घर कर रहा था | वह अपनी बहन को स्नातक करते हुए नहीं देख पा रहा था |गुमाने के प्रति इर्ष्या और अपने बहन के प्रति हीनताबोध में आकर हरेन ऐसी हरकत में आ गया था

जहाँ से उसके हाथ से बड़ा अपराध हो गया था जिसकी सजा काटने को वह विवश था |काकती बाबू का हँसता खेलता परिवार पल में स्वाहा हो गया था |

सत्यार्थी के ब्रह्मपुत्र उपन्यास में स्त्री बहुत सशक्त हैं | जूनतारा असमिया समाज की एक घरेलू स्त्री रूप में है परन्तु उसे अपना कर्तव्य का बोध है | अपने वैवाहिक जीवन और सामाजिक जीवन सम्बन्धी निर्णयों में जूनतारा अतुल का साथ देती है ,उसे परामर्श देती है ,उसके निर्णयों को बदल सकने का सामर्थ्य जुनतारा में रहता है |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में आरती का चरित्र बहुत ही उन्मुक्त बेबाक नज़र आता है | जो मछुए का काम करती है | धर्मानंदी अपनी बेटी आरती से कहते हैं कि तुम मेरे लिए बेटी नहीं बेटे समान हो | धर्मानंदी के लिए उसकी बेटी बेटा है ,आरती अपने पिता के साथ मछली पकड़ने जाती है ,हाट बाज़ार में मछली बेचते हुए भी आरती को कोई झिझक नहीं होता है | वह उसी भांति पिता के कार्य में हाथ बंटाती है जैसे बेटे अपने पिता के काम में |

मछुए का काम करती आरती को देवकांत से प्रेम है जो ब्राह्मण है ,आरती समझती है दोनों के मध्य कोई मेल नहीं है | पढ़ा लिखा देवकांत को एक से बढ़कर एक लड़की मिल जाएगी पर आरती उसके प्रेम में बंधी है पर उसे नहीं मालुम देवकांत उसका हो पाएगा कि नहीं ? धर्मानंदी दोनों के प्रेम सम्बन्ध से परिचित है पर उसे इस रिश्ते से कोई आपत्ति नहीं है | वह हर स्थिति में अपनी बेटी के हिस्से की खुशियों में साथ देने को तैयार है | ब्रह्मपुत्र और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास के स्त्री पात्र चित्रण में यहाँ बहुत अंतर दिखाई देता है | निम्न और छोटी जातियों में मान मर्यादा और झूठी शान की चिंता नहीं होती है ,उनके लिए उनका परिवार की ख़ुशी महत्वपूर्ण है जबकि मध्यम और संपन्न परिवार में यह ढकोसला इतना सर उठाता है कि उनके लिए समाज और सामाजिक मान प्रतिष्ठा बहुत मायने रखता है ऐसे में अपने ही बच्चों के साथ वे अन्याय कर जाते हैं |

समाज में स्त्री और पुरुष दो वर्ग हैं,परिवार और समाज में व्यवस्थित गति के लिए अनिवार्य है दोनों के मध्य उचित संतुलन हो | सत्यार्थी जी के ब्रह्मपुत्र उपन्यास में स्त्री शिक्षा,स्त्री की उन्मुक्त दशा ,सामाजिक राजनैतिक जीवन में उसकी सक्रियता को बहुत सुन्दर ढंग से रचनाकार ने अभिव्यक्त किया है |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में काकती बाबु शिक्षा के लिए अपने आस -पास के क्षेत्र में जागरूकता लाने का प्रयास करते हैं | अपनी बेटी मालती के लिए आगे की शिक्षा की व्यवस्था करते हैं उसी प्रसंग में वे कहते हैं,"हमारी असमिया बेटी को भी विदुषी होना चाहिए | तब हमारी जाति की उन्नति होगी | स्त्री को पीछे रखकर एक जाति कभी आगे बढ़ नहीं सकता |" स्त्री शिक्षा और स्त्री स्वतंत्रता के प्रबल पैरोकार काकती बाबु रहे हैं |जबकि ब्रह्मपुत्र उपन्यास में राखाल काका एक स्थान पर कहते हैं,"स्त्री को भी उसी प्रकार सिधाने की जरुरत है जैसे हथिनी को |दोनों ही उपन्यास में स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में अंतर्द्वंद्व हैं ,काकती बाबु स्त्री शिक्षा को महत्त्व देते हैं वहीँ हरेन जैसे पुरुष पात्र हैं जो स्त्री को किसी भी तरह की आज़ादी देने का समर्थन नहीं करते थे |सत्यार्थी के ब्रह्मपुत्र में आरती और जुनतारा के चरित्र चित्रण के माध्यम से स्त्री के सशक्त चरित्र को दर्शाया है वहीँ राखाल काका स्त्री को सिधाने की जरुरत की बात करते हैं | पितृसत्ता का बोध हरेन और राखाल काका के चरित्र से झलकता है | ब्रह्मपुत्र उपन्यास में धनसिंह की दूकान पर आरती की चर्चा छिड़ती है,उसे 'बिन सिधाई हथिनी' 'जंगल की हिरनी'कहकर उसकी बात उछाली जाती है |लड़की होकर आरती का मछली पकड़ने जाने से भी लोगों को आपत्ति होती है,उसका साड़ी पहनकर चलना भी उन्हें नहीं भाता है | वे कहते हैं,"आरती दिसांगमुख का नाम डूबाएगी |"

ब्रह्मपुत्र उपन्यास की अपेक्षाकृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में स्त्री दृष्टिकोण में व्यापकता दिखाई पड़ती है | वहां स्त्री को बन्धनों में बांधकर रखने की बात नहीं होती है | स्त्री अपने जीवन को अपने ढंग और स्तर से जी सकने की अवस्था में दिखाई देती है |

4.2. . 'ब्रह्मपुत्र' एवं 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास की राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन

ब्रह्मपुत्र

राजनीति मानव जीवन को संचालित करने वाला अहम् मुद्दा होता है | समाज के उत्थान पतन में उसकी भूमिका का महत्वपूर्ण रहता है | सत्यार्थी जी का ब्रह्मपुत्र में राजनीति शुरू से अंत तक सक्रीय है | राजनैतिक स्थिति से उत्पन्न विसंगतियों से वे जूझते नजर आते हैं,नेपाली लोगों को केवल शरणार्थी के रूप में देखा जा रहा है | केवल डिब्रुगड और दरंग जिले के दलवीर लोहार और विष्णुलाल बाबू का नाम नागरिक होने का प्रमाण मिलता है |ब्रह्मपुत्र उपन्यास में लोग अंग्रेजी शासन की क्रूरता,अत्याचार -शोषण का शिकार होते हुए दिखाया गया है | अपने शासन को बनाये रखने के लिए अंग्रेजों ने पुलिस और फ़ौज का सहारा लिया है जोअपने ही स्वदेशी व्यक्तियों को अपने स्वार्थ के लिए विदेशी ताकत का साथ दे रहे थे | सत्यार्थी ने अपने उपन्यास में यह स्पष्ट किया है और उसे अपने पात्रों के चरित्र के माध्यम से पूर्णतया बताने का प्रयास किया है कि आरम्भिक दौर में असमिया ,नेपाली ,मीरी जन में देश प्रेम और जागरूकता की स्थिति नहीं थी | वे राजनैतिक स्तर पर सचेत नहीं थे | वे अपनी समस्याओं में ही उलझे हुए थे लेकिन पुलिस और फौज की हरकत ने उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ जाने को विवश किया |अंग्रेजों के खिलाफ एक बगावत की स्थिति ब्रह्मपुत्र के आस पास की सभी बस्तियों में नज़र आ रही थी जो निरंतर उतरोत्तर विकसित हो रहा था |कोई भी घटना वैयाक्तिक नहीं थी पर पुलिस और फौज वैयाक्तिक रूप में लोगों को प्रताड़ित कर रही थी | देवकांत के क्रांतिकारी और प्रशासन विरोधी होने की खबर पाकर नारायण दारोगा ने आरती और उसके पिता के साथ खूब मार पीट की | अंग्रेजों के अत्याचार से भी दोनों का साहस नहीं डगमगाया दोनों ने रत्तीभर भी देवकांत के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा | देश भक्ति और देश प्रेम जैसे व्यापक भाव बोध से परिचित न होने पर भी दोनों इस बात से परिचित हो चुके थे कि भारत माता मुश्किल में है जिसके दुःख हरण करने के निमित्त देवकांत ने एक राह पकड़ी है |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यह उपन्यास पूर्णतया राजनैतिक चेतना से ओत प्रोत हैं | जिसका बहुत यथार्थ स्वरुप में अभिव्यक्ति हुई है | ब्रह्मपुत्र उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति का विस्तार से वर्णन मिलता है | देश कैसे संघठित हुआ ,कैसे उनमें धीरे धीरे राजनैतिक जागरूकता आई,उसे परत दर परत लेखक ने खोलने की चेष्टा की है | देश और दुनिया की राजनीति कैसे गाँव वालों की राजनीति को गति दे रही थी ,उनकी चेतना को जगा रही थी ,सबका विस्तृत वर्णन उपन्यास में मिलता है जबकि आज़ादी के बाद की स्थिति का वर्णन बहुत ज्यादा नहीं होता उससे पूर्व उपन्यास का अंत हो जाता है | उपन्यास सिर्फ इस ओर संकेत भर करता है कि बहुतों के संघर्ष ,त्याग के परिणाम सवरूप प्राप्त आज़ादी का स्वरूप वह नहीं था जैसा उन्होंने कल्पना की थी | आज़ादी से पूर्व के कई कानून यथावत बने हुए थे जिसका विरोध गाँव वालों ने किया था |प्राप्त आज़ादी के इस स्वरूप से उनके भीतर मोहभंग की स्थिति देखी जा सकती है |

देवकांत और अतुल के सहारे यह राजनैतिक चेतना नीरद,आरती ,धर्मानंदी,शिकारी गाँव के जादू और देवकांत के अन्य सहयोगियों के साथ विस्तार पाता जाता है | अंत में वे अपनी भारत माता या दिसांगमुख को मुक्त करने में कामयाब हो जाते हैं |

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में राजनैतिक चेतना लोगों को कर्तब्य बोध का अहसास कराने की दृष्टि से हुआ है | राजनैतिक फलक जितना विस्तृत परिप्रेक्ष्य में ब्रह्मपुत्र में उभरता है वैसा विस्तार नेपाली रचना क्षे ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में देखने को नहीं मिलता है | राजनीति और उसके प्रति सकारात्मक दृष्टि लेकर लड़ने वालों की संख्या यहाँ कम हैं | चुनाव का दृश्य आया है जो केवल कुर्सी की लालसा लिए हुए आता है | ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में आज़ादी के पश्चात की स्थिति का चित्रण अधिक हुआ है इसमें राजनीति का उस तरह छल प्रपंच नहीं हैं ,कई नेताओं का उल्लेख हुआ है जो देश सेवा या समाज सुधारक की भूमिका में है |कई नेता ऐसे भी हैं जो नेपाली जन के हित में कार्य करते हैं परन्तु राजनीति के घिनौने जाल में वे अपने को असफल पाते हैं उनमें वो धाक ज़माने की ताकत नहीं है उनके जैसे सीधे साधे व्यक्ति का सुनने वाला आज की

राजनीति में देखने को नहीं मिलता | सत्यार्थी जी ने अंचल जीवन समग्र विशेषताओं को उजागर करते हुए भी उसकी राजनैतिक स्थिति की ओर विशेष ध्यान दिया है |दिशांगमुख के लोगों में अंग्रेजी साम्राज्य की दासता से मुक्त करने की अदम्य चेतना, उत्साह, एकता की लहर उपन्यास में चित्रित किया है | देवकांत ,अतुल ,राखाल काका ,जादू ,फुकन जैसे लोग थे जो अब अंग्रेजी सत्ता का खुलकर विरोध करने के लिए तैयार थे तो वहीँ गोपीनाथ दरोगा जैसे लोगों का चित्रण भी इस उपन्यास के अंतर्गत हुआ है जो अत्याचारी, शोषक की भूमिका में दिखाई अवश्य पड़ते हैं परन्तु भारतीयों के व्यवहार से उसका दिल पसीज जाता है और वह अंत में प्रशासन के खिलाफ जाकर देवकांत और गाँव वालों का समर्थन करता दिखाई पड़ता है | गोपीनाथ दारोगा अपने वचन का पक्का निकलता है वह अंत तक सत्ता के भेजे फौज से भिड़ते हुए देवकांत की रक्षा करता है परन्तु अंत में देवकांत और दारोगा गोपीनाथ इस संघर्ष में मारे जाते हैं |

क्षेत्री के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ राजनैतिक स्थिति का चित्रण बहुत व्यापक फलक पर नहीं मिलता है |आज़ादी के बाद की स्थिति को बहुत ज्यादा विस्तार मिला है | देश की आज़ादी के संघर्ष में जो कुछ भी देश के विभिन्न हिस्सों में घटता था उसका परिचय उन्हें होता रहता था जिसके कारण किसी आन्दोलन की सफलता उन्हें प्रसन्न करता था तो भारतीयों का पराजय उन्हें निराश करता था |

आज़ादी के बाद देश में जो परिवर्तन आया उससे उनमें मोहभंग की स्थिति देखी जाती है | आज़ादी के बाद के दृश्य को देखने की जो उत्साह उनमें विद्यमान थी वैसा कुछ उनके नसीब में नहीं आया था |देवकांत और अतुल जैसे पात्रों की तुलना हम गुमाने के साथ कर सकते हैं | देश की आज़ादी के लिए जो उत्साह ,जोश देवकांत में दिखाई पड़ता है वैसा गुमाने के चरित्र में भी नज़र आता है | देवकांत बहुत आसानी से अपने आस पास के लोगों से समर्थन प्राप्त कर सकते हैं जबकि गुमाने के साथ स्थिति बहुत विकट है | समाज और राजनीति दोनों ही स्तर पर नेपाली समाज सजग सचेत नहीं हैं ,नेपाली जन अपना भला -बुरा समझने की स्थिति में नहीं होते हैं | जिसके कारण कई स्थानों में गुमाने को निराशा की स्थिति का सामना करना पड़ता है |

अतुल के लिए अपने गाँव की आज़ादी बहुत महत्वपूर्ण है ,वह स्वयं किसान है परन्तु किसानी के साथ वह समाज में परिवर्तन की दिशा में पहल भी करता है और इस कोशिश में वह ,राखाल काका और नीरद के साथ जेल की हवा भी खाता है | देश और अपने समाज की समस्याओं के निदान के लिए वह हाथ पैर मारने को तैयार हो जाता है |जबकि ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में गुमाने की स्थिति भी वही है ,वह देवकांत की भांति देश पर कुर्बान होने के लिए फौज में भर्ती होता है और देश सेवा के कार्यों से जुड़कर अपने जीवन को सार्थक करने की दिशा में आगे बढ़ता है |

वहीँ ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में कथा के अंत अंत टाक आते आते गुमाने अपना पूरा जीवन नेपाली समाज में सजाता,उनकी समस्याओं के निदान में अपने को होम कर देता है | नेपाली समाज की जीवन स्तर को उठाने ओर उनकी समस्याओं से जूझने के लिए वह अपने को पूर्णतया तैयार कर लेता है | एक तरह से वह समाज सेवक हो जाता है |

अत: देखा जाये तो दोनों उपन्यासों में क्रन्तिकारी भावना प्रखर रूप से उभरकर सामने आता है | सत्यार्थी के यहाँ अतुल, नीलमणि, देवकांत जैसे व्यक्ति क्रांतिकारी बन अंग्रेजों के खिलाफ अनेक लड़ाइयाँ लड़ रहे थे | परन्तु क्षेत्री के यहाँ केवल गुमाने के में यह भावना देखने को मिलती है | ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में केवल चुनावी मैदान तक ही लोगों को आते जाते देखा गया है उसके बाद नेता दृश्य से गायब हो जाते थे | गुमाने नेपाली समाज की नागरिकता की समस्या ,मातृभाषा में शिक्षा ,नेपाली लोगों की बेकारी की समस्या अन्य अनेक समस्याओं की समाधान के लिए संघर्षरत रहते हैं |

ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में एक बात समानता देखने को मिली | दोनों में लोग सरकारी सुविधाओं से वंचित होते हुए दिखाई दिये | ब्रह्मपुत्र में लोग स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनेक आन्दोलन करते हुए दिखाई देते हैं और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में केवल स्वतंत्रता के पश्चात अपनी समस्या पूर्ति के लिए सरकार से लड़ाई लड़ रहे हैं यह सरकार कोई विदेशी नहीं उनके अपने लोग हैं | लेकिन जिनकी समस्याओं से उनके कानों में जूं तक नहीं रेंगती हैं | सत्यार्थी के ब्रह्मपुत्र स्थानीय लोगों को कई कर देने पड़ते थे और जिसका विरोध वे

प्रशासन से करते हैं और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में ब्रह्मपुत्र नदी के प्रकोप से विचलित लोग यहाँ से वहां पलायन करते जाते हैं | उनका पुनर्वास का कोई ठौर ठिकाने की व्यवस्था सरकार नहीं करती है जबकि नेपाली जन या असमिया सभी बाढ़ की समस्या से ग्रस्त होकर स्थान बदलते रहने को आदि हो चुके है और सरकार उनके पक्ष में कोई निर्णय नहीं करती है | वे अपने जीने मरने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है | सरकार को केवल उनके वोट और पैसे से मतलब है उसके अलावा जनता की तकलीफे उन्हें परेशान नहीं करती हैं |

४.३ 'ब्रह्मपुत्र' एवं 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास की सांस्कृतिक तुलनात्मक अध्ययन

ब्रह्मपुत्र

मानव जीवन में सस्कृति का बहुत महत्व है | संस्कृति से ही संस्कार बनते है और मानव की जीवन का कर्त्यव्य बोध कराता है | ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों ने अनेक संस्कृति के संगम को उद्घाटित किया गया है | ब्रह्मपुत्र उपन्यास में अनेक जातियों का उल्लेख मिलता है और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में कई संस्कृतियों को दिखाया गया है | नेपाली जाती असम में रहकर भी नेपाली और असमिया संस्कृति का पालन कर रही है | ब्रह्मपुत्र उपन्यास और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ दोनों ही उप्नायासों में सांस्कृतिक संवाद देखने को मिलता है | दोनों ही उपन्यासों में संस्कृतियों का सामंजस्य दिखाई देता है | वे एक दुसरे के पर्व उत्सव को हर्ष से मानते दिखाई देते हैं | मीरी जन जो ड्रूर पूजा करते थे उसमें मखना की मौत के बाद उस पूजा के दरवाजे सबके लिए खोल दिए गए थे जबकि पहले उस पूजा में बाहर वाले सम्मिलित नहीं हो सकते थे |

स्वाधीनता के लिए देश में अनेक आन्दोलन चलाये जा रहे थे | धीरे-धीरे देश की स्थिति में छोटी-मोटी परिवर्तन हो रहा था | दूसरा महायुद्ध समाप्त हो चुका था, साथ ही साथ हिटलर शासन भी ख़त्म हो गया था | अंग्रेजों द्वारा भारत को दो खण्डों में विभाजित कर दिया गया था | इससे लोगों को अनेक यातनाएं

झेलना पड़ा था | अंग्रेज बार-बार भारतीय लोगों की संवेदना पर वार कर रही थी | इस स्थिति में ब्रह्मपुत्र उपन्यास में वैष्णव धर्म एवं अनेक जाति अपने-अपने धर्म को बचाने में लगे हुए थे | विशेष रूप से वहां पर वैष्णव धर्म का ही बोलबाला देखने को मिलता है | वहीँ ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में भारत पाक के विभाजन से लोग भयाक्रांत स्थिति में विभाजन का मुख्य कारण धर्म मानकर चल रहे थे | पूर्वी नेपाल के पहाड़ी इलाकों से आये लोग वहीँ के धर्म संस्कृति को अपना रहे थे | वैसे देखा जाये तो दोनों उपन्यासों में हिन्दू धर्म का ही बोलबाला दीखता है |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में रीति-रिवाज और संस्कृति को व्यापक फलक पर चित्रित किया गया है | वहां अनेक जातियां अपनी संस्कृति को मानते दिखाई दे रहे हैं |असमिया बहुल समाज में नेपाली लोग असमिया संस्कृति के प्रभाव में दिखाई देते हैं | वे लोग दीपावली, दशहरा, गौशाला की पूजा, माघ संक्रांति , ग्रामीण देवताओं की पूजा,विवाह आदि का चित्रण है जो एक तरह से दोनों उपन्यासों में दिखाई पड़ता है | सत्यार्थी के यहाँ एक भिन्न संस्कृति फाख्ताएं का उल्लेख मिलता है जिसका सम्बन्ध पुरखों की पूजा और उनकी आत्मा की शान्ति के निमित्त पूजा से रहता है |

ब्रह्मपुत्र और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में खान-पान में अंतर दिखाई देता है | जहाँ सत्यार्थी के यहाँ लोग मांस, मदिरा जैसे पदार्थों का सेवन करते नजर आये | पर्व त्योहारों का विस्तृत वर्णन उसकी सम्पूर्ण विशेषताओं के साथ होता नज़र आया वैसा ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में नहीं है | बहुत ही कम अवसर आए हैं जहाँ क्षेत्री जी ने विस्तार से पर्व और लोक से सम्बन्धी चीजों का विस्तार दिया हो | कई स्थानों में उन्होंने पर्व के आगमन की सुचना भर दी है अन्न से बनी हुई खाद्य पदार्थों का | जैसे की सत्यार्थी ने बोहाग बिहू पर ‘लाओ पानी’ जो चावल के भाप से बनी मदिरा पीकर लोग नृत्य करते हैं का उल्लेख किया है एवं क्षेत्री चावल की आंटे से बनी सेल रोटी एवं अन्य खाद्य पदार्थों का उल्लेख हुआ है | इससे रहन- सहन में भी अंतर देखने को मिलता है | सत्यार्थी जी ने अपने उपन्यास में स्थानीय समाज द्वारा मूलतः खेती,पशुपालन

के व्यवसाय के साथ मछवारण, नावरिया, चाय पत्ती का व्यापार,रेशम की कारीगरी आदि को जिक्र किया है और क्षेत्री ने केवल गौशाला एवं कृषि व्यवासाय से जुड़े लोगों का ही चित्रण किया है |

दोनों उपन्यासों के अध्ययन में धर्म संस्कृति में थोड़ा सा अंतर देखने को मिलता है | उसका कारण यह था दोनों के यहाँ भिन्न समाज के लोग हैं | इसलिए भिन्न समाज एवं पृथक संस्कृति का बोध होता है | सत्यार्थी ने अनेक जातियों के लोगों का चित्रण किया है और क्षेत्री केवल नेपाली समाज को ही केंद्र में लेकर लिखता है | उन्होंने वहां पर केवल अन्य जातियों के होने का उल्लेख भर किया है पर उन लोगों के धर्म संस्कृति का चित्रण विस्तार में नहीं हुआ है | दोनों उपन्यासों में कई लोग आध्यात्म में विश्वास कर धर्म ग्रंथों को पढ़ लोगों को उपदेश देते नज़र आते हैं | लोगों को सदाचारी एवं मूल्यों का बोध कराने के लिए कई धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करते दिखाई पड़ते हैं जिसमें क्षेत्री जी के उपन्यास में काकती बाबु का चरित्र है तो सत्यार्थी जी की कथा में भगत जी | दोनों उपन्यासों के लोगों की आध्यात्म चिंतन में एक बात समान देखने को मिलती है,प्राय:आध्यात्मिक लोगों में 'धर्मो रक्षति रक्षित:' (अर्थात- यदि हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा करेगी) वाली भावना दिखाई देती है और यह बात पूर्ण रूप से सत्य है | जहाँ हम धर्म का उल्लंघन कर आगे बढ़ते हैं वहीँ से हमारी जीवन पतन की ओर जाने लगता है | धर्म का सम्बन्ध कर्तव्य बोध से है कर्मकांड से नहीं है भगत जी,काकती बाबु ने अपने चरित्र को सदैव शुद्ध रखा और उन्होंने अपने आस -पास के लोगों को वाही मूल्य देने की चेष्टा की है |जबकि ब्रह्मपुत्र उपन्यास में लेखक स्वयं अपनी दार्शनिक विचारों को रखने यहाँ वहां उपस्थित रहते हैं परन्तु देवकांत, अतुल,राखाल काका ,नीरद जैसे पात्र अपने धर्म से परिचित होते दिखाई पड़ते हैं और उसके निर्वाह में सक्रीय होते नज़र आते हैं |

4.4. 'ब्रह्मपुत्र' एवं 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास में मूलभूत सुविधाओं हेतु जूझता अंचल का तुलनात्मक अध्ययन

अंचल एवं आंचलिक जीवन में प्राय: ग्रामीण परिवेश आर्थिक मामले में कमजोर होती है | यह इसलिए होता है शहर से गाँव में सुविधा पहुँचने में काफी समय लगता है | जिस समय ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाऊ में परिवेश का चित्रण किया गया वह स्वाधीनता से पूर्व एवं स्वतंत्रता के कुछ समय पश्चात तक है | उस समय लोगों की ऐसी स्थिति था अंग्रेजों की शासन काल के अंतिम चरण एवं कांग्रेस सरकार की शुरूआती कार्य काल में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था | जिस सपने को सजाये स्वतंत्रता संग्राम लड़े जा रहे थे स्वतंत्रता पश्चात भी कांग्रेस सरकार ने स्थिति को यथावत रखा ,कई कानून पूर्व के बने रहे,लोगों के सपने धुंधले हो गए थे |

ब्रह्मपुत्र और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में मुलभूत समस्याओं से जूझते स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो इस संदर्भ में कहा जा सकता है ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में मानवीर -जुरेली का परिवार के संघर्ष से कथा का आरम्भ होता है | जीवन की छोटी छोटी जरूरतों को पूर्ण करने का सामर्थ्य उनमें नहीं है | नेपाली समाज की आर्थिक स्थिति की दयनीयता और उनकी असहाय अवस्था का चित्रण क्षेत्री जी ने किया है | नेपाली समाज की जीवन की व्यथा का अंकन जिस तरह क्षेत्री जी के उपन्यास में उभर कर आता है वैसा सत्यार्थी के यहाँ नहीं है उसके पीछे बहुत बड़ा कारण क्षेत्री जी जातीय और भावनात्मक स्तर पर इस जाति से जुड़े हैं जबकि सत्यार्थी जी का संबंध नेपाली समाज से न होने के कारण बहुत ही तटस्थ भाव से उन्होंने असमिया क्षेत्र में बसने वाले लोगों की कथा कही है | जिसमें नेपाली जाति भी एक है |

दोनों ही उपन्यासों में जीवन चलाने के लिए स्थानीय लोगों द्वारा जो व्यवसाय किया जा रहा था उसमें भी थोडा अंतर देखने को मिलता है | क्षेत्री जी का ध्यान नेपाली व्यवसाय की ओर ज्यादा गया है जहाँ वे किसानी और पशुपालन के व्यवसाय से जुड़े थे जबकि सत्यार्थी के उपन्यास में नावरिया ,मछुए

,कारीगरी ,कुटीर उद्योगों का जिक्र सबका चित्रण विस्तार से आया है | अंग्रेजों के आगमन के साथ भारतीय उद्योगों की स्थिति में जो परिवर्तन आया उसका बहुत ही मार्मिक चित्रण चित्ताप्रसाद के माध्यम से उपन्यास में अभिव्यक्त हुआ है जबकि क्षेत्री के उपन्यास में ऐसी स्थितियों का कहीं चित्रण नहीं मिलता है |

क्षेत्री के उपन्यास में नेपाली समाज पूर्णतया संघर्ष में लगे रह जाते हैं ,इसमें कई वर्गों का चित्रण हुआ है | जिसमें महाजन या सामंत जैसे लोग हैं जिनके शोषण से गुमानसिंह उर्फ़ गुमाने को कभी मुक्ति नहीं मिलती ,वह महाजन किसी न किसी रूप में उसके जीवन में व्यवधान बनकर उसका अत्याचार शोषण करता रहता है | वह अपने नौकरों का ऐसे शोषण करता है कि सामने वाला समझ भी न पाए और वह उसकी जड़े उखाड़ देता था | गरीबों की गरीबी का नाजायज फायदा उठाना इन महाजनों का काम था | क्षेत्री के उपन्यास में डायरी महाजन के नाम से लोकप्रियता प्राप्त महाजन नेपाली होते हुए भी अपने ही नेपाली लोगों का आर्थिक और मानसिक शोषण किया करता था | वह अपना लाभ देखता था ,लोगों को बहला फुसलाकर अपने काम में इस तरह लोगों को फांस लेता था कि सामने वाला अपनी बर्बादी को होते भी समझ नहीं सकता था |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में अत्याचार और शोषण का ऐसा दृश्य देखने को नहीं मिलता है | वहां अंग्रेजी सत्ता सर चदकर बोल रही है जिसके खिलाफ जनता आवाज़ उठाती है जबकि क्षेत्री जी के उपन्यास में जनता यह समझ ही नहीं पाती कि उनका भला बुरा क्या है गुमाने जैसा पात्र उनके हक़ में आवाज़ उठाता है पर नेपाली समाज उसे ही अपना शत्रु समझ बैठता है | आर्थिक रूप से कमज़ोर और शैक्षिक रूप से पिछड़े होने के कारण वे अपना भला बुरा नहीं सोच पाते हैं |

क्षेत्री जी के उपन्यास में गुमाने का जीवन संघर्षों से युक्त है ,गरीबी मानवीर का दामन छोड़ने का नाम नहीं लेती है |जीवन के अंत तक वे अपनी सामान्य आवश्यकताओं में ही उलझे रह जाते हैं | गुमाने बाद के दिनों में अपना जीवन स्तर कुछ उठाने में कामयाब होता है परन्तु आर्थिक रूप से कमज़ोर और

महाजन के नौकर का बेटा होने के कारण उसकी यह छवि कभी धूमिल नहीं होती और महाजन उसे उसी रूप में सदैव अपेक्षा भी रखता है |

जबकि ब्रह्मपुत्र में आरती और धर्मानंदी का जीवन कष्टमय होता है | मछलियाँ पकड़कर बेचना उनका व्यवसाय होता है |जिस दिन मछली पकड़ में आ जाए उस दिन पेट भर जाए जिस दिन कोई व्यापार नहीं होता उस दिन फिर भूखों की अवस्था उनकी होती |

बादल नावरिया भी आर्थिक रूप से बहुत कमज़ोर पात्र के रूप में कथा में मौजूद हैं जहाँ अंग्रेजी सरकार ने नदी के घाट में स्टीमरकी व्यवस्था कर दी है | मशीन के आ जाने से बादल नावरिया के पेट को भी लात पड़ जाता है | उसकी आर्थिक स्थिति और ज्यादा शोचनीय हो जाती है |

अंग्रेजी सत्ता के आने से भारतीय परिप्रेक्ष्य में जो भी व्यापार और उद्योग धंधे थे उन सबको नज़र लग गयी है | सरकार ने अपने व्यापार को विकसित करने और यहाँ के कुटीर उद्योगों को नष्ट करने का जो निर्णय लिया था उससे देश की भारी जनसँख्या बेरोजगार और बेकारी की समस्या से जूझ रहे थे जिसका चित्रण बहुत ही मार्मिक तरीके से ब्रह्मपुत्र में सत्यार्थी जी ने उल्लेख किया है |

ब्रह्मपुत्र में समय -समय पर आने वाली बाढ़ की समस्या का चित्रण दोनों ही उपन्यासों में देखने को मिलता है जिसमें भारी संख्या में जान माल की क्षति होती थी जिसकी भरपाई करने वाला कोई नहीं होता था | पानी के बढ़ जाने से लोगों को अन्य सथानों में जाकर अपना बसेरा बसाना होता था जिसके कारण पलायन की समस्या से उन्हें जूझना पड़ता था | क्षेत्री के उपन्यास में पलायन की इस समस्या में जूझते लोग अन्य स्थानों में जाते हैं परन्तु वहां पहले से ही जमीं की कमी रहती है ऐसे में नए आने वालों को उस क्षेत्र के लोग स्वीकार नहीं करते हैं उनके बीच बहुत ही तनाव की स्थिति बनी रहती है | सरकार ऐसी स्थिति में भी चादर ताने सोते रहते हैं ,नेपाली समाज की कई दरख्वास्त पर भी वे उनेक हितार्थ कुछ करने में असमर्थ होते हैं | असमिया क्षेत्र में रहने वालों के लिए ब्रह्मपुत्र रक्षक है तो वही भक्षक भी कभी कभार बन जाता है जो उनकी सारी खुशियों को ग्रसने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं |

ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य का तुलनात्मक अध्ययन

उपन्यास रचना में कथ्य के साथ शिल्प की भूमिका अहम् रहती है | मूल कथ्य को अधिक से अधिक संप्रेषणीयता से युक्त करने की चेष्टा में अनुकूल शैली का चयन होना अनिवार्य होता है | जीवन निरंतर गतिशील है इसी भांति उपन्यास लेखन में कथ्य और शिल्प में भी परिवर्तन निरन्तर होता रहता है | प्रेमचंद पूर्व उपन्यास जहाँ शिल्प पक्ष को बहुत महत्त्व देता था वहीं प्रेमचंदोत्तर युग में उपन्यास में व्यक्ति निहित समाज का विश्लेषण होने के कारण उसमें शिल्प की कलात्मकता को त्यागते हुए जीवन सत्य को प्रधानता दी जाने लगी | लेकिन इस सत्य से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि रचना में कथ्य और शिल्प दोनों का सशक्त होना आवश्यक है दोनों में एक की कमजोरी रचना की प्रभाव को कम कर देता है वहीँ उसकी संप्रेषणीयता में भी बाधा पहुँचती है |आंचलिक उपन्यास में अंचल जीवन के क्रियाकलापों पर आधारित रचना होती है और जैसे जैसे उसके जीवन में परिवर्तन आता जाता है उसके लेखन का शिल्प भी नवीन रूप धारण करता चलता है | आंचलिक उपन्यास की एक बड़ी विशेषता होती है कि इसमें कथा की केन्द्रीयता नहीं होती है ,कई कथाएं बिखड़ी अवस्था में आती है |इसमें परम्परागत उपन्यासों की भांति नायक को खोजना व्यर्थ होता है क्योंकि इसमें अंचल ही नायक की भूमिका में होता है | इस अंचल की कथा को समग्रता में व्यक्त करने वाली शिल्प बहुत महत्वपूर्ण होता है | इसकी भाषा ही उपन्यास को जीवंत करता है | इसमें प्रयुक्त भाषा ,उसके संवाद के तेवर ,शब्द प्रयोग का अध्ययन जरुरी होता है |

5.1 भाषागत वैशिष्ट्य

भाषा भावों और विचारों की सफल और सूक्ष्म अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है | भाषिक संरचना की विशिष्ट अभिव्यक्ति शैली से होती है |उपेक्षित अंचलों की कथा कहते हुए रचनाकारों ने जनभाषा-बोलियों को साहित्यिक गरिमा प्रदान की गयी |निष्प्राण होती साहित्यिक भाषा के स्थान पर

आंचलिक रचनाओं में अंचल की भाषा का प्रयोग होता है जिसके कारण अंचल पूरा जीवन हो जाता है |किसी भी रचना की शक्ति उसकी भाषा और शैली होती है जिससे वह अपनी पहचान देती है | पात्र अपने भाषा प्रयोग के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का परिचय देती है | रचनाकार उस अंचल में प्रयुक्त बोलियों के अलावा कहावतें ,मुहावरों,लोकगीतों का प्रयोग भी करते हैं |

देवेन्द्र सत्यार्थी पंजाब के रहने वाले एक बहुभाषी लेखक हैं | ब्रह्मपुत्र उपन्यास हिंदी भाषा मे लिखा हुआ उपन्यास है परन्तु उन्होंने आंचलिक बोलियों का सुन्दर प्रयोग किया है | भाषा कौशल की दृष्टि से इसमें लेखक की विशिष्ट भाषा प्रयोग की क्षमता झलकती है | पात्रगत संवादों के माध्यम से भाषा का वैशिष्ट्य उभरकर आया है |

सत्यार्थी जी ने ब्रह्मपुत्र में सरल सहज हिंदी भाषा का प्रयोग किया है | विषय के अनुकूल भाषा की प्रकृति बदली हुई नज़र आती है | सरसपूर्ण प्रेम की व्यंजना में रचनाकार की भाषा उसी में ढल जाती है वहीं दार्शनिक धीर गंभीर प्रसंग को भी रचनाकार ने बहुत सरस भाषा में कहने का सफल प्रयास किया है |

अतुल कहता है,"एक बीज वे होते हैं,जो खेत में बोए जाते हैं,फसल उगती है ,बालियाँ पकती हैं ,फसल कटती हैं |एक फसल वह है जिसे नए विचारों की फसल कहेंगे | नए विचार भी नए बीजों के समान बोए जाते हैं |"

लेखक असमिया समाज और उसके आस पास का चित्रण करता है इसलिए उनके द्वारा असमिया और नेपाली भाषा के बोलचाल के शब्दों का धडल्ले से प्रयोग हुआ है |

"प्रत्येक घर का भराल नए धान से भरपूर था|"

"भक्ति और शान्ति तुम अपनी ही ज्ञान -गुदड़ी में छिपाकर रखना|"

"अब तो नाव खेते खेते ही सारी फुटानी (नेपाली शब्द -तेवर)निकल जाती है,देवता |"

उपन्यास में आरती और देवकांत के मध्य के संवाद की भाषा में प्रेम और उलाहना है परन्तु भाषा का प्रभाव मन को गुदगुदाहट से भर देता है | रचनाकार ने कई असमिया अंचल में प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग अपनी कथा कहने के क्रम में किया है जो निम्नलिखित हैं-मनोता, आमी, गाछ, बखार, भराल, लाओ, निनी, मोमाई, डांगर, नाही, बैठा, भृकुटी, पथार, आमार आदि शब्द विशिष्ट प्रादेशिक भाषा की शब्दावली हैं |

प्रसंग के अनुरूप जहाँ अंग्रेजी शब्दों की आवश्यकता हुई वहां उसका प्रयोग करने से नहीं हिचके हैं | उपन्यास में अंग्रेजी शासन का राज भारत में चारों तरफ है इसलिए जहाँ सत्ताधारी अँगरेज़ आये हैं वहां उनकी भाषा अंग्रेजी हो गयी है | जहाँ कहीं अंग्रेज हिंदी बोल रहे हैं वहां उनके उच्चारण में अंतर कर दिया गया है | उनके बोलने के प्रवाह और तान में भी अंतर आ जाता है | जैसे बैकग्राउंड, अंडर एस्टीमेट, एक्सक्यूज, डिप्टी कमिशनर, प्रेस्टीज, स्लेव,डेस्टिनी, स्टीमर, मिसेज, प्रेग्नेंट, चाइल्ड, मम्मी, डैडी, रजिस्टार, कंपनी, इंडिपेंडेंस, टाइम, इंडिया, डिफरेंस, डार्लिंग, रिकार्ड, ट्रक, टच, सिगरेट, वाटर, साल्ट इत्यादी का प्रयोग खूब मिलता है |

एकाद स्थानों पर पंजाबी शब्द भी देखने मिलते हैं जो उनकी पंजाबी मूल से जुड़े होने की अवस्था से स्वत निकल आए होंगे | जैसे शोणि, होणो, पाणी आदि |

उपन्यास में पात्रों की संख्या बहुत अधिक हैं उनकी भाषा का स्तर भी भिन्न भिन्न है |उनके भाषा प्रयोग के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का परिचय मिल रहा है | जो पात्र नकारात्मक भूमिका में हैं उनकी भाषा में गाली गलौच का भी प्रयोग हुआ है | देवकांत ,अतुल की भाषा में उम्र के अनुकूल,अंग्रेजों के अत्याचार शोषण के खिलाफ आक्रोश झलकता है |

5.2 शैलीगत वैशिष्ट्य

शैलीगत वैशिष्ट्य में रचनाकार ने अपने कथ्य को कहने के लिए भिन्न भिन्न तरीकों का प्रयोग किया है | सत्यार्थी ने कथ्य को वर्णात्मक शैली में प्रस्तुत किया है इसके अतिरिक्त अन्य शैलियों का भी साथ में प्रयोग मिलता है |

वर्णनात्मक शैली

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में सत्यार्थी ने वर्णनात्मक शैली के माध्यम दिशांगमुख के अनेक गाँव और उसके बिखड़े हुए सूत्रों को जोड़ने का कार्य किया है | इसमे प्राकृतिक, भौगोलिक परिदृश्य, इतिहास आदि सभी का वर्णन रचनाकार ने किया है | पुरे उपन्यास में वर्णनात्मक शैली की प्रधानता देखने को मिलता है | लेखक ने अनेक शैलियों का प्रयोग करते हुए दिशांगमुख का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण किया है | उपन्यास में संवाद शैली, भाषण शैली, पत्रात्मक शैली आदि यथासंभव प्रयोग हुआ है | उपन्यास के शुरुवात में ही पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है | किस प्रकार इस धरती पर मानव सृष्टि हुई और पहले ब्रह्मपुत्र का स्वरुप किस प्रकार था इसको पूर्वदीप्ति शैली में लिखा गया है | लेखक राजनीतिक चेतना से ओत प्रोत नज़र आते हैं उसी चेतना का प्रसार पुरे उपन्यास में नज़र आता है

संवाद शैली

ब्रह्मपुत्र उपन्यास के पात्रों का चरित्र संवादों के माध्याम से उभरकर सामने आया है |

"ऐसे ही दूसरे स्थान पर अचानक बत्तखों की आवाज और पक्षियों के आवाज से उपर उठकर एक पतली सी एवं वेदना भरी आवाज सुनाई देने लगी | तब नीलमणि ने गुड़गुड़ी को अपने से दूर रखते हुए कहा,“अब मैं गुड़गुड़ी के मुह नहीं लग सकता |” [116] तब तरंगित होकर राखाल काका पूछते हैं "ऐसी क्या बात हो गयी

[116] वही- पृ. 86

?"[117] नीलमणि ने आखों के कोनों में आश्चर्य और अपनी मुस्कान को समेटते हुए कहा "सुन नहीं रहे ? कोयल कुक रही है | मैं तो अपने में कोई पुरानी वेदना उठते देख रहा हूँ |"[118]

देवकांत के प्रेम संवंध में बात चल रहा होता है | उसकी प्रेमिका गुइलाडू नहीं बल्कि आरती है | ऐसे ही जूनतारा मजाक के तौर पर कहती है "तुझे मछलियों की पहचान तो है, आदमी की पहचान बिलकुल नहीं |"[119] तब आरती स्निग्धता पूर्वक जवाब देती है "कभी तो मझुली में उसका काम ख़त्म होगा, कभी तो वह दिशांगमुख आयेगा | वह एक बार आये तो सही, मैं उसे बस में कर लुंगी |"[120]

पत्रात्मक शैली

नीरद अपनी प्रेमिका को पत्र लिखता है | वह पत्र एक दिन सहसा लिली को एक लिफाफा में मिलता है | पत्र का संक्षिप्त रूप इस प्रकार था,

"प्रिय लिली,

इतने दिनों मैं तुम्हे कोई पत्र नहीं लिखा पर श्वेत कमलिनी के समान तुम्हारा अपूर्व रूप मेरे मानसरोवर में बराबर खिला हुआ है |

इधर मैंने एक कविता लिखी है | तुम भी रस ले देखो | यह मेरी पहली कविता है | अभ्यास न रहने के कारण कहीं-कहीं छंद भंग हुआ होगा निश्चय ही; बीच-बीच में लय भी टूटी होगी; पर यदि तुम ने इसे औपचारिक कसौटी पर परखने के बजाय इसका रस लेने की कोशिश की, तो मुझे संतोष होगा |

वर्त्तमान का अंत हो चला

---

[117] वही

[118] वही

[119] वही-पृ. 230

[120] वही- पृ. 230

अच्छा तो अब बिदा,

उठाओ डंडा डोली

स्थान करो खाली |"[121]नीरद के भीतर उफान मारते चेतना का प्रवाह इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है | जो विदेशी सत्ता के खिलाफ अपने को तैयार पा रहा है वह क्रांति के पथ पर अग्रसर होने को तैयार हो गया है | उसी मनोभूमि का चित्रण इस कविता से व्यक्त होता है |

भाषण शैली

जब कभी-कभी बात करते-करते लम्बा वक्तव्य भाषण शैली का रूप धारण कर लेता है | ऐसे में नीरद कहता है "मेरा मार्ग न हिंसा का मार्ग है, न अहिंसा का | मेरा मार्ग तो लेखनी का मार्ग है | शिकारी गाँव वालों के साथ मेरी पूरी सहानुभूति है | यदि मैं शिकारी गाँव का गाँव बूढ़ा होता, तो आग लगाने वालों के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हुए गाँव बूढ़ा की पदवी त्याग देता | एक लेखक भी त्याग करना जानता है | मुझे सरकार ने कोई उपाधि नहीं दी पर इस अवसर पर मुझे रविन्द्रनाथ ठाकुर की याद आती है | जिन्होंने अमृतसर के जलियाँवाला बाग़ में डायर के हत्याकांड से दुखी होकर सरकार को 'सर' की उपाधि लौटा दी थी |"[122]

5.2.1 लोकोक्ति मुहावरों का प्रयोग

ब्रह्मपुत्र में सत्यार्थी जी ने खूब लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग किया है जिसके कारण भाषा बहुत प्रवाहमयी हो उठी है | मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा की सम्प्रेषण शक्ति में वृद्धि होती है वहीँ उसमें निकार भी आ जाता है |

जबां कैंची की तरह चलना |

---

[121] वही- पृ. 231

[122] वही- पृ. 195-96

बाट जोहना |

झख मारना |

नाकों चने चबाना |

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में सत्यार्थी जी ने कई शैलियों का सफल प्रयोग किया है जिसने उनके कथ्य को सफल ढंग से संप्रेषित करने का कार्य किया | सत्यार्थी की भाषा सरल -सहज प्रवाह लिए हुए हैं ,जहाँ उसका पाठ करते हुए कहीं भी भाषा बोझिल नहीं होती है | उन्होंने अंचल जीवन की समग्रता को चित्रित करने के क्रम में ब्रह्मपुत्र और अपने विचार दर्शन और लोक विश्वासों में जीवित मिथकों का उल्लेख भर पुर अंदाज़ में हुआ है | जो अंचल की लोक धारणाओं के साथ ब्रह्मपुत्र सम्बन्धी सभी विश्वासों को भी पाठकों के समक्ष रखकर उनके ज्ञान का विस्तार के साथ उनका सफल मनोरंजन करती है |

5.1 ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में भाषागत वैशिष्टय

'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' उपन्यास विशुद्ध नेपाली भाषा में लिखा हुआ है | इसमे दो तरह के भाषा का प्रयोग किया गया है | पहला लेखकीय भाषा और दूसरा पात्रगत संवाद के माध्यम से किया गया है | इसमें लेखकीय भाषा सामान्यतया मानक और विशुद्ध ढंग का है | यद्यपि लेखक असम प्रान्त के होने के कारण लेखकीय भाषा में असमेली नेपाली भाषा का अधिक प्रभाव परिलक्षित होता है | इसमे भी कई ऐसे शब्द भी हैं जो असमेली शब्द तथा शब्दावली से मिलता है | विशेषकर इसमे चार प्रकार के भाषाओँ का उल्लेख मिलता है | सरल स्वाभाविक भाषा, पश्चिमी नेपाली भाषा, प्रादेशिक भाषा और गंभीर चिंतन की भाषा | उपन्यास में अधिकतर बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है | व्यक्तिगत परिचय से लेकर रीती रीवाज, संस्कृति, जाती, इतिहास आदि का वर्णन सरल बोलचाल के भाषा में लिखा गया है | भाषा के सरल होने से पाठक वर्ग को बोधगम्य बना देता है | उपन्यास में कहीं-कहीं पर चिंतन की भाषा भी मिलती है | विशेषकर दर्शन चिंतन के प्रसंग में ब्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग मिलता है | उपन्यास के अंत में केशव काकती के संसार और संसारिकता में दर्शन की भाषा का भी विशिष्ट स्थान प्राप्त है |

सरल सुबोध काव्यमयी भाषा

ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास क्षेत्री जी की अन्यतम कृतियों में से एक है जिसकी भाषा यदा कदा बहुत ही काव्यमयी है | सरल सुबोध भाषा का प्रयोग क्षेत्री जी ने किया है जिसको पाठक बहुत ही सहजता से समझ लेता है ,बोधगम्य भाषा का प्रयोग है | क्षेत्री जी स्वयं असमिया क्षेत्र में बढ़े थे इसलिए उन्हें नेपाली के साथ असमिया और प्रसंगानुकूल अंग्रेजी भाषाओँ के शब्द को बेहिचक तरीके से प्रयोग में लिया है जो उन्होंने संप्रेषणीयता के उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया है |

पश्चिमी नेपाली भाषा

उपन्यास में कहीं-कहीं पश्चिमी नेपाली भाषा का भी व्यवहार मिलता है | पश्चिमी नेपाली भाषा सदरीया भाषा से कुछ भिन्न होता है | उद्धरण के लिए " लो अभी मैं चला | वहाँ भूसा का गाड़ी जायेगा, उसी में जाऊंगा | खानापाड़ा तक बस जायेगा | वहां रस्ते से ही उपर की तरफ गए तो दो किलो मीटर दूर आगे बढ़ने पर, उपर पहाड़ की चोटी पर गौपालक दिखाई देंगे |" [123]

प्रादेशिक भाषा

उपन्यासकार असमिया समाज में ही पला बढ़ा है इसलिए उन पर असमिया भाषा का प्रयोग दिखना स्वाभाविक है फिर वे जिस परिवेश का चित्रण कर रहे हैं उस परिवेश को जीवंत करने के लिए उस बोली का प्रयोग आवश्यक भी होता है | कुछ असमिया शब्द का प्रयोग लेखक ने खूब किया है जो निम्नलिखित हैं –

"झाप मारेर:गाछ ,धूर,नाउ,उलाऊ ,पुहु ,माघ बिहू ,फूलम गमछा ,नारिकल ,तामुल ,ढोल पेपाले ,तील पीठा,गडा काटनु ,घुर्नु ,जीरनी,नघुरेस,होलो ,भावने ,भराल,पाशी ,वडविल,धेमाली,बाईदेऊ,खुट्टी, राजहुवा, छपड़ी, जिरनी, सांघातिक, आततायी, उलाव, देउता, घुर्नु, भराल, बैठा, गखिर,पथार, इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया गया है | असमेली भाषा के आलावा आर्येतर हिमाली भाषा का भी प्रयोग मिलता है | उदाहरणार्थ – [124]"क्या करेगा भैंस ले जाकर ? काट ले तो अकेले नहीं खा पाउँगा, बेच दे तो कोई खरीदेगा भी नहीं ! आब कल पैसा देगा तो दे दे नहीं तो खा ले खुद ही ! क्या खा लेगा वही दो साल तो खा लेगा | मेरा भाग्य तो नहीं खा लेगा | मैं कल ही जाऊंगा |"

गंभीर चिंतन की भाषा

उपन्यास में गंभीर विचार की भाषा का स्वरूप कुछ बदला है उसमें भी वहीँ गंभीरता आई है | "मैं चिंता नहीं करता गुमाने | मुझे मालती की माँ के जाने का कोई दुःख नहीं है | वे लोग नींद से जाग गए |

[123] वही- पृ. 57

[124] वही- पृ. 24

स्वप्न भंग हो गया उनका | अब जाकर वे वास्तविक जगत में पहुँचे हैं | यह जीवन एक नाटक है | हम तो अभिनय करते हैं केवल | उन लोगों की भूमिका खत्म हो गयी | मंच से उतर कर वास्तविक यथार्थ से वे जुड़ गये | हम अभी मंच पर अभिनय ही कर रहे हैं | हिलने वाले झील में खड़े होकर उस तरफ जाने वाले के लिए कैसा शोक मानना |"[125]

उपन्यास में गुमाने स्तरीय शुद्ध नेपाली बोली का प्रयोग करता है वह असमिया भाषा में शिक्षित हईस्लिये वह असमिया भी भली भांति बोल लेता है | उपन्यास में कई कई पात्र ऐसे हैं जो असमिया नेपाली भाषा से ज्यादा पश्चिमी नेपाली भाषा का प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं जिसमें एक पात्र देवीदत्त खरेल की बोली में पश्चिमी नेपाली भाषा का प्रयोग है | मानवीर और जुरेली के द्वारा प्रयुक्त भाषा में पूर्वी नेपाली का प्रभाव दिखाई पड़ता है |

लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी इस कृति में मिलता है जिनमें झगरा ,चिप्पस ,परतापी ,जिमा ,मामल ,गोदाई,तर्कना,परिखे ,बेभार जैसे लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग रचनाकार ने किया है |

लेखक ने भाषाई स्तर पर खुले मन से अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है | उनका उद्देश्य अपने कथ्य को प्रभावपूर्ण ढंग से संप्रेषित करना था इसलिए उस अंचल में बोलचाल में आने वाली सभी भाषाओँ के शब्द को उन्होंने ग्रहण किया और उसे यथा स्थान प्रयोग किया है |

अंग्रेजी भाषा के शब्द

इसमें रेल ,लाइन ,स्टेशन ,प्लेटफार्म ,सप्लाई ,ऑफिसर ,फारेस्ट ,ग्रेज़िंग ,रिज़र्व,हाई कमांड ,नोमिनेशन ,एसोसिएशन ,नोटिस ,कंपनी ,ट्युशन ,पार्टी ,टेस्ट इत्यादि अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग मिलता है |

5.2.1 लोकोक्तियाँ और कहावतें

[125] वही- पृ.162

"घर को साँडे बनको बिरालो"(घर का बाघ वन का बिल्ली) इसका तात्पर्य जो घर में बाघ के समान पर बाहर दुनिया के समक्ष बहुत डरपोक |

जसको सीता खायो,उसको गीत गायो(जिसका खाया उसका गुण गाया)

डाडू पन्यु जसको हातमा छ त्यसैलाइ जदौ गरेकै भलो हो(जिसके हाथ में ताकत उसी का साथ होना बेहतर है |(यह भूखा न रहने के संदर्भ में है)

कागले कान लग्यो भन्दै माकाग्को पछि दगुर्ने | जैसे अनेक कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग रचनाकार ने किया है जो उनकी अभिव्यक्ति कौशल का परिचय देता है |

इस उपन्यास में लेखक द्वारा प्रयुक्त वर्णन विश्लेषण की भाषा तो सरल है ही ,पात्रों के संवाद भी सरल और सुबोध हैं | कई असमिया ऐसे शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जिनसे पाठक अपरिचित होगा परन्तु उनके अर्थ कोष्ठक में दिए गए हैं जिसके कारण अर्थ ग्रहण में किसी तरह की कोई समस्या नहीं आती |स्थानीय शब्दों के प्रयोग से अंचल की यथार्थ को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य बढ़ा है | इस उपन्यास में पात्रो केअनुरूप लम्बे छोटे संवाद हैं |उपन्यास की कथावस्तु असमिया धरती से सम्बद्ध होने के कारण असमिया भाषा का प्रभाव देखने को मिलता है | उपन्यास में काकती बाबु द्वारा प्रयुक्त भाषा असमिया और नेपाली का मिश्रित रूप है उनके द्वारा बोली जाने वाली नेपाली भाषा पर पूर्ण रूप से असमिया का छाप नज़र आता है |

5.2.2 ब्रह्मपुत्र और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों के शिल्पगत वैशिष्ट्य का तुलनात्मक अध्ययन

ब्रह्मपुत्र और ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यासों के शिल्पगत वैशिष्ट्य का मूल्याङ्कन किया जाए तो कहा जा सकता है सत्यार्थी जी का ब्रह्मपुत्र हिंदी में रचित कृति है जबकि क्षेत्री जी का ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास

नेपाली भाषा में | दोनों रचनाओं में ब्रह्मपुत्र के आस पास बसने वाले लोगों को केंद्र बनाकर लिखा गया है परन्तु सत्यार्थी जी समग्रता में उस परिवेश को अभिव्यक्ति देते हैं जबकि क्षेत्री जी ने ब्रह्मपुत्र के पास रहने वाली नेपाली जातियों के जीवन सत्य का उद्घाटन किया है | इसलिए दोनों ने उस अंचल में प्रयुक्त भाषा का प्रयोग किया है इसके साथ ही अंग्रेजी भाषा के शब्द का प्रयोग भी आवश्यकता अनुरूप हुआ है | दोनों ने शिल्प की कई विभिन्न रूपों का चित्रण किया है परन्तु ब्रह्मपुत्र में नेपाली कृति की अपेक्षा शिल्प में विविधता नज़र आती है | लोकोक्तियाँ और मुहावरों का प्रयोग भी ब्रह्मपुत्र उपन्यास में ज्यादा दिखाई देता है | लोक में प्रचलित शब्दों का प्रयोग दोनों उपन्यासों में एक जैसा दिखाई पड़ता है | यह दोनों उपन्यास एक ही भूमि से सम्बद्ध होने के कारण इसमें कई सारी समस्याएं एक सी है |

दोनों रचनाकारों ने वर्णन विश्लेषण शैली का प्रयोग किया है | दोनों रचना के लेखन में लोक और लोक में व्याप्त मान्यताएं ,उनका विश्वास का खूब चित्रण मिलता है | पात्रों के अनुरूप भाषा और उनके संवाद गड़े गए हैं जिसके कारण अपने परिवेश और अपने तेवर को ठीक ढंग से अभिव्यक्त करने वाली भाषा का प्रयोग दोनों रचना के अंतर्गत हुआ है | संवाद बड़े और छोटे दोनों ही हैं | पात्रों द्वारा प्रयुक्त संवाद उनके व्यक्तित्व को दर्शाने और उनके स्तर को व्यक्त करने वाला है |

दोनों रचनाकारों ने भाषा और शिल्प के स्तर पर आंचलिकता के साथ पूर्णरूपेण न्याय किया है | प्रादेशिक और स्थानीय शब्दों के प्रयोग से अपनी रचना में अंचल की खुशबू रंग बिखेड़ने में दोनों रचनाकार सफल हुए हैं |

निष्कर्ष

किसी एक देश की दुर्गम स्थल, अंचल व भू-भाग की प्रकृति की बुनावट तथा वहां पर निवास करने वाले लोगों की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, अवस्था, लोक संस्कृति परंपरा, मान्यता, लोक विश्वास,भाषा आदि के साथ वृहद् कृति को आंचलिक उपन्यास कहते हैं | किसी अंचल की अनुकूल -प्रतिकूल अवस्थाओं के साथ सामंजस्य करते संघर्षरत पीड़ित लोक जीवन धारा का यथार्थ चित्रण आंचलिक उपन्यास के अंतर्गत होता है | आंचलिक उपन्यास लेखन प्रवृत्ति में स्वछंदतावाद एवं यथार्थवाद का गहरा प्रभाव दिखाई देता है | उत्तरोत्तर आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रगतिवाद का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है | अंचल के असहाय ,निम्नवर्गीय निवासियों के प्रति स्नेह, सहानुभूति रखते हुए उन लोगों के पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी तत्वों को चिन्हित करते हुए परिवर्तन की चेष्टा का भाव भी सदैव उनमें संलग्न रहता है | हिंदी, नेपाली भाषा के आंचलिक उपन्यासों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है |

स्वछंदतावाद और यथार्थवाद के संयुक्तता तथा आलोचनात्मक यथार्थवाद, प्रगतिवाद एवं मनोविज्ञान के प्रभावों से उत्तरोत्तर विकसित आंचलिक उपन्यास में पर्यावरण की प्रधानता देखी जाती है | वर्ण्य अंचल की प्रकृति,पर्यावरण, लोक संस्कृत्ति, बोली, लोक विश्वास आदि का संरचित सामाजिक पर्यावरण तथा इससे जीवन में आया हुआ परिवर्तन का उस पर गहरा प्रभाव रहता है | देश दुनिया से अपरिचित,दुर्गम अंचल के मानवों के जीवन के दुःख कष्ट , ज्ञान-अज्ञान, धर्म विश्वास, संस्कार-कुसंस्कार, सहानुभूति, प्रेम और उनके जीवन बोध का चित्रण आंचलिक उपन्यास में होता है जो लेखन के क्षेत्र में एक अंचल की समग्रता को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है | आंचलिक उपन्यास का सूत्रपात करने का श्रेय अंग्रेजी उपन्यासकार मेरिया एजवर्थ (1467-1849) को जाता है | उनकी क्यासल रेकरेंट (1800) नामक उपन्यास पहला आंचलिक उपन्यास माना गया है | पश्चिम के साहित्य में स्वछंदतावादी प्रवृत्ति से अलग रहते हुए यथार्थवादी प्रवृत्ति को अपनाने के क्रम में अंचल एवं अंचल के जीवन अंकन यथार्थ को अभिव्यक्त करते हुए आंचलिक रचनाओं का विकास हुआ | मेरिय एजवर्थ के अलावा थॉमस हार्डी, विट हार्ट, मार्क क्वेन,

बिल क्यथर, विलियम फकनर आदि मुख्य हैं | यूरोप,अमेरिका और अंग्रेजी से होते हुए सर्वप्रथम बंगला भाषा के गद्य आख्यानों में इसका प्रभाव दिखाई देता है | बंगला कथाकार शैलजानंद मुखोपाध्याय (1901-19860 की कोइलाकुटी, दिनमजुर (1932) कथाओं में सर्वप्रथम आंचलिक प्रवृति झलकती है |बंगला से हिंदी में आंचलिक रचनाओं का प्रभाव पड़ा जो निरंतर विस्तार पाता जा रहा है |

नेपाली आंचलिक उपन्यास की तुलना में हिंदी आंचलिक उपन्यास की परंपरा सुदृढ़ दिखाई पड़ती है | इस शोध प्रबंध में विश्लेषित ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ पूर्णत: आंचलिक उपन्यास है | हिंदी एवं नेपाली भाषा के दो आंचलिक उपन्यास के विषयवस्तु, भौगोलिक रूप से दुर्गम अंचल एवं वहां के निवासियों के जीवन दर्शन का चित्रण इसमें हुआ है | ब्रह्मपुत्र उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व से लेकर स्वतंत्रता के पश्चात कई वर्षों की अंतराल के समय को समेटने का कार्य हुआ है | मूलतः यह 1946 -47 से 1956-57 तक के समय को अपने में बांधे रखता है |इस समय अवधि में असम और ब्रह्मपुत्र के आस पास के जीवन में जो भी स्पंदन हुए हैं इसकी अभिव्यक्ति ब्रह्मपुत्र में है | इस उपन्यास में दिसांगमुख की माझुली गाँव के अंतर्गत आने वाली पांच गाँव का कथा इसमें समायी हुई हैं | इसमें अलीसिंगा की मीरी बस्ती,अलीसिंगा के मुसलमान बस्ती ,बलमा ,जेल गाँव और चितालिया गाँव का समग्रता में चित्रण हुआ है | लेखक ने किसी जाति विशेष को अपनी कथा के केंद्र में नहीं रखा है बल्कि तटस्थता बोध उनके लेखन में है और वे निष्पक्ष भाव से उस समाज की यथार्थ को पाठकों के समक्ष रखते हैं | ब्रह्मपुत्र उपन्यास में कथा के केंद्र में कोई कथा नहीं है | कई कथाएं एक साथ गति करती है और इसमें कोई पात्र नायक की भूमिका में दिखाई नहीं पड़ता बल्कि असल में अंचल ही कथा में नायक की भूमिका में है | आंचलिक उपन्यास की एक बड़ी विशेषता होती है इसमें पात्रों की संख्या बहुत ज्यादा होती है ,कई -कई पात्र भिन्न -भिन्न संदर्भों के साथ कथा में उपस्थित होते हैं | वे अपने व्यक्तित्व के प्रदर्शन से ज्यादा उस अंचल के यथार्थ चित्रण को व्यक्त करने की दिशा में सक्रीय होते हैं | लेखक का ध्यान किसी भी पात्र के चरित्र को विशेष बनाने की चेष्टा नहीं करते हैं ,किसी भी पात्र को कथा में बहुत दूर तक जाने का अवसर भी नहीं देते हैं |

देवेन्द्र सत्यार्थी जी ने अपने गहन अध्ययन और अनुभव के आधार पर ब्रह्मपुत्र के आस पास रहने वाली जातियों के मन में पैठ बनायीं है उसके भीतर झांकना ही नहीं बल्कि उसे जीया है ऐसी यथार्थ अनुभूति रचना के रूप में बाहर आई है जो अपने में अद्भुत है |

लेखक ने ब्रह्मपुत्र के आस पास रहने वाली जातियों के जीवन संघर्ष ,उनके आपसी मतभेद ,वैमनस्य ,भाषाई संकट की स्थिति ,नेपाली जन और वहां की निम्न गरीब जन की व्यथा ,उनकी गरीबी ,उनके जीवन गुज़ारे सम्बन्धी पेशे सबका बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है | इन गाँवों की कथा कहते हुए भी लेखक उस अंचल में लोकप्रिय कथा ,किवदंती ,उनकी लोक मान्यताएं सबका भी अपनी कथा के साथ स्थान देते हुए अपनी लोक सम्बन्धी ज्ञान का विस्तृत परिचय देते हैं | असम प्रान्त के ब्रह्मपुत्र नदी के आस-पास के गाँव में निवास करने वाली जातियों में आधुनिक और वैज्ञानिक सोच का अभाव दिखाई पड़ता है जिसके कारण वे कई समस्याओं के मध्य फंसे हुए भी प्रतीत होते हैं | अपनी लोक मान्यताओं और विश्वासों को ही सत्य माने यह जातियां देश दुनिया से अनजान अपने जीवन संघर्ष तक ही सीमित होकर रह जाते हैं | जिसके कारण कई स्तर पर वे पिछड़े हुए दिखाई देते हैं | यहाँ निवास करने वाली जातियां अशिक्षा, अंधविश्वास, कुसंस्कार के कारण शोषित ,कुपोषित, रोगों के लिए उपचारहीनता की भयावह स्थिति से गुज़रते हुए दिखाया गया है | इन लोगों के जीवन में मेला ,उत्सव, संगीत आदि से ही आनंद है |जिसमें समाज के सभी जातियां अपना राग द्वेष को भूले एक दूसरे की संस्कृति का हिस्सा बनते नज़र आते हैं |

राखाल एक उपन्यास में बहुत ही सजग पात्र के रूप में उभरते हैं जो अपने पिछड़े समाज में चेतना का प्रसार करते नज़र आते हैं और किसी को कुछ उपदेश देने पूर्व स्वयं उसके पालन करते नज़र आते हैं | इस उपन्यास में सामाजिक और राजनैतिक चेतना में गाँव वालों के मध्य निरंतर विकास की स्थिति देख सकते हैं जहाँ अंग्रेजी और उस सत्ता की पक्षधरता करने वालों के अत्याचार के खिलाफ वे सदैव तत्पर रहते हैं और अंग्रेजी सत्ता की बगावत में एक पल न सोचे उनसे मिलने वाले पेंशन को छोड़ने को तैयार हो जाते हैं | उपन्यास में उन्हीं का एक वक्तव्य यहाँ दृष्टव्य है,"पहले तो यह समझ लो कि शिकारी गाँव और

दिसांगमुख की पीड़ा कोई अलग -अलग नहीं है | जो हत्याकाण्ड शिकारी गाँव में हुआ,उसे दिसांगमुख में भी दोहराया जाए,तभी हम उस पीड़ा को अनुभव करें,यह तो कोई बात नहीं हुई |"

राखाल काका का दूसरा वक्तव्य दृष्टव्य है,"एक देश के लोग दूसरे देश के लोगों पर तभी तक हुकूमत कर सकते हैं ,जब तक गुलाम देश की गुलामी के लिए राजी हो |"

ब्रह्मपुत्र उपन्यास में आज़ादी के पश्चात की स्थिति का चित्रण विस्तार में नहीं दिया गया है परन्तु देश की आज़ादी में ब्रह्मपुत्र और वहां की जनता में जिस तरह चेतना का विकास होता है उसका बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है | वहां के लोग भारत माता की छवि से परिचित नहीं है केवल देवकांत है जो थोडा इसकी समझ रखता है परन्तु ऐसी स्थिति में भी अतुल ,राखाल काका ,नीरद ,जादू ,फकन ,आरती ,धर्मानंदी जैसे पात्र हैं जो तैयार है देश के लिए कुछ कर गुजरने के लिए |

कहा जाता है लेखक का व्यक्तित्व उसकी रचना में कहीं स्थान पाता ही है | उपन्यास का नीरद पात्र कहीं न कहीं लेखक सत्यार्थी जी का आभास देता है | लेखन के प्रति निष्ठा और फिर देश के लिए अपने कर्तव्य बोध से परिचित होता नीरद लेखन के साथ साथ बाह्य स्तर पर भी देश के लिए कुछ कर गुजरने के लिए तैयार हो जाता है |

लीलबहादुर छेत्री का जन्म 1923 में पूर्वोत्तर भारत के गुवाहाटी में हुआ था | लीलबहादुर छेत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' नेपाली साहित्य की आधुनिककाल की द्वितीय चरण की रचनाकृति है | इसे बाईस खण्डों में विभक्त किया गया है | इस में असमिया लोगों के यथार्थ जीवन का चित्रण है | उपन्यास की औपन्यासिक तत्वों के साथ ऐतिहासिक तत्वों को भी उजागर किया गया है | कृति में चारित्रिक दृष्टि से वर्ग प्रधान और व्यक्ति प्रधान दोनों प्रक्रार के पात्र पाये जाते हैं | उपन्यास के शीर्षक से ही आंचलिकता के संकेत मिल जाते है | इस प्रकार लीलबाहदूर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ' में तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक ढंग से अंचल के असल स्वरूप को दिखाया गया है | उपन्यासकार लीलबहादुर छेत्री कृत ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ अंचल विशेष पर केन्द्रित आंचलिक कृति है | ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ असम राज्य के आस-पास आनेवाली

नेपाली जाति को लेकर लिखा गया है | उपन्यास में उपन्यासकार ने असम राज्य की भौगोलिक एवं प्राकृतिक वर्णन करते हुए असमवासियों के लिए ब्रह्मपुत्र की महत्ता का चित्रण किया है वह रक्षक की भूमिका निभाता है तो वही ब्रह्मपुत्र भक्षक की भूमिका में भी उतर आता है | ब्रह्मपुत्र को केंद्र में रखकर प्रकृति का रौद्र एवं मनोहारी दोनों ही स्थितियों का सूक्ष्म अंकन हुआ है | लेखक द्वारा असम में सदियों से रहनेवाले नेपाली जाति की जातीय परम्परा, रीति -रिवाज, संस्कार, संस्कृति आदि का बड़े ही सुंदर ढंग से चित्रण हुआ है | उसी प्रकार संस्कृति के प्रति उनकी श्रद्धा,सद्भावना और पारस्परिक सहयोग दिखाते हुए असमिया नेपालियों की सहन-शील प्रवृत्ति, धार्मिक सांस्कृतिक समन्वयवादी विचार व दृष्टिकोण, उदार मनोभावों को दर्शाने में छेत्री सक्षम हुए हैं | इस उपन्यास का मुख्य पात्र है 'गुमाने 'उसके माध्यम से असम राज्य में नेपाली जातियों की जीवन संघर्ष और उनकी समस्याओं को मूर्त रूप प्रदान किया गया है |

दोनों आलोच्य कृतियों में कई बिन्दुओं के आधार पर समानता दिखाई पड़ती है तो कई बिन्दुओं में असमानता भी है | जिसे विस्तार से दिखाने का प्रयत्न हुआ है | सत्यार्थी जी ने अपने उपन्यास में नेपाली समाज नहीं बल्कि ब्रह्मपुत्र के आस पास की सम्पूर्ण बस्ती में बसने वाले लोगों को केंद्र बनाया है जबकि क्षेत्री जी ने नेपाली प्रवासी लोगों की कथा कहने के क्रम में अन्य जातियों का उल्लेख किया है |

हिंदी के ब्रह्मपुत्र में अंचल का व्यक्तित्व पूर्णतया उभर कर आया है ,कोई पात्र केंद में नहीं है ,नायक अंचल है जबकि नेपाली के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में केंद्र में गुमाने का चरित्र है | सामाजिक स्तर पर जातिगत वैमनस्य की स्थिति दोनों ही उपन्यासों में मिलती है परन्तु आर्थिक स्तर पर जीवन की विसंगतियों का वैविध्यमय चित्रण जैसे ब्रह्मपुत्र में मिलता है वैसे क्षेत्री जी के नेपाली उपन्यास में नहीं है वहां केवल दूध घी के व्यापार से जुड़े नेपाली समाज का ही चित्रण प्रमुखता से हुआ है | ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ डूलदा शीर्षक लेख में चंदशेखर दुबे ने "ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास को पूर्वांचल में निवास करने वाली नेपालियों की महाकाव्यात्मक गाथा मानते हुए इस कृति को समसामयिक सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक पृष्ठभूमि में आधारित एक सफल,उत्कृष्ठ यथार्थवादी उपन्यास माना है|"

भाषा शैली की दृष्टि से भी ब्रह्मपुत्र एवं ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ आंचलिक उपन्यासों में कई समानताएं दिखाई पड़ती हैं ,दोनों ही आलोच्य कृति में उस अंचल की भाषा बोली का प्रभाव दिखाई पड़ता है | उन्होंने वहां की लोक और संस्कृति को चित्रित करने के लिए उन्हीं की भाषा प्रयोग के माध्यम से उस परिवेश और अंचल को जीवंत करने की चेष्टा हुई है | कई प्रादेशिक शब्द और बोलचाल की प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मिलता है | नेपाली ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुत ज्यादा नहीं है जबकि सत्यार्थी जी के ब्रह्मपुत्र में अंग्रेजों का सीधा प्रसंग आता है जो अंग्रेजी ही बोलते दिखाए गए हैं और वे हिंदी भाषा बोल भी रहे हैं तो उनके लहजे में अंतर देखने को मिलता है | जबकि नेपाली के ब्रह्मपुत्रका छेउछाउ में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग विशिष्ट प्रसंग में ही हुआ है जहाँ स्थानीय शब्दों के प्रयोग के आधार पर समझ बनना मुश्किल है |

दोनों कृतियों में रचनाकारों ने लोक विश्वास और लोक मान्यताओं का भरपूर चित्रण किया है | कथा कहने के क्रम में बीच-बीच में उनकी जीवन सम्बन्धी दार्शनिक चिंतन भी उभर कर आये हैं ,जहाँ जीवन-मरण के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण आध्यात्मिक स्थिति का चित्रण और उसका विश्लेषण हुआ है | दोनों उपन्यास अपने चित्रित समाज को पूर्णतया दिखाने में सफल हुए हैं | अपने विविध शैली और स्थानीय बोलियों का प्रभाव ग्रहण करते हुए दोनों आलोच्य कृति उस अंचल को अभिव्यक्त करने में पूर्णतया समर्थ जान पड़ते हैं |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-

आधार ग्रन्थ:-

हिंदी :-

1.सत्यार्थी, देवेन्द्र , बर्ष- 1992, ब्रम्हपुत्र , ज्ञानगंगा प्रकाशन , नई दिल्ली

नेपाली :-

1. छेत्री, लीलबहादुर , बर्ष 1986, ब्रम्हपुत्रका छेउछाउ, साझा प्रकाशन

सहायक ग्रन्थ :-

हिंदी :-

1. चौबे, कृपाशंकर, बर्ष, 2018. हिंदी और पूर्वोत्तर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

2. गुप्त, ज्ञानचंद, बर्ष- 1970, आंचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली

3. एल, पटेल, उत्तमभाई, बर्ष-1999, आंचलिक उपन्यास में ग्राम्य जीवन, क्वालिटी बुक्स पब्लिशन

4. सिन्हा, विद्या,वर्ष-2006 आंचलिक परिदृश्य: आंचलिकता और हिंदी उपन्यास , वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

5. मिश्र, रामदरश, वर्ष-1986, हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

6. यादव, डॉ. सरोज, वर्ष- 1996 , हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में राजनितिक चेतना, अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर

7. उपाध्याय, मृत्युंजय, वर्ष- 1989, हिंदी के आंचलिक उपन्यास, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहबाद

8. सक्सेना, डॉ. आदर्श, वर्ष-1971, हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प- विधि , सूर्य प्रकाशन मंदिर ,बीकानेर

नेपाली :-

1. दाहाल, डॉ. राजकुमारी, वर्ष- 2011, नेपाली आंचलिक उपन्यास, मानस्गंगोत्री प्रकाशन, मैसूर
2. राई, इन्द्रबाहदुर, वर्ष- 2001, नेपाली उपन्यास का आधारहरु, साझा प्रकाशन
3. बराल, कृष्ण हरि, नेपाली उपन्यास र सिद्धांत, साझा प्रकाशन
4. सिंह, कृष्णचन्द्र, वर्ष-1989, नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार, साझा प्रकाशन
5. सुवेदी, राजेन्द्र, नेपाली उपन्यास सिद्धांत र स्वरुप , साझा प्रकाशन
6. पौड्याल, नवीन, आख्यान अनुशीलन, साझा प्रकाशन

पत्र- पत्रिकाओं

हिंदी :-

1. हंस
2. ज्ञानोदय
3. आलोचना
4. पहल

नेपाली :-

1. गोर्खे खबर कागज

2. गोर्खे संचार

3. माधवी

4. सुंदरी

5. निबुला

6. चन्द्रिका

इन्टरनेट से प्राप्त सामग्री

https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://epustakalay.com/book/148540-brahmaputra-by-devendra-satyarthi/&ved=2ahUKEwid3LWCu6HnAhULeysKHbPwB8AQFjADegQIBRAB&usg=AOvVaw0-CQCSbNk0x3gVfygGFIAN